ओ३म्
श्रीमद्भगवद्गीता
भाग ६
तेरह, चौदह, पंद्रह और
सोलवां अध्याय
6

ओ३म्

श्री मद्भगवद्गीता

भाग ६

तेरह, चौदह, पन्द्रह और सोलहवां अध्याय

पृष्ठ १३५९ से १६४६ तक

ओ३म्

श्री मद्भगवद्गीता

क्षेत्रक्षेत्रज्ञ-विभाग योग-अध्याय ॥१३॥

पृष्ठ १३५८ से ~~१४५५~~ १४५६ तक

बाल-गोपाल

تیرھواں ادھیائے

چھیتر چھیتر گیہ بھاگ یوگ یا تفریق جسم و عالم جسم

اخیر کے چھ ادھیائے شروع کرنے سے پیشتر پہلے اور دوسرے چھ ادھیاوں سے ان کا تعلق بتا دینا مناسب ہے۔ پہلے چھ ادھیاوں میں نشکام کرم۔ اور یگیہ یعنی پراوپکار کی تعلیم دی گئی ہے۔ جس کی غرض یہ ہے۔ کہ ادھکاری کا چت شدھ ہو اور دھیان جمانے کے لائق بن جائے۔ یہ مرحلہ طے ہو گیا۔ تو دھیان جما کر وہ ایشور کی حقیقت سمجھنے کے لائق ہو جائیگا۔ اس حقیقت کا بیان دوسرے چھ ادھیاوں میں ہے۔ یعنی ایشور ہی سے جگت پیدا ہوتا ہے۔ اسی میں قائم رہتا ہے۔ اور اسی میں لَے ہو جاتا ہے اسی ایشور کی بھگتی کی ان ادھیاوں میں تعلیم ہے۔ اور درجے یہ رکھے ہیں۔ کہ اوّل خاص و . . . دل یعنی مہورات کائنات میں ایشور کی اُپاسنا کرو۔ اور بعد میں سرو آتم بھاو سے تمام و کمال کائنات کو ایشور روپ دیکھو۔ اس طرح کثرت کا وہم باطل طبیعت سے نکل جاتا ہے۔ اور ادھکاری وحدت کی طرف مائل ہو جاتا ہے۔ لیکن ہنوز ایشور معبود اور ادھکاری عبد ہے۔ گویا دوئی باقی ہے۔ اخیر کے چھ ادھیاوں میں یکتائی کی تعلیم ہے۔ یعنی یہ بتایا گیا ہے۔ کہ معبود و عابد دونوں ایک ہیں۔ اور ادھکاری سرو آتم بھاو سے جس ایشور کی بھگتی کر رہا ہے۔ وہ خود اسی کی ذات اصلی ہے۔ وید بھگوان کی منادی ہے "تت توام اسی" (یعنی وہ (ایشور) تو (جیو) ہے۔ پہلے چھ ادھیاوں میں لفظ "تو" کی تشریح ہے۔ کیونکہ اس میں جیو اور چت کے شدھ ہونے سے اس کے ادھکاری بننے کا بیان ہے۔ دوسرے چھ میں لفظ "وہ" کی تشریح ہے۔ کیونکہ اس میں ایشور کی حقیقت کھولی گئی ہے۔ اور تیسرے میں دونوں کی ایکتا دکھائی گئی ہے۔ پہلے چھ ادھیاوں میں کرم پردھان ہے۔ دوسرے چھ میں بھگتی۔ اور تیسرے میں گیان۔ چنانچہ اس تیرھویں ادھیائے میں شروع ہی سے ارجن گیان کے متعلق سوال اٹھاتا ہے:۔

श्रीभगवानुवाच ।

इदं शरीरं कौंतेय क्षेत्रमित्यभिधीयते ॥ एतद्यो वेत्ति तं प्राहुः क्षेत्रज्ञ इति तद्विदः ॥ १ ॥

दोहा—क्षेत्रकहतहैंदेहको, अर्जुनज्ञानीलोय ।
जानतहैजोदेहको, सोक्षेत्रज्ञजुहोय ॥ १ ॥

प्रथमके छह अध्यायोंमें ईश्वरप्राप्तिका उपायभूत उपासना और उपासनाका अंगभूत आत्मस्वरूप ज्ञान कहा और उस आत्मस्वरूपज्ञानकी प्राप्ति ज्ञानयोग कर्मयोगनिष्ठासे होतीहै ऐसे कहा । मध्यके छह अध्यायोंमें परमात्मस्वरूपका यथार्थज्ञान और उसके माहात्म्य ज्ञान पूर्वक उपासना जिस उपासनाको भक्तिभी कहते हैं सो कहते भये । अब अंतके छह अध्यायोंमें प्रकृतिपुरुषका निरूपण और इस प्रपंचका प्रकृतिपुरुषसंयोगसे होना कहेंगे और प्रथम बारह अध्यायोंमें जो परमात्मस्वरूपका यथार्थ निश्चय और कर्मज्ञानभक्तिस्वरूप और इनके ग्रहणके न्यारेन्यारे प्रकार कहेंगे । तहां तेरहवें अध्यायमें देह और आत्माके स्वरूप और आत्मस्वरूपप्राप्तिका उपाय तथा प्रकृतिमुक्त आत्माका स्वरूप और उसके प्रकृतिसंबंधका कारण और प्रकृतिपुरुषविवेकका अनुसंधानप्रकार कहेंगे ॥ श्रीकृष्णभगवान् कहते हैं कि, हे कुंतीपुत्र ! येह शरीर क्षेत्र ऐसा कहाहै जो इसको जानताहै उसको देहात्मज्ञानीजन क्षेत्रज्ञ ऐसे कहतेहैं याने देह क्षेत्र और आत्मा क्षेत्रज्ञहै ॥ १ ॥

Of Nature and [the Subject,] MAN,—
or [Object-] Field and [SELF,] Field-Know'r,—
Of Knowledge and What should be known,
I fain would hear Thee speak, O Lord.*

The Blessed One said:
The 'Field', O Kunti's son, is but
another term for this thy Form.†
The Being who [within] surveys
is called Field-Know'r by them that know.

इस शरीरको बतलाते हैं कुन्तीनन्दन ! क्षेत्र अनूप ।
इसे जानता है जो, उसको कहते हैं क्षेत्रज्ञ सुरूप ॥

۱۔ میں جاننا چاہتا ہوں اے کیشو جی کیا چیز ہے پرش اور کیا پرکرتی
کیا چھیتر ہے چھیتر گیہ ہے کیا شے کیا گیان ہے کیا گیہ ہے تفتیش یہی

۱۔ انسان کے اس قالب خاکی کا نام اے ارجن چھیتر ہے تو رکھ یاد مدام
جو اس کو جانتا ہے اہل تحقیق بتلاتے ہیں چھیتر گیہ اس کو تمام

दोहा—क्षेत्र कहैं इस कायको भोगहेतु गृह तात ।
जानत जो इस कायको सो क्षेत्रज्ञ कहात ॥ १ ॥

Matter and Spirit,* even the Field and the Knower of the Field, wisdom and that which ought to be known, these I fain would learn, O Keshava. (1)

This body, son of Kuntî, is called the Field; that which knoweth it is called the Knower of the Field by the Sages. (2)

۱۔ تو اس جسم کو سمجھ کھیتر مثال
کرم بھومی اس کو کہیں خوش مقال
گیانی اسے کھیترگ بیان کرتے
جو اس کھیتر کی ٹھیک سمجھی ہے چال

यह शरीर क्षेत्र और है, जीवात्मा क्षेत्रज्ञ महान;
कहा गया ऐसा ही इसके, तत्व वेत्ताओं से ज्ञान।

۱

بھگوان اب یوں ہیں محوِ گفتار   وا کرتے ہیں لب شکر وار
ماتا کنتی کے اے پسر نیک   جسم خاکی یہ چھیتر ہے ایک
اس چھیتر میں جلوہ بار ہے جو   کہتے ہیں چھیترگیہ اس کو
جس کو دونوں سے آگہی ہے   اس کا ارشاد تو یہی ہے

शरीर तथा संसार यह, कहा जाता है क्षेत्र।
क्षेत्रज्ञ कहते उसे, जो जाने वह क्षेत्र, ॥१॥

1. This body, O thou Kunti's son,
Is designated as the "Field"—
"Field-knower," so the sages say,
Is He by Whom the "Field" is known.[1]

क्षेत्रज्ञं चापि मां विद्धि सर्वक्षेत्रेषु भारत॥ क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोर्ज्ञानं यत्तज्ज्ञानं मतं मम ॥ २ ॥

दोहा–सोममरूपसुआतमा, वसतुसबनिकीदेह ।
यहैज्ञानकोजानिबो, मेरेमतहैयेह ॥ २ ॥

हे भारत! सर्वक्षेत्रोंमें याने सर्व देहोंमें क्षेत्रज्ञ जो जीव और मैं जो परमात्मा तिस मेरेकोभी जानो जो क्षेत्र और क्षेत्रज्ञका ज्ञान याने इनका विवेक ज्ञानहै सो ज्ञान मेरे को अंगीकार है ॥ यहां जो शरीरोंमें आत्मापरमात्मा दोनों कहे उसपर श्रुतिप्रमाण है सो यह "द्वासुपर्णासयुजासखाया समानंवृक्षंपरिषस्वजाते ॥ तयोरेकः पिप्पलं स्वाद्वत्त्यनश्नन्नन्योऽभिचाकशीति ॥" अर्थ–दो पक्षी संगसंग रहनेवाले परस्पर सखा एकसदृश वृक्षपर रहते हैं उनमेंसे एक उसवृक्षके स्वादु फल खाता है दूसरा खाए विना प्रकाशता है। अर्थात् ईश्वर और जीव सदा संगरहते हैं परस्पर सखा एकसरीखे देहमें रहते हैं तिनमें जीव शरीरजन्यकर्मफलोंका भोक्ता है और ईश्वर साक्षिमात्र प्रकाशकहै। दूसरा यह अर्थ होता है कि, क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ मैंहीं हौं अर्थात् इन दोनोंका अंतर्यामी हौं तौभी देहांतर्यामी जीव जीवांतर्यामी परमात्मा ऐसेभी यही अर्थ सिद्धभया जो यहां जीव और ईश्वर एकही कहते हैं उनको "उत्तमः पुरुषस्त्वन्यः" यहां अर्थकी पंचाइत होनेकी अंतर्यामित्वमें तौ "ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति॥ नतदस्ति विनायत्स्यान्मया भूतं चराचरम्" और "यस्यात्मा शरीरंयआत्मनितिष्ठन्यआत्मानमंतरोयमयतियमात्मानेवेदसते आत्माअमृत" इत्यादिक श्रुति भी प्रमाण हैं ॥ २ ॥ 1

(۲) 2
جان لے ارجن کہ میں ہوں جان کل اجسام کی
امتیاز جسم و جاں میں میری ہستی ہے خفی

Understand Me as the Knower of the Field in all Fields, O Bhârata. Wisdom as to the Field and the Knower of the Field, that in My opinion is the wisdom. 12 (2) (3)

۲- سبھی کھیتروں میں تو بھارت دُلارا
مجھے کھیتر گ جان سب سے نیارا 5
علم کھیتر کا کھیتر گ کا ہے ایا
مجھے سارا معلوم اس کا یسارا

Know ME besides, O Bhārata,
as Arch-Field-Know'r in every 'Field'. 13 2
Who both Field-Knower Knows, and Field,
has Knowledge true, thus I believe.

۲- اے ارجن تو مجھی کو وہ عالم جان
سب جسموں میں مجھے رہے پہچان 3
اور میری رائے میں ہے بس گیان یہی
کھیتر میں جسے عالم معلوم کا گیان

दोहा–मम तनु जीव जो देहमें सो क्षेत्रज्ञ सुजान ।
8 काय जीवके भेदको ज्ञान हि परम ज्ञान ॥ २ ॥

2. In every "Field," O Bharat's son,
Learn thou that I the "Knower" am,
"Field-knowledge" and of Him Who "knows"
Is knowledge true, it seems to Me.[2]

२

हे भारत ! तू जान मुझे ही क्षेत्रोंमें क्षेत्रज्ञ महान ।
क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ ज्ञान भी है बस मेरा ही वह ज्ञान ॥

कुन्ति सुत! जो जानते, इस विद्या का भेद ।
मुझे जान क्षेत्रज्ञ तू, मैं जानूं सभी खेत ॥२॥
ज्ञान क्षेत्र क्षेत्रज्ञका ज्ञाता माना मम ।
भरत वंश अवतंस तू परम सखा है मम ॥३॥

۲

آتے ہیں نظر یہ چھیتر جتنے
سب کا مجھے چھیتر گیہ جانو
ان دونوں کا جو علم ہے پاک
جوہر سارے نکات کا ہے

ہیں کام کے گھر یہ چھیتر جتنے
سب کا مجھے چھیتر گیہ مانو
ان کی تمیز ان کا ادراک
عرفاں میری ہی ذات کا ہے

(२)

मैं क्षेत्रज्ञ सभी क्षेत्रों में, रहता हूँ हे धर्म-ज्येष्ठ;
क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ ज्ञान का, ऐसा है मेरा मत श्रेष्ठ ।

१३६६

तत्क्षेत्रं यच्च यादृक् च यद्विकारि यतश्च यत् ॥ स च यो यत्प्रभावश्च तत्समासेन मे शृणु ॥ ३ ॥

दोहा–क्षेत्रजहांतेहैभयो, जोहैजैसेभाय ।
जेविकारयामांझहैं, कहौंसंक्षेपसुनाय ॥ ३ ॥

सो क्षेत्र जिसद्रव्यका है और जिनके आश्रयभूत है और जिनविकारोंकरके और जिसप्रयोजनकेवास्ते उत्पन्न भया है और जिसरूपसे वर्तमान है और वह क्षेत्रज्ञ जो है याने जैसे रूपयुक्त है और जैसे प्रभाववाला है सो संक्षेपकरके मेरेसे सुनो ॥ ३ ॥

اب بیاں کرتا ہوں تجھ سے جان کے اعجاز کو
جسم کی نیرنگی و خاصیت و آغاز کو

What that Field is and of what nature, how modified, and whence it is, and what He* is and what His powers, hear that now briefly from Me. (4)

۳- سُن مختصراً میں تجھ سے سب ہوں کہتا
جو کچھ ہے وہ چھیتر جن بکاروں والا
جو ہے وہ جہاں سے اور وہ چھیتر گیہی
جو کچھ کہ ہے۔ جو خواص ہے سب اس کا

दोहा–रूप विकार क्षेत्रके जिसहित जो अरु सोय ।
स्वभाव रूप अरु जीवके सुन मित सम दृढ होय ॥ ३ ॥

¶What this 'Field' is, what it is like, 3
how modified, and whence it is;
Besides, what HE is, what His Pow'r,—
hear thou from ME in outline brief:

۳- یہ کھیتر جو جیسے گنوں کو ہے دھارے
ہُوا پیدا جس سے وہ بگڑے سنوارے

۳- اور اس کھیترگ کا جو پر بھاؤ بھارا
سنو مختصر حال مجھ سے پیارے

3. What is that "Field," its origin,
Its nature and its changes too;

Who is the "Knower," what His pow'rs,
Of this, in brief, now hear from Me.

३

वह क्षेत्र जो कुछ, जैसा है, जिससे है, जो उसे विकार ।
जिस प्रभावका है, वह सुन तू सुसंक्षेपसे पाण्डुकुमार ! ॥

(३)

क्षेत्रों की उत्पत्ति कौन है, कौन प्रयोजन और विकार;
क्षेत्रज्ञों के भी प्रभाव का, थोड़े में कहता हूँ सार।

٣

یہ چھیتر یہ جسم چیز ہے کیا
کیا اس کے خواص کی ہے تفصیل
ہے کون جو اس سے باخبر ہے
کرتا ہوں میں بیان اب یہ

اس میں شامل ہیں کون اجزا
کیسے اس کی ہوئی ہے تشکیل
قدرت کس کی یہ جلوہ گر ہے
باتیں سنو تم بغور سب یہ

जो, जितना, वह क्षेत्र है, जैसा कारण जो।
जौन जौन विकार हैं, जिस से हो गया जो ॥४॥
तथा जौन क्षेत्रज्ञ वह, जो उस का प्रभाव।
वहसुन तू संक्षेपसे, मुझ से हे महाभाव ॥५॥

१३५८

१२
—
४

ऋषिभिर्बहुधा गीतं छंदोभिर्विविधैः पृथक् ॥ ब्रह्मसूत्रपदैश्चैव हेतुमद्भिर्विनिश्चितैः ॥ ४ ॥

दोहा—ऋषिनकहेबहुभांतिजे, औरनिहूँयोंभाषि।
हेतुवादनिश्चयजुकर, कह्योउपनिषतसाखि ॥४॥

वह क्षेत्रक्षेत्रज्ञका यथास्वरूप बहुत प्रकारकरके पराशरादिक ऋषिननें और ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद ऐसे अनेक प्रकार वेदोंने[4] और ब्रह्मके प्रतिपादन करनेवाले जो ब्रह्मसूत्र याने व्यासकृत शारीरक सूत्ररूप पदोंने जो कारणयुक्त निश्चय याने सिद्धांतकरनेवाले उननेभी क्षेत्रक्षेत्रज्ञके स्वरूपको न्यारान्यारा कहा है सो मैं संक्षेपसे कहौंगा तुम मेरेसे सुनो ॥ ४ ॥

(۵) 4
رشیوں نے مختلف تشریح میں اس راز کی
سارے ویدک [illegible] اور فلسفی منطقی

Rishis have sung in manifold ways in many various chants, and in decisive Brahma-sûtra verses † full of reasonings. (5)

۴۔ رشیوں نے بہت طرح سے گایا ہے اُسے اور ویدوں میں قسم قسم کے چھندوں سے
الفاظ میں برہم سوتر کے بھی ہے کہا ارباب دلیل نے مصدق کر کے

चार वेद ऋषिसकल ही ब्रह्मसूत्र अरु भूप ।
निपुण कह्यो श्रुति युक्तिसों देह जीवको रूप ॥ ४ ॥

(For seers have sung in many ways, 4
in several metres, all distinct,
and couched in Brahma-Sūtra words,
of faultless logic, well thought-out,—

۴۔ رشی لوگوں نے گیت گا گا کے اعلےٰ
وہ ویدوں نے ورنن کیا ہے نرالا
برہم سوتروں نے بتایا سکارن
اسی بات پر خوب ڈالا اُجالا

४ पृथक् पृथक् ऋषियोंने गाया है छन्दोंमें बहुत प्रकार ।
ब्रह्मसूत्रके सकल पदोंसे निश्चित हुआ सहेतु विचार ॥

4. Distinctly and in many ways
Have *rishis* sung in many hymns,
And passages [3] which treat of Brahm,
Conclusive and well-reasoned out.

(४)

विविध प्रकार विविध छंदों में, ऋषियों द्वारा पूर्ण महत्व;
पृथक् पृथक निश्चित सयुक्ति है, गाया ब्रह्म-सूत्र-पद-तत्व ।

۴

دانا اسے آزما چکے ہیں
یہ راز اکثر بتا چکے ہیں
ویدوں میں بیاں یہ بارہا ہے
اس کا اسلوب ہی جُدا ہے
مرقوم ہے برہمہ سوتروں میں
منظوم ہے برہمہ سوتروں میں
جو ہیں ہر طرح سے مُکمّل
ہے جن کا ہر اک بیاں مُدلّل

गाया ऋषियोंने विषय, यह अनेक प्रकार।
छन्द बनाये उन्होंने, सुःखद विविध प्रकार ॥६॥

पृथक् पृथक् वर्णन किये, क्षेत्रज्ञ अरु क्षेत्र ।
छन्द अनेक प्रकारके, स्व वर्णन किया क्षेत्र ॥७॥

तर्क अनुकूल सुबुद्धि युत्, किये सूत्र निर्माण ।
पद चुन चुन रखे वहां, ब्रह्म विषय प्रमाण ॥८॥

वेदान्त शुभ शास्त्र में, तथा उपनिषद् बीच ।
कल्प, गृह्य अरु श्रौतमें, ब्राह्मण सूत्र बीच ॥९॥

महाभूतान्यहंकारो बुद्धिरव्यक्तमेव च ॥ इंद्रियाणि दशैकं च पंच चेंद्रियगोचराः ॥ ५ ॥ इच्छा द्वेषः सुखं दुःखं संघातश्चेतना धृतिः ॥ एतत्क्षेत्रं समासेन सविकारमुदाहृतम् ॥ ६ ॥

दोहा–महाभूतअहँकारबुधि, अरुमायाहूँजानि ।
एकादशइंद्रियविषय, पंचअगोचरमानि ॥ ५ ॥
इच्छासुखदुखचेतना, द्वेषधीरतादेह ।
यहजुकह्योसंक्षेपसों, क्षेत्रजानिसुखलेह ॥ ६ ॥

पंचमहाभूतें, अहंकार, बुद्धि याने महत्तत्व और अव्यक्त याने सूक्ष्मरूप प्रकृति ये क्षेत्रके उत्पत्तिकारक द्रव्य हैं अब विकार याने कार्य कहते हैं दश और एक ऐसे ग्यारह इंद्रियां हैं जैसे कि, कान, त्वचा, नेत्र, जीभ और नासिका ये पांच ज्ञान इंद्रियां । वाणी, हाथ, पाय, गुदा और लिंग ये पांच कर्म इंद्रियां एक मन ऐसे ग्यारह इंद्रियें और शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध ये पांच इंद्रियोंके विषय हैं ये सोलह विकार हैं इच्छा, द्वेष, सुख, दुःख, संघात यांने सविकारभूत समूह चेतना जो ज्ञानशक्ति धृति जो धीरज ऐसे संक्षेपसे विकारसहित यह क्षेत्र कहा ॥ ५ ॥ ६ ॥

(۶)

پانچ عنصر پانچ اعضا دس حواس مدرکہ
چار قوت یعنی عقل و دل خیال و حافظہ

(۷) (6)

شوق و نفرت رنج و راحت ہوش و غفلت اور خودی
مختصر الفاظ میں تفصیل ہے اس جسم کی

The great Elements, Individuality,* Reason † and also the unmanifested, the ten senses and the one, and the five pastures of the senses ;‡ (6)

Desire, aversion, pleasure, pain, combination, § intelligence, firmness; these, briefly described, constitute the Field and its modifications. (7)

۵- یہ پانچ مہا بھوت اہنکار جیٹ بدھی اویکت جس کو پردھان کہا
اور گیارہ اندریاں ہیں من بھی جن میں اور پانچ بشے اندریوں کے اس جا

۶- خواہش اور نفرت اور سکھ بھی دکھ بھی تن بھی اور گیان اور دھارن شکتی
اس طرح کہا مختصراً میں نے سب چھیتر ہے ۔ اور اس کی ہر اک تبدیلی

दोहा—काय निदान अहंकृती भूत बुद्धि अव्यक्त ।
इंद्रिय सम अरु तिन विषय रहैं कायमें सक्त ॥ ५ ॥

सुख दुख इच्छाऽऽधारता ज्ञान क्रोध तनुकार्य ।
भूतसंघ तनुरूप, तनु कह्यो सविस्तर आर्य ॥ ६ ॥

5

The cosmic 'Creatures'* 'I-hood', Will,
the Base Unmanifest of all,
The Senses ten, and Mind, the one,
and fivefold Object-Pasture too,)—

6

Desire, aversion, pleasure, pain,
the body-bundle, Mind and Will,
Such, in its chiefest aspects, is
thy 'Field,' in brief described for thee.

शब्द स्पर्श अरु रूप रस, गन्ध विषय यह पांच ।
जहां विचरतीं इन्द्रियां, श्रोत्रत्वचा अरु घ्राण ॥१०॥

चक्षु रसना मन तथा, पञ्च इन्द्रियां कर्म ।
गुदा लिङ्ग अरु हस्त पद, जिह्वा लगी सुकर्म ॥११॥

भूमिजल अग्नि पवन, आकाश महाभूत ।
महदभिमान् अरु प्रकृति, कहा क्षेत्र सुखरूप ॥१२॥

मेल इन्हीं सबका तथा, रहा चेतना धार ।
धृति धर्म वह दुःख सुख, यह सब क्षेत्र विकार ॥१३

सूक्ष्म रूप से कर दिया, वर्णन यह सविकार ।
क्षेत्र राग अरुद्वेष युत्, जो दो परम विकार ॥१४॥

ism,[5]
Unrevealed,[6]
gle sense,
jects five.[7]

۵

پانچ اس میں عناصر اہم ہیں — ہر طرح سے مشترک بہم ہیں
اور اس کے علاوہ عقل و پندار — ہیں اس قالب میں برسرکار
ہے دل کی بھی اس میں ایک ہستی — قدرت اس میں ہے غیر مرئی
دس اس میں جو اس جلوہ گر ہیں — پانچ اور ان کی بھی رہگذر ہیں

sure, pain,
consciousness,

ts changes thus,
been described.

٦

رغبت کا بھی ہے وجود اس میں — نفرت کا بھی ہے وجود اس میں
ہے رنج بھی اور خوشی بھی اس میں — ہے پیکرِ عنصری بھی اس میں
ہے اس میں شریک ہوشیاری — جزو اِک اس کا ہے پائیداری
ہیں اس میں تغیرات موجود — ہے ان سب سے یہ چھیتر مشہود

तना धृति संघात ।
ारसहित, हे तात ! ॥

ा, चेतना युक्त;
से संयुक्त ।

१२६२

अमानित्वमदंभित्वमहिंसा क्षांतिरार्जवम् ॥ आचार्योपासनं शौचं स्थैर्यमात्मविनिग्रहः ॥ ७ ॥

दोहा–क्षमासरलअरुदंभतजि, हिंसामदअभिमान ।
गुरुसेवासंग्रमकरत, स्थिरतासोचप्रधान ॥ ७ ॥

अब क्षेत्रकार्योंमें आत्मज्ञानसाधनके वास्ते ग्रहण करनेके गुण कहते हैं जैसे कि, श्रेष्ठ जनोंमें मानका न चाहनी लोक दिखानेको धर्म, कर्म, रूप दंभ न करना परपीडारूप हिंसाकाँ न करना अपनेसे बलहीनके अपराँध सहनरूप क्षमा राखना सबँसे सरलस्वभावँ रहना. मन, बचन, कर्म करके गुरुकी सेवा करनाँ मृत्तिका जलादिसे बाहर औेर शुद्धचित्तसे ईश्वरस्मरण रूप अंतर ऐसा शौच करनाँ आत्मज्ञानमें स्थिर रहना मनको सर्वत्रसे निवारणकरके ईश्वरमें लेगाना ॥ ७ ॥

(A) 7

زہد و تقوی راست بازی صلح جوئی انکسار
صحبتِ انسانِ کامل ضبطِ دل صبر و قرار

Humility, unpretentiousness, harmlessness,
forgiveness, rectitude, service of the teacher,
purity, steadfastness, self-control. 7 (8)

۔۷ کرنا نہ غرور اور نہ دھوکا دینا — بے آزاری ہو سیدھا پن اور چھما
کرنی دل و جان سے گورو کی خدمت — پاکی و قرار روکنا نفس اپنا

(७)
मान-दम्भ-हीनता एवम्, क्षमा, सरलता, थिरता और;
आत्म विनिग्रह, गुरु सेवा युत, हिंसा रहित शुद्ध शिरमौर ।

दोहा–मान दंभ हिंसा कपट क्रोध तजै, मन लाय (मनोनिग्रह) ।
गुरुसेवा शुचिता धृति (स्थैर्य) ये गुण ज्ञान बनाय ॥ ७ ॥

Modesty and simple candour,
harmlessness, patience, uprightness; 7
Sitting at the feet of Teachers,
purity, firmness, Self-control;

13.

۷ تجے مان۔ دمبھ اور منسا سے خالی
رکھے شانتی صاف سیدھی ہی چالی
گورو کی ہو سیوا پوتر چلن
لگا من طبیعت نہ ہو ڈھیلی ڈھالی

7. Uprightness, patience, modesty,
Humility and harmlessness,
The *guru's* service, steadfastness,
And purity and self-control.

७

निरभिमानिता, दम्भहीनता, क्षमा, अहिंसा, आर्जवबुद्धि ।
गुरुजनकी उपासना, स्थिरता, मनका निग्रह, और विशुद्धि ॥

۷

اپنی عظمت نہ خود جتانا — لب پر حرفِ ریا نہ لانا
ایذا نہ کوئی کسی کو دینا — عفو اور عطا سے کام لینا
پہنے ہوئے سادگی کا بانا — خدمت میں گرو کی سر جھکانا
رہ کر یوں پاک و صاف یکسو — رکھنا خود پر مدام قابو

4

वर्णन् अव करूं ज्ञानका, त्यजना मान पाखण्ड ।
हिंसा अरु अभिमानको, चूर्ण करना खण्ड ॥१५॥

सेवा करना गुरु की, रहना शुद्ध पवित्र ।
क्षमा शील कोमल सदा, धीर वीर सुस्थिर ॥१६॥

इंद्रियार्थेषु वैराग्यमनहंकार एव च ॥
जन्ममृत्युजराव्याधिदुःखदोषानुदर्शनम् ॥ ८ ॥

दोहा–विषयनिसोंवैराग्यधरि, तजेरहैअहँकार ।
जन्ममृत्युदुखसुखजरा, व्याधिदोषनिर्धार ॥८॥

इंद्रियविषयोंमें गुणबुद्धि नै करना और देहमें और देहसंबंधी पदार्थोंमें अहंबुद्धि नैं करना जन्म मृत्यु वृद्धावस्था अनेक रोग ऐसे शरीरमें इन दुःखरूप दोषोंका विचारना ॥ ८ ॥

۸ ترکِ محسوسات وخواہش پاک طینت اور حلم
مرگ پیدائش علالت اور پیری سب کا علم

Dispassion towards the objects of the senses,
and also absence of egoism, insight into the pain
and evil of birth, death, old age and sickness. (9)

۸۔ لذاتِ حواس میں نہ خواہش ہونی اور کرنی دل سے ترکِ سب بے منی
یہ دیکھنا تکلیف کے ہیں گھر سارے پیدائش و مرگ، پیری و بیماری

जन्म जरा दुख व्याधि मृति दोष लखै भव जोय ।
विषय अहंकृति औ तजै ज्ञान लहै नर सोय ॥ ८ ॥

True dispassion for sense-objects, .8
yea, selflessness *in mind* as well,
Clear perception of the evil
of birth, death, age, disease and pain ;

۸۔ وشئے اندریوں سے جو ویراگ ہووے
اہنکار کا نہ ذرا لاگ ہووے
جنم، مرن، ویادھی، جرا آدیں
دیکھے دوش پھر دل سے تیاگ ہووے

८

विषयोंसे वैराग्य धारना अहंकारका करना शोष ।
जन्म, मरण, वृद्धत्व, रोग दुख इनमें सदा देखना दोष ॥

8. Indiff'rence to the things of sense,
And absence of all egoism,
With insight of the ill in birth,
In pain and sickness, death and age.

(८) 9

इन्द्रियार्थ में जो वैरागी, एवम् अहङ्कार से हीन;
जन्म-मृत्यु, या जरा व्याधि के, दुःख-दोष देखते प्रवीन ।

۸

لذّاتِ حواس پر نہ مرنا ان کی خواہش سے درگزرنا
پندار و خودی سے دور رہنا اِس نشہ میں نہ چور رہنا
کیا رازِ حیات و موت کا ہے پیری کا عذاب کیا بلا ہے
بیماری و رنج کیوں ہیں جانکاہ ہونا سب کے سبب سے آگاہ

10

विषयोंमें न भटकना, इन्द्रियों के जो ।
मन अपने को रोकना, वैराग्य युत् हो ॥१७॥
वृद्धावस्था रोग अरु, दुःख मौत के बीच ।
दोष देखकर जन्ममें, रहना आत्मवीर ॥१८।

Unattachment, absence of self-identification with son, wife or home, and constant balance of mind in wished-for and unwished-for events.

असक्तिरनभिष्वंगः पुत्रदारगृहादिषु-नित्यं च समचित्तत्वमिष्टानिष्टोपपत्तिषु ॥ ९ ॥

दोहा—नेहनपुत्रकलत्रसों, तादुखदुखीनहोइ ।
चितमेंधरैसमानता, बुरेभलेकोखोइ ॥ ९ ॥

आत्माविना अन्यत्र आसक्तिरहित पुत्र स्त्री और घर इत्यादिकोंमें अति मिलाप न रखनाँ और इष्ट और अनिष्टवस्तुकी प्राप्तिमें निरंतर समचित्त रँहना ॥ ९ ॥

۹- خاطر میں سنے تعلق کا ہونا گھر اور پسر وزن میں نہ پھنسنا اصلا
پالا جو بڑی یا کہ بھلی شئے سے پڑے دل رکھنا ہمیشہ ایک جیسا اپنا

पुत्र दार गृह आदिमें तज आवेश सुसंग (कुसंग)
सम हो इष्टाऽनिष्टमें चढै ज्ञानको रंग ॥ ९ ॥

Detachment, freedom from excess of care for son, or wife, or home, And constant equipoise of mind, whatever hap of fair or foul; 9

۹- پتر - استری - گھر میں دستار ہے
مگر من نہ ان میں ہی پھنسا رہے
سماں چت سدا ہووے ہر حال میں
اشٹا نشٹ میں ایک رسنا ہے

गृहदारासुतमें विरक्ति हो अनासक्त भी रहे तथैव ।
इष्ट अनिष्ट प्राप्तिसे मनकी वृत्ति एक-सी रखे सदैव ॥

9. Detachment, also want of love
For son, for wife, or for the home,
And constant equanimity
In wanted and unwanted things.

(९) 9

दारा, घर, पुत्रों में निर्मम, होते, नहीं कभी आसक्त;
इष्ट-अनिष्ट-प्राप्ति, समता से, देखें, रहते सतत विरक्त।

9

جورو ہو وہ خواہ، خواہ فرزند ہونا نہ کسی کا دل سے پابند
رکھنا نہ علاقہ کچھ مکاں سے رہنا بے لوث ایں و آں سے
حسب مرضی ہو صرف اوقات یا کوئی خلاف طبع ہو بات
کچھ بھی اس کا اثر نہ لینا اس کے پیچھے نہ جان دینا

10

नहीं उलझना पुत्रमें, घर अरु स्त्रिमांह।
ममताआसक्ति त्यागना, सदा सकल जग मांह॥१९॥

रखना चित्त इक रस सदा, इष्ट हो चाहे अनिष्ट।
घबराना न कभी भी, हो यदि घोर अनिष्ट ॥२०॥

9362

93/90

(۱۰)

باندھنا میرا تصوّر عشق صادق سے مدام
گوشہ گیری از خلائق ترک شوقِ ازدہام

मयि चानन्ययोगेन भक्तिरव्यभिचा-
रिणी ॥ विविक्तदेशसेवित्वमरतिर्ज-
नसंसदि ॥ १० ॥

दोहा–अटलभक्तिमोमेंधरै, सबकोआतमजानि ।
रहैसदाएकांतमें, तजैसभासनमानि ॥ १० ॥

मेरेमें अनन्ययोग करके अखंड भक्ति एकात रहनेमें प्रीति जनसभामें अप्रीति ॥ १० ॥

۱۰- مجھ میں اس یوگ سے کہ ہو نہ تغیر
بھگتی رکھنی وہ جو چلائی نہ چلے
کنج عزلت پسند خاطر ہونا
نفرت رکھنی مجالس و مجمع سے

अनन्य भक्ति मम योगसे अरु एकान्त निवास ! ।
संग तजैं नर नारिको, तब हि ज्ञानकी आस ॥ १० ॥

Unflinching devotion to Me by Yoga, without other objects, resort to sequestered places, absence of enjoyment in the company of men. (10)

۱۰- میرے بیچ بھگتی رہے پائیدار
میرا پریم دِل میں رہے برقرار
جو ایکانت سیون کی عادت رکھے
رہے بھیڑ سے خاص کر برکنار

10. For Me, by *Yog*, unswerving love,
Without a thought of aught besides
Resort to lonely spots: dislike
For men's society,

अटल भक्ति मुझमें रखते हैं, करें अनन्य-भाव का योग;
बनते एकान्त निवासी, जन-समूह से करें वियोग । (१०)

For ME, through Union 'other'-less, 10
a Love that wanders not elsewhere ;
Resort to lonely spots, for lack
of solace in the 'world' of men ;

१०

और अनन्यभावसे मुझमें रखे सर्वदा निश्चल भक्ति ।
नित रहना एकान्त स्थानमें विषयी जनसे रखे विरक्ति ॥

भक्ति जो नहीं चञ्चला, और जभी से त्याग ।
रखनी केवल मुझीमें, जनता सभा वैराग ॥२१॥

रहना देश एकान्तमें, आत्मज्ञान लवलीन ।
सदा देखना अर्थको, तत्त्वज्ञान प्रवीण ॥२२॥

۱۰

مجھ سے مطلب مدام رکھنا
میری بھگتی سے کام رکھنا
عشق ذات دگر نہ ہونا
شیدا کسی اور پر نہ ہونا
دنیا والوں کے خیل سے دور
گوشہ گیری سے شاد و مسرور
تنہائی میں قیام کرنا
یوں عمر اپنی تمام کرنا

11

A constant hold on SELFHOOD true,
direct Intuition of the Truth
That others talk of: *this* I call
Knowledge—all else is ignorance.

**अध्यात्मज्ञाननित्यत्वं तत्त्वज्ञानार्थ-
दर्शनम् ॥ एतज्ज्ञानमिति प्रोक्तम-
ज्ञानं यदतोऽन्यथा ॥ ११ ॥**

दोहा–अध्यातमज्ञानहिंधरे, तत्त्वज्ञानकोदेखि ॥
यहसबजोकछुमैंकह्यो, यहैज्ञानअवरेखि ॥ ११ ॥

आत्मसंबंधी ज्ञानकी नित्यता तत्त्वज्ञानके प्रयोजनका विचारनो ऐसें यहै ज्ञान कहाँ जो इससे अन्यथा है सो अज्ञान है ॥ ११ ॥

Constancy in the wisdom of the self,* under-standing of the object of essential wisdom; that is declared to be the Wisdom; all against it is ignorance. (12)

۱۱۔ علم عرفان سے ذوق اور شوق سدا
اور علم حقیقت کے معانی کھلنا
ہیں سنے بتایا گیان کہتے ہیں جسے
جان اس کے خلاف اگیان دانا

आत्मज्ञान लगी सदा, हरिपद प्रीति लगाय ।
ज्ञान हेतु ये, और सम ज्ञानविरुद्ध मनाय ॥ ११ ॥

(۱۲)

ظاہر و باطن کی معلومات سے بہرہ وری
علم کی تعریف ہے باقی ہے سب بیدانشی

११

नित्य ज्ञान अध्यात्म समझना फिर विचारना तत्वज्ञान ।
इनको कहते ज्ञान, अन्य जो हैं इनसे वे सब अज्ञान ॥

11. And in Self-knowledge constancy,
Direct perception of the Truth[8]—
This is indeed as wisdom known,
All else is grossest ignorance.[9]

۱۱۔ آتم گیان میں من لگاتا رہے
سچے گیان کو تاکہ پاتا رہے
یہ لکشن سبھی گیان کے جان تو
ہو اس سے الٹ گیان جاتا رہے

(११) ९

नित्य आत्म-ज्ञान-रत रहते, करते तत्व-ज्ञान का ध्यान;
कहलाता है यही ज्ञान सब, है विपरीत अन्य अज्ञान।

१०

ब्रह्म आत्म दर्शन यही, कहा गया है ज्ञान।
इस से जो विपरीत हो, मान उसे अज्ञान ॥२३॥

११

شغلِ عرفان ذات رکھنا
اس میں پائے ثبات رکھنا
علم اصل جہاں کی تحصیل
اس مقصد و مدعا کی تکمیل
ہاتیں ساری یہ کام کی ہیں
جُزو عرفان و آگہی ہیں
ہیں یہ آئینۂ حقیقت
باقی ہر چیز ہے جہالت

I will declare that which ought to be known, that which being known immortality is enjoyed—the beginningless supreme ETERNAL, called neither being nor non-being. (13)

ज्ञेयं यत्तत्प्रवक्ष्यामि यज्ज्ञात्वाऽमृतमश्नुते ॥ अनादिमत्परं ब्रह्म न सत्तन्नासदुच्यते ॥ १२ ॥

दोहा–कहौंअद्भुतसमजानिबो, जातेमुक्तिजुहोइ ।
कारणकारजतेपरे, आदिब्रह्मकोजोइ ॥ १२ ॥

जो जाननेयोग्य है सो कहतौं हौं जिसको जानिके मोक्षको पाता है वह ऐसा है कि, अनादि याने जन्मरहित है मत्पर याने उससे श्रेष्ठ मैंही हौं वह केवल मेरे स्वाधीन है ब्रह्म याने प्रकृतिमुक्त शुद्ध चैतन्य जीवात्मा है वह आत्मा न सत् न असत् कहनेमें आताहै याने कार्यकारण दोनों अवस्थाओं करके रहितहै ॥ १२ ॥

12 The ONE worth knowing I'll declare,
by *knowing* Whom Man deathless grows,
Transcendent BRAHM that ne'er began,
that none can voice by 'yea' or 'nay'.

۱۲- جو گیہ ہے وہ بھی تجھکو بتلاؤں گا — امرت پیتا ہے جانا بس اِس کا
ہے اوّل و آخر سے یہ برہم بری — بنتا نہیں ہست و نیست اُس کا کہنا

दोहा–जिसे जान हो मुक्ति तिस कहौं ज्ञेयको तोय ।
मम तनु बहुगुणयुक्त अज कारण कार्य न जोय ॥ १२ ॥

(۱۲)

معنیٔ لفظِ احد اب تجھپہ کرتا ہوں عیاں
جاننے سے جسکے ملتی ہے حیاتِ جاوداں

اوّل و آخر نہیں اُسکا کہ وہ ہے لازوال
حقّ و باطل کہہ نہیں سکتے ہیں اُسکو اہلِ حال

(१२)
जिसे जान नर अमृत पाता, कहता हूँ अब मैं वह ज्ञेय;
पर असत् और सत् से भी, जिसका परम ब्रह्म है ध्येय ।

12. 'Him I'll describe Who should be known,
Whom knowing man immortal grows,
The Brahm Supreme Who ne'er began,
Who as *Asat* and *Sat* is known.'

۱۲۔ کہیں ایشور کا پیارے سُندر گیان تو
جسے جان امرت کرے پان تو
پرم برہم ہے اُواس کا نہیں
اُسے ست اسنت سے پرے جان تو

१२

जिसे जानकर मोक्ष प्राप्त हो ऐसी अब कहता हूँ बात ।
परब्रह्म वह आदिरहित न 'सत्' तथा न 'असत्' है तात !॥

ज्ञेय जो वह अब कहूंगा, सम्यक् जानने योग्य ।
उसका करूं प्रवचन अब, जो सुकीर्तन योग्य ॥२४॥

जिसे जान अमृत् मिले, भोगे मोक्षानन्द ।
आदि रहित् जो सर्वथा, परं ब्रह्म आनन्द ॥२५॥

۱۲

جس کی پہچان ہم پہ ہے فرض
جس کے رازوں کو جان لینا
جس میں آغاز کی نہیں قید
کرتا ہوں بیاں اب اس کے اسرار

جس کا عرفان ہم پہ ہے فرض
مصدر ہے نشاطِ جاوداں کا
جو ہے پیدا نہ جو ہے ناپید
اس کا تفصیل سے ہے اظہار

सर्वतः पाणिपादं तत् सर्वतोऽक्षिशिरोमुखम् ॥ सर्वतः श्रुतिमल्लोके सर्वमावृत्य तिष्ठति ॥ १३ ॥

दोहा—सर्वत्रहिकरचरणशिर, त्यौंहीमुखदृगकान ।
व्यापिरह्योसबजगतमें, सोहिंदशोंदिशिजान १३॥
११

वह जीवात्मा सब ओरसे हाथपांववाला है सब ओरसे नेत्र मस्तक और मुखवाला है सब ओरसे कानवाला है लोकमें वस्तुमात्रमें व्यापकहोके रहेताहै यह स्वरूप मुक्तजीवका कहा मुक्तदशामें जीवकी समता परमात्माके सरीखी है सो यहां गीतामें भी कहेंगे "इदं ज्ञानमुपाश्रित्य मम साधर्म्यमागताः" सूत्रभी है "भोगमात्रसाम्यलिंगाच्च" और "तथा विद्वान् पुण्यपापे विधूय निरंजनः परमं साम्यमुपैति" ऐसे जो परमात्माकी समता कही है तो परमात्मासरीखा स्वरूप होनेमें क्या शंका है॥१३॥

Everywhere THAT hath hands and feet,
everywhere, eyes, heads, and mouths; all-hearing,
He dwelleth in the world, enveloping all.

۱۳۔ ہر جا ہیں اس کے ہاتھ ہر جا ہیں پا
اور چشم و دہان و سر ہیں اس کے ہر جا
ہر جا ہیں کائنات میں اس کے کان
ساری ہو کر یہی ہے سب میں رہتا

दोहा—पाद हस्त मुख कान सिर नयन—सभन इन काज ॥
सभी ओरसों करसके, जानत सभ हि समाज ॥ १३ ॥

Everywhere THAT has Hands and Feet, everywhere Eyes and Heads and Mouths, 13
Everywhere in the World THAT hears, rounding All, THAT abides unchanged.

हाथ, पैर, आँखें, मुख, मस्तक, और कान उसके सब ओर।
और वही है भारत ! जगमें व्याप रहा सबमें सब ठौर ॥ १३

۱۳۔ سبھی طرف ہیں ہاتھ پاؤں نرالے
آنکھیں۔ سر و مکھ کے رکھے پھر اجالے
سُنے سب طرف اور استھر سدا
سر و لوک کو آپ ہی پھر سنبھالے

13. He everywhere hath hands and feet,
On all sides faces, heads and eyes,
And He hath ears on every side,
World-dweller He, embracing all.[11]

(१३)

जितने हाथ, पाँव, सिर, मुख या, नेत्र, कान, हैं कुंतीपुत्र !
उन सब में उस परम-ब्रह्म की, व्यापक सत्ता है सर्वत्र ।

۱۳

یہ شان اِسی ذات کو ہے شایاں — ہر سمت ہیں دست و پا نمایاں
پیدا یہ اِدھر بھی ہیں اُدھر بھی — ہیں ہر جانب وہاں و سر بھی
ہر سمت آنکھیں ہیں جلوہ ساماں — کانوں کا ہے وسیع داماں
ساری ہے وہ بسیط ہے وہ — دنیا بھر میں مُحیط ہے وہ

सब से परे महान् जो, उत्तम सर्वाधार।
नहीं असत् जाता कहा, सत् भी न निराकार ॥२६॥

सत्ता परम अव्यक्त है, सो नहीं ब्रह्म, अतः सत् ।
ब्रह्म कहा जाता नहीं, है वह, सो न असत् ॥२७॥

उसके मुख शिर आंख अरु, हाथ पांव शुभ कान।
विद्यमान् सब ओर हैं, वह ढांपे सब स्थान ॥२८॥

१२८६

१३/१४

(۱۴) 14

جلوہ گر احساس میں ہے خود مبرا از حواس

[illegible]

सर्वेंद्रियगुणाभासं सर्वेंद्रियविवर्जितम् ॥ असक्तं सर्वभृच्चैव निर्गुणं गुणभोक्तृ च ॥ १४ ॥

दोहा--सबविषयनितेहै रहित, सबताकोआभास ।
संगविनासबकोधरै, निर्गुणगुणनिप्रकास ॥१४॥

सर्वइंद्रियनकी वृत्ति नकरकेभी विषयनको जाननेमें समर्थ है और आप स्वभावसे सर्वइंद्रियोंकरके रहितभी है याने इंद्रियनकी वृत्तिविनाभी विषयनको जाननेमें समर्थ है आप स्वयं देवादिशरीरोंमें आसक्त नहीं है और सर्वदेवादिशरीरोंका धारणकरनेवाला है सत्त्वादिगुणरहित और गुणोंका भोगनेवाला है ॥ १४ ॥

Shining with all sense-faculties without any senses; unattached supporting everything and free from qualities * enjoying qualities;* (15) 14

۱۴۔ ہر ایک حواس میں اسی کا ہے نور
لیکن یہ خود ہے سب حواسوں سے دور
سب اسی میں ہیں سب سے بے تعلق ہے مگر
نرگن ہے یہ بھوگتا گنوں کا ہے ضرور

दोहा—सर्वेन्द्रियसों काज ले, सर्वेन्द्रियसों हीन ।
तनुधारी, गुणभोगपटु, अरु तिन संगीविहिन ॥ १४ ॥

In all sense-pow'r That LIGHT shines through, 14
from all sense-shackles utter-free,
Detached from all, yet Prop of All,
past moods, tho' sensing every mood.

۱۴۔ ساری اندریوں کے گنوں کو ہی دکھائے
مگر پھر رہے آپ ان سے نیارے
وہ نرلیپ پھر سب کا پالن کرے
وہ گن بھوگتا گن سے رہ کر کنارے

14. He hath no senses, yet He shines
With all the faculties of sense; [12]
Though unattached, yet Stay of all, [13]
Though *guna*-less, yet sensing them. [14]

(१४)

इन्द्रिय-गुण से भासमान है, पर सभी से ब्रह्म-स्वरूप;
है असक्त पर पाले सब को, गुण भोगे हो निर्गुण रूप।

इन्द्रिय सबसे रहित् वह, विषय भोगे सबका।
सब के चमकें शक्ति गुणां, गुण उसमें सबका॥२२॥

फंसे न वह किसी विषयमें, पाले पोले सब। (14)
अपना गुण कोई नहीं, पर भोगे गुण सब ॥२०॥

14

افعال جو یہ حواس کے ہیں — اُس کی قدرت کے آئینے ہیں
بے واسطہ ان سے ہے جُدا ہے — اُن کی لیکن یہی بِنا ہے
ہے اُن سب کا قیام اِسی سے — کرتے ہیں وہ سارے کام اِسی سے
گو اس میں نہیں صفات کو بار — پھر بھی اِن سے ہے وہ خبردار

१४

इन्द्रिय-गणका गुण-प्रकाशक भी न रखे इन्द्रिय-संयोग।
हो असक्त भी सबका पालक निर्गुण भी करता गुणभोग॥

बहिरंतश्च भूतानामचरं चरमेव च ॥
सूक्ष्मत्वात्तदविज्ञेयं दूरस्थं चांतिके च तत् ॥ १५ ॥

दोहा—जंतुजितेचरहूँअचर, अंतरबाहिरसोइ ।
सबते दूरिसुनिकटहै, सुक्षमलखैनकोइ ॥ १५ ॥

वह आत्मा मुक्तावस्थामें पृथिव्यादिभूतोंके बाहर और बद्धावस्थामें भीतर रहता है स्वयं आप अचर है और देहसंयोगसे चर होताहै सूक्ष्म है इससे जाननेयोग्य नहीं है वह अज्ञानिनको दूर है और ज्ञानिनको समीपहै ॥ १५ ॥

(15)

ساکن و متحرک و مخفی و ظاہر ہے وہ نور
لیکن احول کو نظر آتا نہیں نزدیک و دور

Without and within all beings, immovable and also movable by reason of His subtlety imperceptible; at hand and far away is THAT. (16)

۱۵۔ سب کے باہر ہے سب کے ہے اندر بھی
قائم متحرک ہے ہر اک چیز یہی
جانا نہیں جاتا اس طرح کا ہے لطیف
نزدیک بھی ہے دور بھی ہے بس یہی

दोहा—रहै सभनमें, सभनसों हीन, चराचर मान ।
अणुतावश अज्ञेय वह, सहज कठिन तिस ज्ञान ॥ १९ ॥

Within all creatures and without, 15
past motion, moving everywhere,
Subtle past grasp of sense or mind,
far-distant, though so *near*, is THAT.

وह सब भूतोंके भीतर है, बाहिर है चर अचर तथैव ।
सूक्ष्म हेतुसे अविज्ञेय है, दूर और है निकट सदैव ॥ १५

۱۵۔ چرا چر پرانی کیئے ہیں جو ظاہر
ہے سب کے اندر ہے سب کے باہر
وہ ہے اتنا سوکھم کہ جانا نہ جائے
وہ ہے دور نزدیک عالم و ماہر

15. Within all beings and without
Though motionless, yet movable,
Through subtleness He's undiscerned,
He's close at hand, yet far away.

(१५) ९

ओत-प्रोत है प्राणि-मात्र में, जड़ जङ्गम में ब्रह्म-ज्ञेय;
निकट ज्ञान के दूर अन्य को, सूक्ष्म, अतः है अति अविज्ञेय।

१०

अन्दर बाहर प्राणियों, अप्राणियों बीच।
है सुस्थिर अरु तीव्र गति, है सब को रहा खींच॥३१

वह जाना जाता नहीं, विशेष रीति से सूक्ष्म।
निकट सभी के वर्तता, तथा दूर अति सूक्ष्म॥३२॥

15

١٥

ہیں جتنے وجود زیبِ دُنیا — بیرون و درون ہے سب میں پیدا
حرکت کے بھی ہیں اس میں آثار — جامد ہو کر بھی ہے نمودار
یہ ذاتِ لطیف اِس قدر ہے — تمیز اس کی محال تر ہے
طُرفہ اس کا ظہور بھی ہے — نزدیک بھی اور دُور بھی ہے

4

१३८०

२३/१६

अविभक्तं च भूतेषु विभक्तमिव च स्थितम्। भूतभर्तृ च तज्ज्ञेयं ग्रसिष्णु प्रभविष्णु च ॥ १६ ॥

दोहा--तामेंभेदकछूनहीं, सबमें रहतविभाग ।
उपजावतनाशतसबनि, पालतकरिअनुराग१६॥

वह पृथिव्यादि भूतविकार देवादि शरीरोंमें एकरस रहताहै और अज्ञानिनको देवादिशरीरोंमें देवादिशरीरोंके सदृश दीखताहै कि, यह देव यह मनुष्य पशु इत्यादिक विभक्तसरीखा स्थित दीखताहै और सर्वभूतोंका पोषकहै और अन्नादिक भूतोंकी भक्षक है देहरूपसे आहार करनेवाला है और उसी अन्नादिविकारसे उत्पत्तिकर्ताभी है ऐसे जाननेयोग्य है ॥ १६ ॥

(16) 16

وہ یگانہ ہے مگر عالم میں ہے کثرت نما
اُسکے چہرے کی جھلک ہیں بود وایجاد وفنا

Not divided amid beings, and yet seated distributively; THAT is to be known as the supporter of beings; He devours and He generates. 12 16 (17)

۱۶۔ آتا ہے الگ الگ یہ گو سب میں نظر
جان اس کو تو اس طرح کہ سب ایک ہیں
تقسیم کا نام تک نہیں اسمیں مگر
خلقت ہے اسی سے مرگ اسی میں کیسر

दोहा—एकरूप सम कायमें, तनुसम लखत अजान ।
वपुधारण भोजनकरन मलछोडन हु निदान ॥ १६ ॥

Within all selves unbroken SELF, 16
yet shrined in each as if apart,—
As All-Sustainer be THAT known,
All-Maker, All-Devourer too.

۱۶۔ الگ جو پرانی یہ ہیں بے شمار
بسے ایک اُن میں وہی نروکار
کرے پیدا پالے سبھوں کو پریو
وہ سب میں ویاپک کرے پھر سنگار

वह अविभक्त हुआ भी सबमें है विभक्त-सा पाण्डुकुमार ! ।
पैदा करता, पालन करता, ज्ञेय, वही करता संहार ॥ १६

16. Though undivided yet He lives
As if divided in all things;
He should be known as Stay of all,
Creator and Destroyer both.[15]

(१६) 9

है अविभक्त, विभक्त भाँति है, सब भूतों में एक समान;
उत्पादक, पोषक, संहारक, एक ब्रह्म ही है मतिमान।

١٦

ہر چند یہ ایک ہے احد ہے
گو ایک ہی اس کا سلسلہ ہے
یہ کون و مکاں ہیں اس سے پیدا
ہے یہ ان کی فنا کا باعث

زیب اجسام لاتعد ہے
ظاہر سب میں جدا جدا ہے
یہ ہر دو جہاں ہیں اس سے پیدا
ہے یہ ان کی بقا کا باعث

4

वही ज्ञेय परमात्मा, दिखे कटा जगमांह। 10
पर भूतों से नहीं कटा, भूत सकल उस छांह ॥३३॥

अप्राणि अरु प्राणियों, को करता उत्पन्न।
पालन भूतोंका करे, करे नाश स्वच्छन्द ॥३४॥ 11

१३८२ 13/१८

ज्योतिषामपि तज्ज्योतिस्तमसः परमुच्यते ॥ ज्ञानं ज्ञेयं ज्ञानगम्यं हृदि सर्वस्य धिष्ठितम् ॥ १७ ॥

दोहा—जोतिनहूकीजोतिहै, अंधकारतेपार ।
ज्ञानजानिवोहीयमें, सबकेहैनिरधार ॥ १७ ॥

वहै सूर्यादिकज्योतिनकीभी प्रकाशकै है सूक्ष्मकारण रूप प्रकृतिसे परे यांने न्यारा कहाताहै ज्ञानरूप जानने-योग्य ज्ञानसे प्राप्तहोने योग्य सर्वके हृदयमें रहताहै

याने सर्व देव मनुष्य पशुपक्ष्यादि शरीरोंके हृदयमें रहताहै ॥ १७ ॥

(۱۸) 17

جہل کے پردے میں پوشیدہ ہے وہ نوروں کا نور
قلب میں علم سہ گانہ اُس سے پاتا ہے ظہور

THAT, the Light of all lights, is said to be beyond darkness; Wisdom, the Object of Wisdom, by Wisdom to be reached, seated in the hearts of all. 17 (18)

۱۷۔ کہتے ہیں کہ تاریکی ظلمت سے دور — ہے یہی تمام نور والوں کا نور
جانا جاتا ہے گیان سے گیان اگیہ — ہے یہی جو سب کے قلب میں ہے مستور

दोहा—ज्योतिनसों पर ज्योति अरु, प्रकृतीसो पर सोय ।
ज्ञानाकृति, हियमें वसे, ज्ञात ज्ञानसों होय ॥ १७ ॥

As LIGHT of lights is THAT proclaimed, 17
beyond the Darkness shining, fixed ;
Knowledge, its Object, 'Path' between
in ONE,—THAT rules in every Heart.

۱۷۔ وہ جیوتی کی جیوتی وہ سرشٹ میں نور
اندھیرے و اگیان سے دور دور
ملے گیانی سے گیان کی مورتی
سبھوں کے ردے میں وہ حاضر حضور

17. He, radiance e'en of radiant things,
Is said to be beyond all gloom;
Knowledge, its object and its goal,
He is in every heart enshrined.

(१७)
तेजों का भी तेज और है, सतत अन्धकार में हीन;
ज्ञान, ज्ञेय हो ज्ञान गम्य वह, सब के हृदयों में आसीन ।

१३/३

१७

सब तेजोंका तेज वही है, तमसे परे वही है ध्येय।
सबके हृदयोंमें वह स्थित है, ज्ञान-गम्य है उत्तम ज्ञेय॥

17

اسباب ظہور ہیں اسی سے | پیدا سب نور ہیں اسی سے
ظلمت کا نہیں ہے نام اِس میں | کچھ اس کا نہیں ہے کام اِس میں
علم و عرفاں اسی کو سمجھو | جان دوراں اسی کو سمجھو
عالم ہے یہ علیم ہے یہ | ہر قالب میں مقیم ہے یہ

अन्धकार से परे वह, चमकावे सभी ज्योत्।
कहा, सभी के हृदयमें, स्थित विशेष, विद्योत्॥३५॥

वही जानने योग्य है, जानावे सर्व।
जानने ही से प्राप्त हो, सके, त्यजो यदि गर्व॥३६॥

(१९) 18.

جسم و جان و علم کا جو تذکرہ میں نے کیا
اسکو سُنکر میرا طالب مجھ میں پاتا ہے بقا

Thus the Field, Wisdom and the Object of Wisdom, have been briefly told. My devotee, thus knowing, enters into My Being. 18 (19)

इति क्षेत्रं तथा ज्ञानं ज्ञेयं चोक्तं समासतः ॥ मद्भक्त एतद्विज्ञाय मद्भावायोपपद्यते ॥ १८ ॥

दोहा—क्षेत्रज्ञानअरुज्ञेयमें, तोकोदयोबताइ ।
इनकोजानैजोभगत, लहैसुमेरोदाइ ॥ १८ ॥

ऐसे 'महाभूतान्यहंकारः' यहांसे लेके, 'संघातश्चेतनाधृतिः' यहां पर्यंत क्षेत्र कहा तैसे तथा "अमानित्वं" यहांसे लेके "तत्त्वज्ञानार्थदर्शनं" यहांपर्यंत ज्ञान कहा और "अनादिमत्परं" यहांसे लेके "हृदि सर्वस्य धिष्ठितं" यहां पर्यंत ज्ञेय याने जाननेयोग्य आत्मस्वरूप कह्यौ ऐसे यहँ संक्षेपसे कहा इतेनोंको जाँनिके मेरो भक्तहोके मेरे सरीखे स्वरूपको प्राप्तहोय ॥ १८ ॥

۱۸۔ اس طرح بہ اختصار تجھ کو میں نے ۔ یہ چھیتر اور گیان گیہ سب بتلائے
میرا بھگت اس کا گیان حاصل کرکے ۔ ہو جاتا ہے انجام میں داخل مجھ سے

(१८)
क्षेत्र, ज्ञान, ज्ञेय का ऐसा, थोड़े में बतलाया वृत्त;
मेरा भक्त जान कर इस को, ब्रह्म-रूप में करे प्रवृत्त।

दोहा—कहे ज्ञान साधन तथा, काय जीवको रूप ।
जो जानत मम भक्त इह तिस भव टूटत भूप ॥ १८ ॥

Thus have the 'Field', and Knowledge too, 18
and THAT Which should be known, been sketched
In outline brief,—My Devotee,
thus *knowing*, comes to My Estate.

۱۸۔ یہ کھیتر کا ورنن کیا مختصر
کیا گیان اور گیہ کا بھی ذکر
میرے بھاؤ کو پا کے آنند ہو
میرا بھگت اس کو سمجھ لے اگر

18. Thus have the "Field" and wisdom too
And wisdom's Object [16] here been sketched,
My lover, knowing this full well,
Is fitted for Mine Own Estate.

१८

इस प्रकार संक्षिप्त कहा यह क्षेत्र, ज्ञेय, संयुत विज्ञान।
पाता है मेरे स्वरूपको, मेरा भक्त इसे दृढ जान॥

सूक्ष्म रीतिसे कह दिया, ज्ञेय क्षेत्र अरु ज्ञान। 10
स्पष्टतया इसे जानकर, हो मम भक्त सुजान॥१७॥

भिन्न भिन्न सब जानकर, पहिचान सुविशेष। 10
पास पहुंच मम स्थितिके, आनन्द भोगों विशेष॥१८

۱۸

یہ چھیتر ہے کیا یہ جسم کیا ہے — پنہاں اس میں طلسم کیا ہے
جو علم کا خاص مدعا ہے — جو کچھ منشا علیم کا ہے
باتیں کر دیں بیان یہ سب — سمجھا دیا تم کو ان کا مطلب
یہ راز اگر سمجھ میں آجائے — طالب مری ذات میں سما جائے

१३८६

२३/९८

प्रकृतिं पुरुषं चैव विद्ध्यनादी उभावपि ॥ विकारांश्च गुणांश्चैव विद्धि प्रकृतिसंभवान् ॥ १९ ॥

दोहा–मायापुरुषअनादिहैं, अर्जुनदोऊजान।
गुणविकारसबजेभये, मायाहीतेमान ॥ १९ ॥

प्रकृतिको और पुरुषको याने जीवको इन दोनोंको भी अनादि याने सनातन जानो जो बंधनकारक इच्छा द्वेष सुख दुःखादिक विकार उनको और मोक्षकारक अमानित्व अदंभित्व गुण उनको निश्चयपूर्वक प्रकृतिसंभव जानो अर्थात् इच्छादिविकारयुक्त प्रकृति पुरुषको बंधनकारक और अमानित्वगुणयुक्त मोक्षदायक होती है ॥ १९ ॥

(۲۰) 19

آفرینش اور فنا سے پاک ہیں ذات و صفات
جملہ اوصاف اور عوارض ہیں صفاتی کائنات

Know thou that Matter* and Spirit † are both without beginning; and know thou also that modification and qualities ‡ are all Matter-* born. 19 (20)

۱۹ پرکرتی پرش کا بھی کر عرفان دونوں بے ابتدا ہیں انکو پہچان

جتنے کہ تبدلات ہیں یا اوصاف پرکرتی سے پیدا ہوا ان کو جان

दोहा--प्रकृति अरु यह जीव दउ तात अनादि जान।
जो विकार अरु गुण कहैं प्रकृतिजन्य तिन मान ॥ १९ ॥

Know that Nature and [real] MAN are both alike beginningless, 19
And that modifications all,
and creature-moods,* from Nature spring.

प्रकृति पुरुष दोनों अनादि हैं ऐसा समझो पाण्डुकुमार ! ॥
सदा प्रकृतिसे पैदा होते ये सारे गुण और विकार ॥ १९

۱۹ یہ مادہ لطیف اور جیو آتما
انادی سمجھ دونوں کو باصفا
وکار اور گن ان کے جتنے کہے
یہ مایا سے پیدا ہوئے بر ملا

All changes [17] also do thou learn,
And *gunas* [18] are of Matter-born.

(१६)

प्रकृति पुरुष दोनों अनादि हैं, यही समझ ले, रण-सम्पन्न;
करती प्रकृति सदैव जगत में, गुणों, विकारों को उत्पन्न ।

Know thou that matter and thesoul
Are bothe alike beginningless;
All changes also do thou learn,
And gunas are of matter-born.

19

ہے وقت شروع روح عنقا
دایم یونہیں رونما ہیں دونوں
صدہا جو تغیرات ہیں یہ
پاتی ہیں نمود مادّے سے

آغاز نہیں ہے مادّے کا
چیزیں لا ابتدا ہیں دونوں
ظاہر جتنی صفات ہیں یہ
ہیں یہ محدود مادّے سے

रचनासे भी पूर्व था, विद्यमान् अव्यक्त॥ (जीव)
पूर रहा अव्यक्तको । जीव ब्रह्म सुव्यक्त
जीव ब्रह्म अव्यक्त को, आदि रहित् तू जान ।
दोनों प्रकृति पुरुष जो, कारण मूल पहिचान ॥४०॥
प्रकृति से उत्पन्न हों, इच्छा आदि विकार ।
सत्त्व रजः अरु तमोगुण, सकल पदार्थ सार ॥४१॥

१३५८

१३
२०

(२१) 20

فاعلیّت فعل اور فاعل ہیں تثلیثِ صفات
راحت و تکلیف کے احساس کا باعث ہے ذات

20

For the rise of effect and cause,
Nature is held responsible,
While MAN is held responsible
for the sensing of joy and pain.

कार्यकारणकर्तृत्वे हेतुः प्रकृतिरुच्यते
पुरुषः सुखदुःखानां भोक्तृत्वे हेतुरु-
च्यते ॥ २० ॥

दोहा–कारजकारणकरतऊ, मायाइनकोहोत ।
दुखअरुसुखकेभोगको, वहीपुरुषगहिलेत॥२०॥

अब एकसंग रहेभये प्रकृतिपुरुषोंके कार्यभेद कहते हैं जैसे कि, कार्य जो प्रकृतिपरिणाम देहकारण मनसहित इंद्रियां इनका व्यापार करानेमें कारण प्रकृति कही है

सुखदुःखोंके भोक्तापनेमें कारण पुरुष कहाहै याने भोगसाधनकर्मकी आश्रय प्रकृतिपरिणाम और पुरुषयुक्तदेह तथा सुखादिभोक्तृत्व आश्रय पुरुष है ॥ २० ॥

فاعل مفعول و فعل ہیں پرکرتی ہی سبب ہے کچھ اور نہیں
ہاں سکھ دکھ کا جہاں ہے احساس واں پرش سبب ہے بےچیاں اور نہیں

दोहा–वपु इंद्रियकी जो क्रिया साधन तिन हि प्रधान ।
सुख दुख अनुभवको तथा जीव हि आश्रय मान ॥ २० ॥

Matter* is called the cause of the generation of causes and effects; Spirit † is called the cause of the enjoyment of pleasure and pain. 20 (21)

۲۰۔ پیدا ہوں جو اجسام مرتے رہیں
تو مادہ کو کارن انہوں کا کہیں
جو سکھ دکھ کا بھگتان آوے نظر
تو کارن انہوں کا پرش سارے ہیں

२०

यही प्रकृति पैदा करती है हे भारत ! सब कारण कार्य ।
और पुरुष अनुभव करता है सुख दुखका यों कहते आर्य ।

20. The body [19] and the senses [20] both,
In Matter solely have their source,
Enjoyment of all pleasures, pains,
Is functioned by the Soul alone.[21]

१३/८

(२०)

कार्य्य-करण-कारण में रहती, मेरी ही यह प्रकृति-प्रधान;
सुख दुःखों के भोगों में हो, कारण सतत पुरुष बलवान ।

۲۰

فاعل ہو وہ فعل یا ہو مفعول
علّت ہو وہ خواہ معلول
مخرج ان سب کا مادّہ ہے
ایسا ہی اسے کہا گیا ہے
اب روح کے باب میں رہے یاد
یہ اس قالب میں رہ کے آباد
ہوتی ہے کبھی طرب سے مانوس
کرتی ہے کبھی یہ رنج محسوس

कार्य रूप दश भूत जो, इन्द्रिय अन्तःकरण ।
इन के रचनेमें कही, जाती प्रकृति कारण ॥३२॥

Spirit † seated in Matter * useth the qualities † born of Matter*; attachment to the qualities ‡ is the cause of his births in good and evil wombs. (22)

पुरुषः प्रकृतिस्थो हि भुंक्ते प्रकृतिजान् गुणान् ॥ कारणं गुणसंगोऽस्य सदसद्योनिजन्मसु ॥ २१ ॥

दोहा–पुरुषप्रकृतिमेंबैठिके, करतविषयकोभोग ।
ऊँचेनीचेजन्मको, कारणगुणसंयोग ॥ २१ ॥

जिसवास्ते कि, यह पुरुष प्रकृतिहीमें रहाभया प्रकृतिजन्यगुणोंको भोगता है तिसीसे इसका ऊंचनीचयोनिनमें जन्म लेनेमें कारण प्रकृति गुणोंका याने सत्वादि गुणोंकी संगही है अर्थात् उन गुणनकी आसक्तिहीसे ऊंच नीच जन्म होते हैं ॥ २१ ॥

21

MAN, coupled with Nature, enjoys
the creature-moods that spring from Her.
Identification with these
for HIM breeds good and evil 'births.'

۲۱- پرکرتی میں پرش آپ قائم ہو کے پرکرتی کے گنوں کے لیتا ہے مزے
باعث ہے تعلق یہ گنوں کا کہ اُسے ہوتے ہیں یہاں جنم بھلے اور برے

दोहा–प्रकृति युक्त ही जीव इह भोगत सुख दुख जात ।
सुख दुख की आसक्तिसों भली बुरी तनु पात ॥ २१ ॥

(۲۲) 21

سیرِ باطل دیکھنا ہے ذاتِ حق کا معجزہ
نیک و بد خلقت ہی گویا اک صفاتی شعبدہ

21. The Soul in Matter shrined enjoys
The *guṇas* that are Matter-born,
Attachment to the *guṇas* leads
To birth in good and evil wombs.

२१

पुरुष प्रकृतिमें सुस्थित होकर प्रकृति-गुणोंका करता भोग ।
असत् और सत् योनि-जन्मका कारण है गुणका संयोग ॥

۲۱- یہ روح مادہ میں قائم ہو کر ذری
وہ مادہ کے گن بھوگتا ہر گھڑی
گنوں کا کرے سنگ جب آتما
جنم پانے سے ہو سکے نہ بری

(२१)

पुरुष प्रकृति ही में थिर होकर, भोगै प्रकृति जनित सब भोग:
गुण-प्रवृत्ति से मिलै जन्म फिर, अच्छी बुरी योनि का योग ।

۲۱

رہ کر یہ روح مادّے میں — پھنس کر دنیا کے سلسلے میں
ہے شاہد جلوۂ صفاتی — تخلیق ہے مادّے سے جس کی
ہر لحظہ صفات سے ملوث — ہے بزمِ حیات سے ملوث
ہوتی رہتی ہے یوں ہمیشہ — اچھے بُرے قالبوں میں پیدا

सुख दुःखके उपभोगमें, कहा यह कारण जीव ।
प्रकृति उत्पन्न गुणोंको, तत् स्थित् भोगता जीव॥४३॥

तीन गुणों का सङ्गही, इसे दिलाता जन्म ।
अशुभ योनि शुभमें तथा, जीव का सदसत् जन्म॥४४॥

१४०२

१३/२२

Supervisor and permitter, supporter, enjoyer, the great Lord, and also the Supreme SELF; thus is styled in this body the Supreme Spirit.†

22 (23)

उपद्रष्टाऽनुमंता च भर्त्ता भोक्ता महेश्वरः ॥ परमात्मेति चाप्युक्तो देहेऽस्मिन् पुरुषःपरः ॥ २२ ॥

दोहा—परमात्माकोदेहतें, न्यारोजानतसोइ ।
साक्षीभरताभोगता, ईश्वरनिर्गुणहोइ ॥ २२ ॥

इस देहमें यह पुरुष देखनेवाला है याने चौकसी करनेवाला है और अनुमोदन देनेवाला याने सलाह देनेवाला है और इस देहका पोषनेवालाँ है और भोगनेवाला है और इसका महेश्वरै है जैसे कि, इस देहमें ईश्वर इंद्रिय मन इत्यादि हैं उनकाभी ईश्वर है ऐसे इस देहसे यह जीव न्यारोभी है परंतु अज्ञानसे केवलै यह देहै ऐसाँ कहाताहै ॥ २२ ॥

22

Overseer and Allower,
Upholder, Enjoyer, High Lord
And SELF transcendent,—thus is styled
'in' this His Form the MAN BEYOND.

۲۲- اس تن میں پرم پرش میشر ہے وہ
جو بھوگت الیعنی محقق پرکاشک ہے
کہتی پرماتما ہے دنیا جس کو
ناظر ہے۔ صلاح کار اور حافظ جو

दोहा—अनुमंता द्रष्टा तथा भोक्ता कायमहेश ।
देहादिक को जीव इह परमात्मा राजेश ॥ २२ ॥

(۲۳) 22

پیکرِ حادث میں نازل ہو کے وہ رُوحِ قدیم
نامزد ہے فاعل و مفعُول۔ معلُوم و علیم

२२

उपद्रष्टा, अनुमोदन करता, भर्ता, भोक्ता तथा महेश ।
इस शरीरमें कहलाता है परमात्मा पर पुरुष-विशेष ॥

22. Permitter and as Looker-on,
Supporter and Enjoyer too,
The Self Supreme, the Mighty Lord,
Thus is the Soul embodied known.

۲۲- ہے اِس دیہہ میں ایک پرش اعلا بڑا
وہ نگران اور رکھ پالا بڑا
پرم آتما اِس کا ہی نام ہے
مہیشور وہی دین دیالا بڑا

(२२)
इस शरीर में पुरुष अन्य वह, होता है उपद्रष्टा और:
भर्त्ता, महेश्वर, अनुमन्ता, भोक्ता परमात्मा शिरमौर।

۲۲

ہو کر قالب میں جلوہ گستر رکھتی ہے یہ نگاہ اس پر
مِلتا ہے اِسے سہارا اس کا کرتا ہے کام اشارا اس کا
ہر ذائقہ کی ہے چکھنے والی اس ذات کی شان ہے نرالی
جو کچھ بھی ہے وہ سب ہے اس کا ذاتِ مُطلق لقب ہے اِس کا

जोव से भिन्न इक दूसरा, और भी देहमें पुरुष।
परमात्मा कहते जिसे, पर उत्तम वही पुरुष ॥४५॥

ईश सभी से बली वह, भोगे उत्तम भोग।
पालन कर्ता साक्षी, करता जीव अनुमोद ॥४६॥

1408

93/23

य एवं वेत्ति पुरुषं प्रकृतिं च गुणैः सह ॥ सर्वथा वर्त्तमानोपि न स भूयोऽभिजायते ॥ २३ ॥

दोहा—जोकोऊऐसेलखै, पुरुषप्रकृतिगुणभाइ ।
सोक्योंहूजगमेंरहो, बहुरिनउपजैआइ ॥ २३ ॥

जो ऐसें इस जीवको और गुणोंकरके सहित प्रकृतिको जानता है सो सर्व प्रकारसे संसारमें रहताहै तौ भी फिर नहीं उत्पन्न होताहै ॥ २३ ॥

(TP) 23

علم ہے جسکو حقیقت کا صفات و ذات کی
باہمہ اوصاف وہ ہے آفرینش سے بری

He who thus knoweth Spirit * and Matter † with its qualities,‡ in whatsoever condition he may be, he shall not be born again. 23 (24)

اشلوک ۲۳ - جو پرش کا راز اس طرح سے جانے — پرکرتی اور گنوں کو یوں پہچانے
سب طرح سے سب کام بھی کرتا ہوا وہ — یاں پھر نہیں آتا اگر تو میری مانے

दोहा—उक्त रूपसों जीवको प्रकृतीको गुणसाथ ।
जान, पुरुष रह सभ हि विध जन्म न ले नरनाथ ॥ २३ ॥

Whoso thus knows MAN, and Nature 23.
together with Her Creature-Moods,
Though in every manner *living*,
that Man is never 'born' again.

۲۳- جو مادہ و اس کے گنوں کو ہی جانے
بھلی طور آتم کو جانے پہچانے
خوشی سے وہ سنسار میں سکھ کو پاکر
جنم پانے سے چھوٹ کر موج مانے

23. The man who knoweth thus the Soul,
And Matter with its *guṇas* three,
He never shall be born again,
Whatever may his conduct be.

२३ इस प्रकारसे पुरुष प्रकृतिको गुणोंसहित जो लेता जान ।
कैसा ही बर्ताव करो वह, पुनर्जन्म उसका मत मान ॥

(२३)

प्रकृति, पुरुष को गुणों सहित जो, सतत जानता इसी प्रकार;
नहीं जन्म पाता वह फिर से, रत रह कर भी सर्व प्रकार ।

۲۳

کیا مادّہ شے ہے روح کیا ہے   نیرنگ صفات کیا بلا ہے
جو ان چیزوں سے ہے خبردار   جس پر ان کے عیاں ہیں اسرار
چاہے کچھ بھی ہو رنگ اس کا   چاہے کچھ بھی ہو ڈھنگ اس کا
وہ جسم نہیں قبول کرتا   اس میں نہیں پھر نزول کرتا

देखे अति समीपसे, दे सम्मति यथार्थ ।
धारण कर्ता सभी का, भोक्ता सर्व पदार्थ ॥४७॥

पुरुष महेश्वर परम वह, कहा जाता परमात्म ।
इसी देहमें रहे वह, भिन्न उस से जीवात्म ॥४८॥

इस प्रकार जो जानता, पुरुष प्रकृति गुण ।
वर्तें जैसे कैसे वह, न फिर नहीं पाता जन्म ॥४९॥

१४०६

९३
२४-२५

ध्यानेनात्मनि पश्यंति केचिदात्मान-मात्मना॥ अन्ये सांख्येन योगेन कर्म-योगेन चापरे ॥ २४ ॥ अन्ये त्वेवम-जानंतः श्रुत्वाऽन्येभ्य उपासते ॥ ते ऽपि चातितरंत्येव मृत्युं श्रुतिपरा-यणाः ॥ २५ ॥

दोहा—देहमाँझआतमलखत, कोऊकीयेध्यान ।
सांख्ययोगअरुकर्मकरि, लखतकोउसज्ञान २४॥
जेऐसेनहिंजानही, औरनिपैसुनिलेत ।
ममउपासनाकरतहैं, भवभयमृत्युतरेत ॥ २५ ॥

कितनेक पुरुष आपके अंतःकरणमें बुद्धिसे विचार करके इस जीवात्माको जानतेहैं और कितनेक सांख्य-योगकरके जानतेहैं और और कितनेक कर्मयोग करके याने ईश्वरार्पण कर्म करते करते जानतेहैं और कितने-कै और ऐसे नहीं जानते दूसरोंसे सुनिके उपासना करतेहैं याने सुनिके प्रथमसरीखे उपाय करके जानतेहैं

और कितनेक केवल श्रद्धायुक्त श्रवणही करते रहतेहैं तौ वेभी संसारको तरतेहैं ॥ २४ ॥ २५ ॥

24. The Self 22 by self 23 within the self 24
By meditation some behold;
Whilst others by the *Sānkhya Yog*
And others by the *Karma Yog*.

25. Yet others ignorant of this,

Some by meditation behold the SELF in the self by the SELF; others by the Sankhya Yoga, and others by the Yoga of Action: 24

جن کو نہیں آتما کی اس طرح خبر
کرتے ہیں اور اس طرح وہ سننے والے
اوروں سے اُپاسنا کو وہ سن سن کر
ترجاتے ہیں موت کا سمندر بیک

दोहा—वपु मधि देखत जीवको भक्तियोगसों कोउ ।
ज्ञानयोगसों और नर कर्मयोगसों कोउ ॥ २४ ॥

उक्तयोग असमर्थ जन श्रवणमात्र कर तात ।
आत्मामें मन लाउते तिनहु जन्म मिट जात ॥ २५ ॥

Others also, ignorant of this, having heard of it from others, worship; and these also cross beyond death, adhering to what they had heard. 25 (26)

25. Yet others ignorant of this,
From hearsay only worship Me,
And clinging fast to what they've heard,
They too in safety cross o'er death.

(24)

اہلِ باطن کو میسّر ذات کا دیدار ہے
علم اور اعمال کا ثمرہ وصالِ یار ہے

(25)

یادِ خالق سے ہمیشہ جسکا دل باکار ہے
بالیقیں بحرِ اجل سے اُسکا بیڑا پار ہے

¶Some perceive, in Meditation, 24
SELF by Self within themselves;
Others come by Sānkhya-Yóga,
by Karma-Yóga others yet.

Some again, such Wisdom lacking, 25
adore, from others having heard.
These souls, on truth revealed intent,
shall also safely cross o'er Death.

(२४)
आत्मा में आत्मा से देखें, आत्मा को जो धर के ध्यान:
कोई सांख्य योग से कोई, कर्म-योग द्वारा मतिमान !

(२५)
अन्य पुरुष जो मुझको ध्यावें, विज्ञों से सुन सुन कर ज्ञान:
श्रुति में परम परायण वे भी, पा जाते हैं मोक्ष निदान ।

२४
आत्माको अपनेमें कोई आप ध्यानसे देखे धीर ! ।
और सांख्यसे, तथा योगसे, कर्म-योगसे कोई वीर ! ॥

२५
अन्य अजान लोग औरोंसे सुन सेवन करते दिनरात ।
सुने हुएमें रत, वे भी जन तर जाते हैं भवसे तात ! ॥

۲۴

باریک نظر سے کام لیکر　　خود اپنے ہی بطوں کے اندر
مشغول مراقبہ ہیں دن رات　　کرتے ہیں کچھ نظارۂ ذات
کچھ محو نظارے میں ہیں اس کے　　علم و عرفاں کے راستے سے
دیتے ہیں شہادت اس کی اکثر　　بے لوث عمل کی راہ چل کر

۲۵

ایسے بھی کچھ بشر مگر ہیں　　ان رازوں سے جو بے خبر ہیں
سُن کر اوروں سے جو یہ اسرار　　ذاتِ مُطلق کے ہیں پرستار
جو کچھ اس طرح ہیں یہ سُنتے　　قائل ہوتے ہیں دل سے اس کے
ایسے انساں بھی آخر کار　　ہوتے ہیں فنا کے بحر سے پار

परमात्मा को देखते, आत्मामें धर ध्यान ।
शुद्धात्मा से धीर नर, करें जो स्वात्म ध्यान ॥५०॥

ध्यान धरें ऐसे कोई, अन्य पढ़ें शुभ ज्ञान ।
कर्म उत्तम करें तीसरे, सबको मिलें भगवान् ॥५१॥

ये विधियें नहीं जानते, सुन ही करें उपास ।
इन ही से जो दूसरे, सो भी न पावें त्रास ॥५२॥

उतरें मौत के पार वह, भी यदि श्रुति अनुकूल ।
चलैं शब्द के आश्रय, कबहुं न प्रतिकूल ॥५३॥

१४९०

१३/२८

यावत्संजायते किंचित्सत्त्वं स्थावरजंगमम् ॥ क्षेत्रक्षेत्रज्ञसंयोगात्तद्विद्धि भरतर्षभ ॥ २६ ॥

दोहा–जितेजीवयाजगतमें, थावरजंगमहोत।
क्षेत्रऔरक्षेत्रज्ञमें, तेसबलहतउदोत ॥ २६ ॥

हे भरतवंशिनमें श्रेष्ठ अर्जुन ! जितनो कुछ स्थावर और जंगमें प्राणी उत्पन्न होते हैं उनको क्षेत्रज्ञके संयोग से याने शरीर जीवके संयोगसे जानो ॥ २६ ॥

Whate'er thing enters creature-life
in motionless or moving realms,
Rest thou assured, from coupling springs
'twixt FIELD-KNOW'R [SELF] and Object-Field. 26

۲۶- جو کچھ ہوتا ہے اس جہاں میں پیدا قائم متحرک ایک ایک چیز سدا
وہ عالم و معلوم کے بس میں ہے ارے راجہ بھرت کے خاندان میں اعلےٰ

दोहा--जो प्रकटत जग चर अचर वस्तुजात सो मान।
प्रकृतिजीव दउ संगसे प्रकटत सभ हि सुजान ॥ २६ ॥

26

بےحس و باہوش مخلوقات میں اے نیک فال
آشکارا ہے مساوی جسم و جاں کا اتصال

२६

तुम ऐसा जानो इस जगमें स्थावर जंगम सकल पदार्थ।
क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ योगसे पैदा होते हैं हे पार्थ ! ॥

Whatsoever creature is born immobile or mobile, know thou, O best of the Bhâratas, that it is from the union between the Field and the Knower of the Field. 26 (27)

۲۶- جہاں تک پرانی کا وستار ہے
چراچر جہاں میں جان وار ہے
سبھی جسم اور رُوح کا میل سمجھو
نہ اس قاعدے سے کوئی پار ہے

¶ 26. Whatever being comes to birth,
Immovable or movable,
O best of Bharats, know it springs
From Matter's union with the Soul.[25]

१४११

(२६) 9

जितने भी पदार्थ जड़ जङ्गम, जग में होते प्रादुर्भूत।
क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ-योग से ही होते हैं पाण्डव-पूत।

۲۶

اے نازشِ نسلِ پاک بھارت — دل میں رہے نقش یہ حقیقت
اک سمت سے کارزارِ ہستی — اک سمت سے رازدارِ ہستی 4
ہو جاتے ہیں جب آ کے یک جا — عالم ہوتا ہے ان سے پیدا
یعنی بے جاں ہو یا ہو جاندار — ہے کل خلقت کا ان سے اظہار

जो कोइ प्राणि जन्मता, स्थिर चाहे गतिमान्। 10
संसृति पुरुष के मेलसे, उपजा तू उसे जान ॥५४॥
भरतश्रेष्ठ! सभी भूतमें, ठहर रहे भगवान्।

समरूपमें सर्वथा, यूं देखे गुणवान् 10 ॥५५॥

समं सर्वेषु भूतेषु तिष्ठंतं परमेश्वरम् ॥
विनश्यत्स्वविनश्यंतं यः पश्यति स पश्यति ॥ २७ ॥

दोहा–परमेश्वरसबजंतुमें, बैठोएकसमान ।
तिनहिंसंतविनशैनहिं, जोजानैसोजान ॥ २७ ॥

जो कोई सर्व भूतोंमें सम रहेभये केवल मन इंद्रियादिकोंके ईश्वर इस जीवको इन इंद्रियादिकोंके नाश होतेभी इसको नाशरहित देखताहै याने जानताहै सोई जानताहै ॥ २७ ॥

¶The SAME within all creatures' Hearts,
their ever-standing LORD Supreme,
'Mid all destruction undestroyed,—
whoso thus sees, he *sees* indeed.

۲۷۔ یکساں ہر شے میں ذات حق کا جلوہ
آنکھوں سے نظر جسے جہاں میں آیا
اور ان سب فانیوں میں باقی جس نے
دیکھا ہے اسی نے ذات حق کو دیکھا

दोहा–एकरूप सभकायमें जानत जीवहि जोय ।
जीव नित्य, वपु नष्ट हो, इह जानै–बुध सोय ॥ २७ ॥

27

اہل عرفاں کی نظر میں ایک ذات کبریا
سب کے باطن میں منور ہے مبرا از فنا

¶ 27. Who doth behold the same Great Lord
Indwelling in all creature-shapes,
The Deathless One in those that die,
Who seeth thus he sees indeed.

२७
भूतोंके मिटनेपर भी जो मिटे न उनमें रहे समान ।
इसे देखता ऐसे जो नर वही तत्त्व लेता पहचान ।

Seated equally in all beings, the supreme Lord, unperishing within the perishing—he who thus seeth, he seeth. (28)

۲۷۔ سبھی پرانیوں میں رہے ایک سا
گیانی سدا اس کو ہے دیکھتا !!
جسم ناش ہوں پر نہ وہ ناش ہوں
نظر ایسی پر مرحبا مرحبا !!

१४१३

(२७)

जड़ जङ्गम जग के नश्वर हैं, अविनाशी है ईश्वर एक;
वह सब में सम रहे अमर हो, जो जाने यह सत्य विवेक।

۲۷

ذات برتر خدائے دوراں — ہے ہر قالب میں جلوہ ساماں
پھیلا اس کا ہے نور سب میں — ہے وہ نزدیک و دور سب میں
گو ہے ہر ایک جسم-فانی — اس کی ہستی ہے جاودانی
کرتا ہے مشاہدہ جو اس کا — آنکھوں والا وہی ہے بینا

नाशवान् संसारमें, नाशरहित को देख।
भूतोंमें परमेश्वर, तभी सके तू देख ॥५६॥

इक रस ईश्वर दीखता, ठहरा सर्व स्थान।
उसे देख सम सर्वथा, करे न आतमहान् ॥५७॥

१४९४

९२
२८

समं पश्यन् हि सर्वत्र समवस्थित-
मीश्वरम् ॥ नहिनस्त्यात्मनात्मानं
ततो याति परां गतिम् ॥ २८ ॥

दोहा—ईश्वरकोसबठौरजो, जानतसमताभाइ ।
आतमहीसोंहोइवश, रहैपरमगतिपाइ ॥ २८ ॥

सर्वदेवादिशरीरोंमें एकसरीखे रहेभये इस मन इंद्रियादिकोंके ईश्वर जीवात्माको सम देखताभयो जो कि, बुद्धिपूर्वक आपको नहीं हनताहै याने संसारमें नहीं गिराताहै उससे वह परम गतिको याने मुक्तिको पावता है ॥ २८ ॥

For, seeing on all sides the SAME
O'erlord of All, that stands for aye,
He gives up slaying SELF by self
and thenceforth treads the Path Supreme.

۲۸- یکساں کرتے ہوئے ہر اک سمت نظر
جو دیکھتا ایشور کو ہے سب میں یکسر
وہ مارتا آپ ہی نہیں آپ کو
اور پاتا پرم گتی ہے آگے چل کر

सबहि देहमें एकसम एकहि रूप रहात ।
जान एक भव टूटतो तब निज रूपहि पात ॥ २८ ॥

(۲۹) 28

عالم کثرت میں وحدت جسکو آتی ہے نظر
جا گزیں ہوتا ہے وہ صدق و صفا کے بام پر

२८

सदाकाल परमेश्वरको सम रूप जानता सबमें न्यास ।
घात न अपनी आप करै जो वही ब्रह्मको होता प्राप्त ॥

Seeing indeed everywhere the same Lord equally dwelling, he doth not destroy the SELF, and thus treads the highest Path. 28 (29)

۲۸- جو ایشور کو سم روپ دیکھے سدا
سبھوں مین وہی ایک ہی بس رہا
نہ ہو آتما گھاتی یہ جان کر
پرم گت کا بھاگی بنے برملا

28. For whoso sees the Lord Supreme,
Abiding everywhere alike,
Doth not destroy the self by self,[26]
And thus attains the Highest Bliss.

(२८)

जग के सब जीवों में ईश्वर, रहता समता ही में व्याप्त;
आत्मा को अविनाशी समझें, वे नर करें परम गति प्राप्त ।

۲۸

ذاتِ مُطلق ہے وہ سراسر بزمِ امکاں میں جلوہ گُستر
پاتا ہے جو اُسے نُمایاں جتنے قالب ہیں سب میں یکساں
پامال نہیں کسی سے ہوتا نادم نہیں نیستی سے ہوتا
چڑھ کر سرِ بامِ زندگانی ہو جاتا ہے وہ جاودانی

जब नहीं आत्मा मारता, आत्मा से वह पुरुष ।
उच्च अवस्था प्राप्त कर, पाता सद्गति पुरुष ॥५८॥

१४९६

९३
२९

29

He that sees on every side
All actions by His Nature done,
And His own SELF at utter Rest,
His Seeing is true SIGHT indeed.

प्रकृत्यैव च कर्माणि क्रियमाणानि सर्वशः ॥ यः पश्यति तथात्मानमकर्तारं स पश्यति ॥ २९ ॥

दोहा—मायाकरतजुकर्मसब, जीवअकर्त्ताहोइ ।
जानतजोयाभेदको, लखतआतमासोइ ॥ २९ ॥

जो सर्व कर्मोंको प्रकृति करकेही याने प्रकृतिविकार इंद्रियोंकरके ही करेभये जानताहै और तैसेंही आपको अकर्त्ता जानताहै सो जानता है ॥ २९ ॥

۲۹۔ جو دیکھتا ہے یہ کہ جہاں کے سب کام — کرتی ہے پرکرتی ہے سب اسی کلام
اور آتما وہ ہے کہ نہیں کرتا کچھ — بس وہی دیکھتا ہے ٹھیک اے عالم

दोहा—जीव न करतो कर्म कछु प्रकृति करै सभ जानि ।
सुखदुखहेतु हु कर्म—इह जानै जो सो ज्ञानि ॥ २९ ॥

(۳۰) 29

اپنے سب افعال کو جو مانتا ہے فطرتی
آپ کو اُن سے مبرّا مردِ کامل ہے وُہی

He who seeth that matter* verily performeth all actions, and that the SELF is actionless, he seeth. 29 (30)

۲۹۔ سبھی کرموں سے جانے مایا کا میل
کرم کیا ہیں مادہ کرے سارے کھیل
جانے آتما کو الگ اور اکرتا
وہ اگیان کو دیوے بالکل دھکیل

२९

माया करती सब कर्मोंको ब्रह्म नहीं करता कुछ कार्य ।
इस प्रकार जो पुरुष देखता वही देखता सब कुछ आर्य ! ॥

29. And he who sees that every act
By Nature is alone performed,
And that the Self is actionless,
He verily doth see aright.

१४९६

(२९)

प्रकृति कर्म करती है, यह ही, जो नर समझें सर्व प्रकार;
कर्म नहीं आतमा करती है, जिन के हैं यह ठीक विचार ।

٢٩

معلوم جسے یہ ہوگیا ہے　　افعال کی وجہ مادّا ہے
فطرت یہ نقوش ہے بناتی　　وہ ان کو ظہور میں ہے لاتی
کرتی نہیں کام کچھ مگر روح　　آزاد اس سے ہے سر بسر روح
ایسا انسان دیدہ ور ہے　　در اصل وہ مرد باخبر ہے

प्रकृति द्वारा किये गये, देखता जब सभी कर्म।
वास्तवमें वही देखता, स्वात्मतत्त्व निष्कर्म ॥२९॥

१४१२

९३
३०

यदा भूतपृथग्भावमेकस्थमनुपश्यति।
तत एव च विस्तारं ब्रह्म संपद्यते तदा ॥ ३० ॥

दोहा–एकआतमामें सुथित, सबप्राणनिकोनाइ ।
आतमहीतेविस्तरे, लखेसुब्रह्महिपाइ ॥ ३० ॥

जबै भूतोंका पृथग्भाव याने देवमनुष्यादिक शरीरोंकी छोटाई बडाई मोटाई पतराई इत्यादिक न्यारे-न्यारे भावोंको एकस्थ याने एकप्रकृतिहीमें देखता है और उसी प्रकृतिमें पुत्रादिरूप विस्तारको देखता है तब शुद्धस्वरूपको प्राप्त होताहै ॥ ३० ॥

When He sees all this motley show
inherent in the ONE alone,
And from that ONE alone spread forth,
He reaches BRAHMA then and there. 30

13

۳۰۔ انسان کثرت کو اس طرح جب سمجھے
وحدت میں یہ کثرت کے ہیں سب سلسلے
وحدت ہی سے پھیلاؤ ہے کثرت کا تمام
پھر برہم کا ملتا ہے بے شبہ اُسے

3

8 नर सुर आदिकभेदको प्रकृतीकृत हि मनात ।
प्रकृतीकृत विस्तार अरु, तब निजरूप लहात ॥ ३० ॥

(۳۱) 30 2

نقطۂ وحدت میں کثرت کو گھٹا کر دیکھنا
جاننا واحد کو سب میں ہے طریقہ وصل کا

When he perceiveth the diversified existence of beings as rooted in One, and spreading forth from it, then he reacheth the ETERNAL. 30 ~~(31)~~

12

5

۳۰۔ الگ سب پرانی کو دیکھے جبھی
پربھو ایک میں دیکھے قائم سبھی
اسی ایک کا دیکھے وستار جو
وہی برہم کو صاف پیکھے تب ہی

30

२०

सब भूतोंका पृथक्भाव जब दिखने लगे एकमें पार्थ ! ।
फिर विस्तार उसीसे उसका तब हो ब्रह्म-प्राप्ति यथार्थ ॥

30. When he perceives this varied show
Exists in Him—the One—alone,
And from the One it emanates,
He then becomes the Brahm indeed.

(३०)

पृथक् भाव भूतों के जो नर, समझे एक भाव में लग्न;
देखे एक भूत में सब को, होता ब्रह्म-रूप में मग्न ।

۳۰

خلقت جو یہ قسم قسم کی ہے
پابند جو شکل و اسم کی ہے
سب کی بنیاد روح پر ہے
سب میں یہی ذات جلوہ گر ہے
چیزیں نکلی ہیں سب اِسی سے
پیدا ہیں یہ بے طلب اسی سے
جس کے پیشِ نظر ہے یہ بات
وہ پا جاتا ہے وصل بالذات

पृथकपना सभी भूतका, दिखे टिका इक माइ ।
उसी से निकले दिखें सब, भूत जभी जग मांइ॥६०॥

मिलते तब भगवान् हैं, जीव बने तब ब्रह्म ।
आत्मतत्त्व शुभ प्राप्त कर, पावे गति आगम्य ॥६१॥

9820

93
—
39

31

Beginningless, attributeless,
that SELF Supreme, that changes not,
Though 'incarnate', O Bhārata,
performs no act and reaps no stain.

अनादित्वान्निर्गुणत्वात्परमात्मायमव्ययः ॥ शरीरस्थोपि कौंतेय न करोति न लिप्यते ॥ ३१ ॥

दोहा—परब्रह्मपरमातमा, निर्गुणआलमकोइ ।
देहमाँझयद्यपिरहै, करेनलिप्तनहोइ ॥ ३१ ॥

हे कुंतीपुत्र ! यहै जीवात्मा अनादिपनेसे अविनाशी है केवल शरीरमें रहा भयाभी निर्गुणपनेसे ने कुछ कर्मनको करताहै ने उन कर्मफलोंकरके लिप्त होतो है॥ ३१॥

۳۱۔ پرماتما میں نہیں کوئی تبدیلی
بے وصف ہے۔ ابتدا نہیں ہے اسکی
گو جسم میں ہے مقیم لیکن ارجن
کچھ کرتا ہے وہ نہ ملوث ہے کبھی

दोहा—जीव अनादि होनसे अव्ययरूप सुजान ।
निर्गुण है तासों नहीं करतो बँधतो मान ॥ ३१ ॥

(۳۲) 31

جان ہے بے ابتدا بے انتہا اور بے زوال
اسکی یکرنگی میں ہے فعلونکی آمیزش محال

Being beginningless and without qualities, † the imperishable Supreme SELF, though seated in the body, O Kaunteya, worketh not nor is affected. 12 31 (32)

۳۱۔ انادی پنا اور گن سے نیارا
وہ اویکت بھی اور پھر نروکارا
جسم میں اگرچہ وہ استھت ہوا
وہ نرلیپ اکرتا ہے آتم پیارا

31.

31. Beginningless and *guṇa*-less,
The Self Supreme Who waneth not.
Though He's embodied, Kunti's son,
He acteth not nor is He stained.

३१

यह अनादि निर्गुण होनेके कारण परमात्मा अविकार।
देहस्थित भी कर्म न करता नहीं लिप्त हो पाण्डुकुमार ! ॥

(३१)

अनादि और निर्गुण होने से, अव्यय परमात्मा का रूप;
—है देहस्थित किन्तु रहै यह, कर्म-मुक्त निर्लिप्त-स्वरूप।

۳۱

ہے چونکہ صفات سے مبرّا   آغاز کہیں نہیں ہے اس کا
ذات برتر وہ لایزالی   اپنی قدرت دکھانے والی
گو جسم میں ہے قیام کرتی   لیکن نہیں کچھ بھی کام کرتی
بالا ہر ایک بات سے ہے   بے لوث تاثرات سے ہے

न प्राकृत् गुण आदिन, परमात्मा का न नाश।
कुन्तिसुत! शरीरमें, टिका न हो वह प्रकाश ॥६२॥

कर्म का कारण रजः गुण, वही करे जन लिप्त।
परमात्मामें वह नहीं, कर्म करें न हो लिप्त ॥६३॥

32

यथा सर्वगतं सौक्ष्म्यादाकाशं नोपलिप्यते ॥ सर्वत्रावस्थितो देहे तथात्मा नोपलिप्यते ॥ ३२ ॥

दोहा–ज्योंअकाशसूक्ष्मबसै, सबमेंपरसतनाहिं ।
त्योंहीयहपरमातमा, लिपतनदेहहिमाहिं ॥३२॥

जैसे सर्वत्र प्राप्त भयाहुआ आकाश सूक्ष्मतासे उन भूतोंके गुणोंकरके लिप्त नहीं होताहै तैसे सर्वदेवादि शरीरोंमें रहाभया जीवात्मा देहगुणोंकरके नहीं लिप्त होताहै ॥ ३२ ॥

As all-pervading Space remains
for very subtleness unstained,
So, present in His Form throughout,
the SELF of Man incurs no stain.

۳۲۔ جس طرح کہ آکاش ہے سب میں پھیلا
پر اس کو لطافت سے نہیں لوث ذرا
یوں ہی گو آتما ہے پھیلا سب میں
پر لوث نہیں ہے اس کو کچھ بھی اصلا

गगन यथा सभ सँग लग्यौं लिप्त न कोउ सुभाव ।
तथा कायमें बैठ हू जीव अलिप्त मनाव ॥ ३२ ॥

३२
गगन सूक्ष्म होनेसे होता सर्वव्यापी यथा न लिप्त ।
यह आत्मा तनुमें सर्वत्र स्थित भी होता तथा न लिप्त ॥

(۳۳) 32
جملہ اشیا میں خلا ساری ہے آغشتہ نہیں
جان کل اجسام پر حاوی ہے آغشتہ نہیں

As the omnipresent ether is not affected, by reason of its subtlety, so seated everywhere in the body the SELF is not affected. (33)

۳۲۔ سہروگت کسی سے وہ بھاگے نہیں
جوں آکاش کو لیپ لاگے نہیں
اسی طور سب دیہوں میں آتما
جسم کے گنوں سے تو داغے نہیں

32. Just as the all-pervading space
Through subtleness remains unsoiled,
So too untainted is the Self
Though HE, embodied, dwells in all.

१४२३

नहीं लिप्त आकाश हो, बसा सूक्ष्म सब मांह ।
आत्मा तथा न लिप्त हो, बसा देह सब मांह ॥६४॥

۳۲

ظاہر ہیں لطافتیں خلا کی — آئینہ ہیں وسعتیں خلا کی
ہو کر یہ محیطِ دہر جیسے — آغشتہ نہیں کسی بھی شے سے
ہو کر یوں ہی روح زینتِ جسم — بن کر پابند صورت و اسم
بے واسطۂ جہاں ہمیشہ — رہتی ہے کشاں کشاں ہمیشہ

(३२)

सर्व व्यापी नभ जैसे है, सूक्ष्म, नहीं होता है लिप्त;
वैसे ही शरीर में रह कर, आत्मा रहती है निर्लिप्त

Just as the one Sun sheds His light
o'er this whole World, O Bhārata,
So does the One FIELD-KNOWER, MAN,
beam forth upon His total 'Field'.

33 यथा प्रकाशयत्येकः कृत्स्नं लोकमिमं रविः ॥ क्षेत्रं क्षेत्री तथा कृत्स्नं प्रकाशयति भारत ॥ ३३ ॥

दोहा–ज्योंप्रकाशएकैकरै, सबजगसूरजदेव ।
त्योंहीसबकीदेहसें, परमातमकोभेव ॥ ३३ ॥

हे भारत ! जैसे एक सूर्य इस सर्व लोकोंको प्रकाशता है तैसे यह जीव सर्व शरीरको प्रकाशता है ३३॥

۳۳۔ جس طرح سے کل جہان کو نزدیک اور دور
روشن کرتا ہے چھیتر والا یوں ہی
روشن کرتا ہے ایک مہر پر نور
کل چھیتر کو یوں سمجھ تو اے اہل شعور

दोहा–सकल भुवनको सूर्य जिमि दीपित करत सुजान ।
जीव तथा सभ कायको करत प्रकाशित मान ॥ ३३ ॥

(۳۳) 33

ایک سورج ڈالتا ہے جیسے سب پر روشنی
جانِ واحد ڈالتی ہے سب کے اندر روشنی

As the one sun illumineth the whole earth, so the Lord of the Field illumineth the whole Field, O Bhàrata. (34)

۳۳۔ جیسے ایک سورج سرو لوک پر
کرے چاندنا آپنا سر بسر
اسی طور پہ آتما جان تو
سرو دیہوں میں ہو رہا جلوہ گر

33. Just as the sun illuminates,
O Bharat's son, the earth throughout,
So, too, the Knower of the "Field"
Illuminates the total "Field."

३३

इन सारे लोकोंको करता एक प्रकाशित भानु यथैव ।
हे अर्जुन ! परमात्मा सारे लोक प्रकाशित करे सदैव ॥

(३३)

एक सूर्य इस अखिल लोक को, आलोकित करता मतिरास;
वैसे ही इस सकल क्षेत्र को, देता है क्षेत्रज्ञ प्रकाश ।

۳۳

سورج حالانکہ ایک ہی ہے — ہر چیز میں اس کی روشنی ہے
اس سے ایسی ہے بارش نور — ہے بزم حیات جس سے معمور
آرجن اسی طرح روح یکتا — ہے کون و مکاں میں جلوہ فرما
دائم ہر ایک چھیتر میں ہے — قائم ہر ایک چھیتر میں ہے

सकल सौर्य इस जगत्को, ज्यों चमकाता सूर्य ।
त्यों चमकता एकही, आत्मा क्षेत्री सूर्य ॥६५॥

क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोरेवमन्तरं ज्ञानचक्षुषा ॥
भूतप्रकृतिमोक्षं च ये विदुर्यान्ति ते परम् ॥ ३४ ॥

इति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे प्रकृतिपुरुषविवेकयोगो नाम त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥

दोहा—क्षेत्रऔरक्षेत्रज्ञको, भेदलखैंजेकोइ ।
जीवप्रकृतिअरुमोक्षको, जानेमुक्तिसहोइ ॥३४॥

जो कोई ज्ञानदृष्टिकरके क्षेत्र और क्षेत्रज्ञका ऐसे अंतरको और भूतप्रकृतिके मोक्षको जानते हैं वे मेरे को प्राप्त होते हैं ॥ ३४ ॥

इति श्रीमत्सुकुलसीतारामात्मजपंडितरघुनाथप्रसादविरचितायां गीतामृततरंगिण्यां त्रयोदशोऽध्यायप्रवाहः ॥ १३ ॥

34

They who with Wisdom-Eye thus see
what lies 'twixt 'Field' and KNOW'R of 'Field',
And how from creature-Nature SELF
is free,— they reach the Final Goal.

۳۴ جس نے ہے چشمِ معرفت سے دیکھی — تفریق یہ معلوم کی اور علم کی
اور جانی ہے پرکرتی سے چھٹنے کی سبیل — پاتا ہے پرم گتی بھی دنیا میں وہی

काय जीवको उक्त त्रिध भेद ज्ञानसों पाय ।
साध अमानित्वादि गुण, रूप यथार्थ लहाय ॥ ३४ ॥

(۳۵) 34

دیکھ لیتا ہے جو چشمِ دل سے جسم و جاں کا حال
معرفت کی راہ سے پاتا ہے وہ جائے کمال

34. They who with wisdom's eye can part[27]
The "Field" from Him Who knows the "Field,"
Who matter's dissolution see,[28]
They reach unto the Self Supreme.

(३४) भूतों की जो मोक्ष प्रकृति को, अंतर क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ;
ज्ञान-चक्षु से देख जानते, पाते पूर्ण परम गति विज्ञ ।

They who by the eyes of Wisdom perceive this difference between the Field and the Knower of the Field, and the liberation of beings from Matter* they go to the Supreme. 34

۳۴ - جو اس طور پر کھیتر آدمی کو جانے
فرق ان کا بھی گیان درشٹی سے مانے
جسے مایا سے چھوٹنے کا گیان
پرم پد کو پا کر میرے میں سمانے

३४
ज्ञानदृष्टिसे ऐसे जाने देह ब्रह्मको जो पर्याप्त।
फिर भूतोंकी प्रकृति-मोक्षको समझे, उसे ब्रह्म हो प्राप्त॥

देहरूपी इस क्षेत्रको, तथा क्षेत्र संसार।
सम्पूर्ण ही लोकमें, आत्मा रहा पसार ॥६६॥

कारण प्रकृति, भूत अरु, जो उस के हैं कार्य।
उन से मुक्ति पाने का, भेद जो जानें आर्य ॥६७॥

क्षेत्रज्ञ अरु क्षेत्रका, भेद यह भरतश्रेष्ठ!
देख ज्ञानकी आंखसे, पायें ब्रह्म पर श्रेष्ठ ॥६८॥

۳۴
چشمِ تمیز جس کی وا ہے — عقدہ جس پر یہ کھل گیا ہے
کس طرح سے چھیتر میں ہے ظاہر؟ — کیا شے ہے یہ چھیترگیہ آخر؟
ہیں مادہ و صفات کیا چیز؟ — اس قید سے ہے نجات کیا چیز؟
ہوتا ہے وہ رستگار بالخیر — کرتا ہے مقام پاک کی سیر

تیرھوان ادھیاے

چھیتیر - چھیتر گ (جسم و جان کی تعریف)

استفسار منجانب ارجن

پرش اور پرکرتی کی تعریف فرمائین جناب
چھیتیر اور چھیترگ کا بھی حال سمجھائین جناب

کشن بولے چھیتر تن ہی راز دان چھیترگ ہی
علم یہ وہ ہی نہین بہتر ہی اس سے کوئی شی

چھیتر کا چھیترگ کا جو گیان ہی وہ پاک ہی
موکش دیتا ہی اُسے جو صاحب ادراک ہی

اندرون جسم جو جیو آتا ہی آشکار
مین وہی ہون مجھکو ہی حاصل کمال اختیار

رکن اعظم پانچ ہین کہلاتے ہین جو تتو پانچ
آب - آتش - خاک - باد آکاش ان پانچون کو جانچ

قالب خاکی انھین کے فیض سے طیار ہو
ہو نہ جبتک جیو اِسکی زندگی دشوار ہو

قوتین اُنیس ۱۹ جنے مین ان سے بھی ہی واسطہ
انکے باعث سے بدن انسان کا ہو آراستہ

رغبت و نفرت غم و راحت اسکے ہین خواص
زندگی و موت سے بھی ہی تعلق اُسکا خاص

ہی جو ایسا جسم خاکی چھیتر اُسیکا نام ہی
مبتلاے رنج و راحت رہنا اسکا کام ہی

ہی مبرا راز دار چھیتر محسوسات سے
وقتِ غم غصہ نہ ظاہر ہو کسی پر بات سے

عیب پوشی دوسرے کے نقص کی منظور ہو
خانۂ خاطر مین بس پاکیزگی معمور ہو

بے تعلق رہ کے دنیا مین جو کاٹے زندگی
اُسکو پیشِ اہل دین ہوتی نہین شرمندگی

ہو نہ جورو کی طرفداری نہ نورِ چشم کی
اُنکی خاطر غیر پر بھڑکے نہ آتش خشم کی

نیک و بد کو جانکر یکسان بنے انسان فہیم
جو سلیم الطبع ہی بس ہی وہی مردِ کریم

قابل تعظیم جو ہو اُسکی بس تعظیم ہو
سر کے بل با صد ادب بے پیش و پس تعظیم ہو

یا کمالوں کی کرے خدمت عبادت بھی کرے — جو بزرگِ دہر ہوں انکی اطاعت بھی کرے

ذاتِ حق میں محو جو ہے عارفِ مقبول ہے — داستان اُسکی صفت کی زلف آسا طول ہے

گیان کی صورت نرالی ہے نہیں جتی ہے حق — حاصل اس سے ہی ہوا انسان کو خوبی کا سبق

جو حدِ کونین کو گھیرے ہوئے ہے گیان ہے — صورت اسکی پاک ہے کیا جانے جو نادان ہے

ہیں جو اسون کی صفت کے درمیان ہوں جلوہ گر — ہوں جُدا سب سے مگر ہے راز عالم سے خبر

بے غرض بھی ہوں مگر خلقت کا ہوں پروردگار — کام سے ہوں دور لیکن کام بھی ہیں بے شمار

ہے لطافت میں جو میری ذاتِ اقدس کو کمال — دیکھنے سے مجھکو ہے مجبور ہر چشمِ خیال

واحد و موجود ہوں ہیں ساری موجودات میں — کچھ جدائی کا نہیں ہے دخل میری ذات میں

روشنی نے نور پایا مجھ سے وہ ہے مجھ میں نور — باخبر ہر علم سے ہوں جہل کی ظلمت ہے دُور

سب کے سینوں میں ہمیشہ ہوں مقیم و جلوہ گر — واقفِ اسرار ہوں ہر چیز ہے زیرِ نظر

جیو کہتے ہیں جسے وہ خود بخود پیدا ہوا — جب مدد اُسکی ہوئی دل خلق پر شیدا ہوا

جب طبیعت کا ہوا جیو آتما سے ہیل میل — پھر نظر آتے ہیں سارے خلق میں دنیا کے کھیل

جسم سے لیکن جدا رہتا ہے یہ جیو آتما — رنج و غم ظاہر میں گو سہتا ہے یہ جیو آتما

حالتِ روح و بدن سے جو بشر آگاہ ہے — بچ کے وہ آواگون سے عارفِ ذیجاہ ہے

یادِ خالق ہو تصور کے خیالِ پاک سے — یا مدد لے اہلِ دانش قوتِ ادراک سے

جوگ کا ہو یا وسیلہ یا پرانایام سے — نیک افعالی سے یعنی اچھے اچھے کام سے

چار رستے ہیں یہ منزل کی رسائی کیلئے — وہ غنیمت ہیں یہ انسان کی بھلائی کے لیے

پیروی کرتے ہیں بعضے سُنکے اوروں کا کمال — وہ بھی ہیں مسعود ہوگا اُنکا بھی اچھا مآل

دیکھتا ہے سب میں جو پرماتما کے نور کو — بعد مردن بھی نہ چھوڑیگا وہ اس دستور کو

رکھّو جو پرماتما سے دھیان دایم شاد ہو
آتما کو بس نہ سمجھے فاعلِ افعال جو
ہی ہوا چارون طرف ہر شی مین موجود و محیط
پر ہوا ہوتی نہین اشیاے دنیا سے خراب
جیسے سورج سے چمک ہوتی ہی مخلوقات کو
جسم کا جیو آتما کا فرق وہ جانین بشر
وہ مقام پاک پر فرماتے ہین جا کر قیام

زندگی مین خوش تو بعدِ مرگ بھی آزاد ہو
ہی وہی اہل نظر اہل بصیرت نیک خو
چاہیے جیسی ہو جگہ ہر سمت ہی دخلِ بسیط
آتما پر بھی اثر کرتا نہین جسمی عذاب
آتما سے ہی اُجالا یو ہین موجودات کو
ترک خواہش کے طریقے سے بھی ہین جو باخبر
کچھ نہین رہتا ہی پھر آواگون سے انکو کام

بود آشتی پیشه و حق گذار
کند خدمت مرشد خود بجان
بهر قسم دارد تن خویش پاک
بگفتار و کردار و دل در بود
بود تارک الذت او حواس
نه چیند دکان حیل در جهان
ز حالات جسم آگهی خوشتر است
جوانی و پیری او مرگ و حیات
ندارد به فرزند و زن الفتے
نه ماند چو مقصد شود حاصلش
زداید ز دل نقش غیرے مرا
کند مسکن خویش جاهائے پاک
بپرهیزد از صحبت ناکسان
بود پیش نظر دایمش روز و شب
همین است عرفان دگر غفلت است
کنون با تو میگویم آن راز را
گر آغاز و انجام آن شو ترا است
همانست آتش همانست آب

کجی و فریبش نباشد شعار
بجوید رضایش بقدر توان
نباشد اگر آب یا مشت خاک
بر افعال و اعمال ناظر بود
شمارش بود شکر و صبر و سپاس
کند کار خود را نه بیند میان
چگویم که دردے چه مضمر است
مرض هائے دیگر ز چندین جهات
که عاید نگردد به او تلخئے
ز فقدان مطلب نه کاهد دلش
نماید بهر رنگ سیرے مرا
برابر کند خویشتن را بخاک
بداند که عرفان بود جلوه‌دان
که محفوظ ماند ز رنج و تعب
ز وقت اندر است آن فرصت است
که بنماید آن مایه ناز را
ز اوهام و افهام آن شو تر است
بهر ذره تابد همال آفتاب

51

ادھیائے سیزدہم چھترگ جوگ نام

بگفتا که چھتر بدن را بدان
کس از حال بدان خبردار نیست
شناسائے هر دو عرفان بود
کنون با دل جمع بشنو ز من
کسانیکه اندر خرد رفته اند
فلک آتش و آب خاک است و باد
من و عقل و دل و ده حواس
بود مقتضائے بدن چیز چیز
تکلیفائے ز رنج و راحت دگر
ز عرفان سخن میکنم گوش باش
بود عارف آنکس که مغرور نیست
نگردد و داد آزار کس
تحمل چو کوه گرانش بود
بود راحت و رنج یکسان برش

بود چھترگ عارف از دان
بجز من کسے واقف کار نیست
که مقصود صاحبدلان آن بود
سخن میکنم از علم بدن
سخنها در اینجا بسے گفته اند
ز پنج عنصر که ترکیب داد
نگر قدرتے کو ست محکم اساس
تمنا عداوت محبت تمیز
همین است چھتر سخن مختصر
سراپا خرد و عملگی هوش باش
ریا پیشگی باش منظور نیست
نخواهد که بر هم زند کار کس
فراغت ز هر دو جهانش بود
خیالات باطل شود از سرش

بہری ذات او از حق و باطلست
ہمانست چشم و ہمانست گوش
توانا و نور آور و برتر است
ہمان جملگی آمد از کوے او
ہمان وز زمان و مکان آں بود
ہمان آشنائیست و بیگانہ است
محبت کند گر بکس مشکل است
بری از صفات و ہمہ تن صفات
روندہ ہمانست و آیندہ اوست
نماید چو او نازنینی کسند
قریب از قریب و بعید از بعید
نماید چو تقسیم و تقسیم نیست
فنا و بقا و جہان روے است
مہ و مہر لیکن ز نور است ازو
ہمانست عارف ہمان معرفت
بود مشکل خاص آغاز دل
ز فالیہ عرفان ز دانستنی
بجز فہم رسد گر پرستندہ ام

ولیکن بہر رنگ او شامل است
ہمانست مستی ہمانست ہوش
محیط جہان و جہان پور است
شود باز گشت ہمہ سوے او
حواس و قیاس و گمان آں بود
ہمان مسجد و دیر و میخانہ است
کہ مستغنی است و بخود مایل است
ہمان غیر ذات و ہمان عین ذات
نشینندہ جنبندہ پایندہ اوست
اگر عقل باریک بینی کند
ہمان می تراود ز گفت و شنید
ہر جا است پیدا و معلوم نیست
ہمان جلوہ پیدا ز ہر شی است
بود ہر چہ تاریک و دست ازو
باو میرسد اہل و اہل عاقبت
بود ہم ہمہ عرش ازین از دل
بگفتیم و ز اندیشہ کردم مخفی
رسد تا بجائے کہ من بندہ ام

بجز پیچ کہ بود کسے در جہاں
ازاں بندہ او را بالا و ہر است
کسے کو بہ پرکرت پرکہ شناخت
بود پرکہ فرمان روائے بدن
بود جلوہ او ہر مغز و پوست
شناسندہ بینندہ دانندہ اوست
ہمانست گیرندہ ہر مزہ
بمون از بدن ہم درون بدن
شناسا او شو کہ روشن بس است
کمن حالیے در آب و گل است
کسے در ہستی ہستی و خود گذاشت
کسے بہر او جنگ خیرات کرد
بمنزل گہش میرود ہر رہے
زمین و مکان باہم آمیختند
بہر کس نگاہ دانستہ ہا است
ہمہ رفتنی او بجائے خود است
بیک رنگیش دیدہ را وا کند
جو انجا رسید رسیدہ بکام

نقابست پرکرت بہ روے آں
چو بر خیزد ایں پردہ او برتر است
ز بند گران تہمت پنج رہا ست
ازان ہست محکم بناے بدن
تماشائی خود در ایں پردہ اوست
تو گوئی ہمان آفرینندہ است
ہمانست از پاے تا سر مزہ
ازو اختلاف نشیمن بدن
غرض او در ینجا عجائب کس است
کسے حلقہ زن بر بساطے لب است
کسش جلوہ در بت پرستی است
کسے گوش خود بر حکایات کرد
پرستندہ او نمیرود ہمے
غبار یقین با بر آمیختند
ہمان جلوہ پیدا ز کون و مکانست
کہ اینہا ہمہ از براے خود است
بہر رنگ او را تماشا کنند
کہ او جلوہ گر ہست در ہر کدام

دریں صورت آزار خود ہم مکن
تعلق بہ پرکرت دارد عمل
ہمہ دیدہ ہیں یکے در ہمہ
قدیم است فانی نخواہد شدن
چو آکاس ہرجاست لیکن نجست
چو خورشید کو نور ہر منزلست
کسے با حقیقت شود آشنا
منہ دل بدیں خود پسندی خلق
کہ پاہای چرا پا گِل ماندہ اند
اگر یافتی کار خود ساختی

نکردی اگر نیک بد ہم مکن
بود فارغ آں پرکھ از ہر عمل
نگہ از تا دل فگن بر ہمہ
جز او زندگانی نخواہد شدن
کسے کو چناں دید یابد بقاست
بداں گر نہ او شمع ایں محفل است
کہ بیند پرکرت او را جدا
برآں مع جنب پائے بندی خلق
چرا دور از آں کام دل ماندہ اند
و گر نہ عبث عمر در باختی

کسی جانب سے آیا شیر ناگاہ — دکھائی شکل قہر اسکو سر راہ
کہا اُس نے مرا حصہ کا مقرر — کہ تجھ ایسی ملی مجھکو غذا اتم
کہا مجرم نہین ای شیر نر مین — ترے احوال سے ہون بیخبر مین
تجھے گر ہو خیالِ جنم ماضی — بیان کر مجھسے حال جنم ماضی
کہا اُس جنم مین مین برھمن تھا — زبون و خوار و اہل مکر و فن تھا
تلاشِ زر مین پھرتا مارا مارا — کسی جا مر گیا جا کر قضا را
ہوا جب حشر مین انصاف میرا — ہوا احوال ظاہر صاف میرا
ہوا دنیا مین آ کر شیر نر مین — کہ بد کردار ہون اور فتنہ گر مین
یہ کہکر زن کو فوراً کھا گیا شیر — جو خالی پیٹ تھا اُسکو کیا سیر
مری زن جب ہوئی چنڈال پھر وہ — جہان مین آئی بد افعال پھر وہ
غرض یون ہی بہت سے جنم پائے — بہت سے رنج و غم دلپر اُٹھائے
کسی دن نربدا وہ جا کے پہونچی — خوشی سے لوٹے مطالب پاکے پہونچی
برھمن اک تھا اُسجا جلوہ افروز — وہ گیتا پاٹھ کرتا تھا شب و روز
اُسے جو تیرھوان ادھیاے تھا یاد — پڑھا کرتا تھا ہر دم با دل شاد
وہ ٹھہری اُس جگہ آرام پا کر — سُنا ادھیاے گیتا دل لگا کر
یہ سُنکر اُسنے چھوڑا قالب خاک — چلی بیکنٹھ کو با خاطر پاک
دم رخصت کہا یہ کلمۂ پند — برھمن تو ہی دنیا مین خردمند
رہائی شیر کو بھی دے نکو ذات — کیا تھا قتل جس نے مجھکو ہیہات
کراب امداد ایسی میرے بھائی — کر اس قالب سے وہ پائے رہائی

بتایا جو برھمن نے کیا جلد — ثواب ادھیاے گیتا کا دیا جلد
تو چھوڑا شیر نے اپنا بدن صاف — ہوا بیکنٹھ مین جیسا وہ نگل صاف

تیرھویں ادھیائے کا خلاصہ

۱۔ گیان کے متعلق ارجن کا سوال ۔ پہلے چھ ادھیاؤں میں من کے شُدھ کرنے کے واسطے نشکام کرم یگیہ اور دھیان کا بیان ہوا ۔ اور دوسرے چھ میں یکتائی کا خیال پیدا کرنے کے واسطے سرو آتم بھاؤ سے بھگوان کی بھگتی کا ۔ اخیر کے چھ ادھیاؤں میں کوشش کا ساکشات سادھن گیان بتایا گیا ہے ۔ اسی کے متعلق ارجن بھگوان سے چھ باتیں پوچھتا ہے ۔ چھیتر چھیتر گیہ ۔ گیان گیہ ۔ اور پرش پرکرتی ۔ بھگوان اس طرح جواب دیتے ہیں۔

۲۔ چھیتر چھیتر گیہ ۔ چھیتر کے لغوی معنے کھیت کے ہیں ۔ اور چھیتر گیہ کھیت کے جاننے والے کو کہتے ہیں۔

(۱)۔ اصطلاح میں انسان کے متعقل اور سوکشم شریر کا نام چھیتر ہے ۔ اس کی رچنا برہمانڈ کے طور پر ہوئی ہے ۔ اس واسطے اویکت ۔ بُدھی ۔ اہنکار ۔ من پانچ گیان اندریہ ۔ پانچ کرم اندریہ ۔ پانچ تنماتراؤں اور پانچ مہا بھوتوں سے مل کر بنا ہے ۔ اس میں راگ ۔ دویش ۔ سکھ دکھ ۔ جسمانی نفسانی اور برائی تبدیلیاں ہوتی رہتی ہیں +

(ب) چھیتر گیہ یعنی شریر کا عالم جیتن ہے ۔ جو شدھ گیان سروپ ہونے کی وجہ سے ہر ایک چھیتر میں بھگوان خود ہیں ۔ یعنی ایک سرودیاپی آتما تمام جسموں کو منور کر رہا ہے +

۳۔ گیان اور گیہ ۔ گیان علم اشراق ہے ۔ اور گیہ ذات احد یعنی برہم +

(۱)۔ چھیتر اور چھیتر گیہ کے گیان کو گیان کہتے ہیں ۔ اس گیان کے حصول کے چار طریق ہیں ۔ اوّل اخلاقی فضائل پیدا کرنا ۔ مثلاً دھوکا نہ دینا وغیرہ ۔ دوسرے بیراگ کا ہونا ۔ مثلاً لذاتِ حواس میں خواہش نہ ہونی وغیرہ ۔ تیسرے بھگوان کی بلا شرکت غیرے بھگتی ۔ اور چوتھے عرفان کا ذوق اور حقیقت کا اکتشاف

(ب) گیہ برہم کا نام ہے ۔ جس کا پد گیان سے ملتا ہے ۔ برہم گیان روپ ہے بے اوّل و آخر ہے ۔ سرودیاپی ہے وغیرہ وغیرہ +

۴۔ پرکرتی اور پرش ۔ پرکرتی مادّہ ہے ۔ اور پرش آرواح +

(۱) پرکرتی یا مایا انادی ہے ۔ گُن والی ہے ۔ متبدّل ہے ۔ فعل و فاعل و مفعول تمام کریا پرکرتی میں ہے +

(ب) پرش انادی گیان سروپ اور اکرتا ہے ۔ لیکن انادی اگیان کی وجہ سے پرکرتی میں آپ قائم ہو کر پرکرتی کے گنوں کے مزے لیتا ہے ۔ اس وجہ سے کرم پھل بھوگنے کے واسطے بار بار پیدا ہوتا ہے اور مرتا ہے ۔ یہ اگیان کی حالت ہے +

(ج) اگیان دور ہونے پر پرش کا اصلی سروپ شدھ گیان ہے ۔ اسی کو پرماتما یا پرشوتم کہا جاتا ہے +

(د)۔ جو شخص پرکرتی اور پرش کا راز جانتا ہے ۔ یعنی یہ کہ پرش گیان سروپ ہونے کی وجہ سے اکرتا ہے ۔ اور کریا تمام پرکرتی میں ہوتی ہے ۔ وہ کرم کرتا ہوا بھی کچھ نہیں کرتا ۔ بلکہ مکت یعنی آواگون سے چھوٹا ہوا ہے ۔ بس یہ تمیز برہم پہنچانی چاہیئے +

۵۔ آتم گیان ۔ اس کی سبیلیں مندرجہ ذیل ہیں :-

(۱) بعض آتما کو دھیان سے ۔ بعض گیان سے ۔ بعض یوگ ابھیاس سے دیکھتے ہیں ۔ جنہیں

یہ اُنہیں معلوم نہیں ہیں۔ وہ اوروں سے سُن سُن کر اُپاسنا کرتے ہیں۔ اور سنسار ساگر سے تر جاتے ہیں ٭

(ب) قائم متحرک کچھ اس جہاں میں پیدا ہوتا ہے۔ وہ چھیتر چھیترگیہ کے میل سے پیدا ہوتا ہے ٭

(ج) چونکہ ہر ایک چیز نقشۂ خواب کی طرح جھوٹی ہے۔ اور آتما خواب بین ہے۔ اس واسطے جو شخص ہر شے میں ذات حق کا جلوہ یکساں دیکھتے ہیں۔ وہی دیکھنے والے کہلاتے ہیں۔ دیکھنے کا طریق یہ ہے۔ کہ میں اکرتا گیان سروپ آتما ہوں۔ اور کریا تمام پرکرتی میں ہے۔ ایک ذات احد میں تمام کثرت کے جلوے عیاں ہوتے ہیں۔ اور وہی سب میں ساری ہے ٭

(د)۔ اس ذات احد یعنی پرماتما میں نہ کوئی تبدیلی ہے۔ نہ اعمال کی لوث ہے۔ یہ آکاش کی طرح کسی چیز سے ملوث نہیں ہوتا۔ اور مہر روشن کی طرح سب اجسام کو پرنور کرتا ہے ٭

(ہ) جس نے گیان کی آنکھوں سے چھیتر اور چھیترگیہ کا فرق دیکھ لیا۔ اور پرکرتی سے چھٹنے کی سبیل معلوم کر لی وہ پرم گتی پاتا ہے ٭

تصویر نمبر ۱۳ غیب و شہود

روایت چلی آئی ہے کہ آکاش سے گنگا شوجی کے مستک پر اُتری پھر اُن کے کاندھے اور جسم پر سے گزرتی ہوئی سمندر میں داخل ہوئی اور شوجی اپنے کمر کے گرد باگمبر لپیٹے رہتے ہیں اور اپنے ہاتھ میں ایک ترسُول رکھتے ہیں۔ تصویر نمبر ۱۳ میں ایسی صُورت کو مُلاحظہ کیجئے۔ دراصل یہ علمِ عرفان کا سراپا ہے جو ہندی عارفوں نے عوام کی واقفیت کی غرض سے باندھا ہے۔ ناظرین "فلسفہ بھگوت گیتا پر ایک نظر" میں اسکی تشریح پر بخُوبی غور کر سکتے ہیں۔ اِس موقع پر اعادہ کی ضرورت نہیں۔ اس اُصول کی اہمیت نے ہندوستان میں شیومت کا نفاذ کیا ہے۔

اِس تصویر میں ہندوستان کا نقشہ بھی موجود ہے۔ دیکھئے کوہ ہمالیہ کی چوٹیوں پر جب آسمان سے بارش نازل ہوتی ہے تو اس کا پانی برف کی صُورت میں مُنجمد ہو جاتا ہے، اور وہاں سے گنگاجی اور دیگر ندیاں برآمد ہو کر کچھ تو پنجاب کے راستہ سے مغربی بحر میں داخل ہوتی ہیں اور کچھ براہِ بنگال گزر کر مشرقی بحر میں اپنی ہستی معدُوم کر دیتی ہیں۔ نیز وسطِ ہند میں کوہ بندھیاچل ایک ٹیکے کی طرح واقع ہے یہ وہ ملک ہے جہاں علوم و فنون نے تاریخی زمانہ کی ابتدا میں نشو و نُما پائی

اور جمادات نباتات اور حیوانات نے اپنے خزانے نوعِ انسان کی بہبودی کیلئے کھولدیئے اِن واقعات کی روشنی میں مذکورۂ بالا روایت کے معنی پر غور کرنا لُطف سے خالی نہیں ہے۔ عاقلاں را اشارہ کافیست۔ اس غیبی تصویر سے علمی تثلیث کا راز آشکارا ہوتا ہے

تصویر نمبر ۱۳ — غیب و شہود

جہل کے پردے میں پوشیدہ ہے وہ نور دنکا نور
قلب میں علم سہ گانہ اس سے پاتا ہے ظہور

ॐ

श्रीमद्भगवद्गीता

गुणत्रयविभागयोग-अध्याय ॥१४॥

पृष्ठ १४४६ से १५१८ तक

वंशीविभूषितकरान्नवनीरदाभात्पीताम्बरादरुणबिम्बफलाधरोष्ठात् ।
पूर्णेन्दुसुन्दरमुखादरविन्दनेत्रात्कृष्णात्परं किमपि तत्त्वमहं न जाने ॥

چودھواں اَدھیائے

گُن ترے بھاگ یوگ یا تقسیم خواص ثلٰثہ

تیرھویں اَدھیائے میں بتایا گیا ہے۔ کہ آتما گیان سروپ ہونیکی وجہ سے اکرتا ہے۔ اور کریا جتنی ہے۔ سب پرکرتی میں ہے۔ پرکرتی تین گُن یعنی ستو۔ رج اور تم والی ہے۔ کائنات کی رچنا میں ستو سے قوائے عقلیہ یعنی بدھی ہیں۔ گیان اندریوں وغیرہ کا ظہور ہوتا ہے رج سے قوائے قدرت مثلاً پران۔ روشنی۔ حرارت۔ برق۔ وغیرہ کام کرنے والی قوتوں کا تم سے ساکن چیزوں مثلاً پتھر مٹی۔ درختوں وغیرہ کا۔ غرض ہر طرف یہ گُن کام کر رہے ہیں۔ جتنا کام ہے سب انہیں گنوں میں ہو رہا ہے۔ اس اَدھیائے میں بھگوان نے انسان کے تعلق سے۔ اِن گُنوں کی تشریح کی ہے۔ کہ جو حالتیں اس پر گزرتی ہیں۔ سب گنوں کا ہی ظہور ہیں یعنی کام سب پرکرتی ہی کرتی ہے۔ مگر اگیان سے آدمی اپنے آپ کو کرتا مانتا ہے۔ جو شخص گنوں کی حد سے گزر جاتا ہے۔ وہ جیون مکت ہے۔ پہلے شوق دلانے کے واسطے اِس علم خفی کی تعریف کرتے ہیں :-

परं भूयः प्रवक्ष्यामि ज्ञानानां ज्ञान-मुत्तमम् ॥ यज्ज्ञात्वा मुनयः सर्वे परां सिद्धिमितो गताः ॥ १ ॥

दोहा–परमजुउत्तमज्ञानसो, तोकेदेवबताइ।
जाहिजानिकैमुनिसबे, रहैंमुक्तियोंपाइ ॥ १ ॥

श्रीकृष्णभगवान् अर्जुनसे कहते हैं कि, सर्वज्ञानोंमें उत्तम प्रसिद्ध भया हुआ ज्ञान फिर कहताहौं जिसको जानिके सर्व मुनिजन यहांसे श्रेष्ठ सिद्धिको याने परम पदको जातेभये ॥ १ ॥

۱۔ سُن اور بھی گیان میں ہوں تجھ سے کہتا — وہ گیان کہ گیانوں میں ہے سب سے اعلیٰ
ارباب حق نے جس سے واقف ہو کر — تحصیل کمال کا کیا ہے درجہ

दोहा–कहौं गुणनके ज्ञानकी जो उत्तम, मन धार।
पाय जिसै मुनि सभ गए भवसागरसों पार ॥ १ ॥

I SHALL once more the GNOSIS tell, 1
of every Science Goal Supreme,
Which having *known*, the Sages all
passed 'hence', and reached the Perfect State.

फिर बतलाता हूँ मैं तुझको सब ज्ञानोंसे उत्तम ज्ञान।
परम सिद्धि पा गये लोकमें सारे मुनि-जन इसको जान ॥

1. Yet once again I shall proclaim
The highest wisdom and the best,[1]
Which having gained, all sages have
The perfect State beyond attained.[2]

सब ज्ञानों में परमोत्तम अब, कहता हूँ तुम से वह ज्ञान;
जिसे जान कर परम सिद्धि मुनि, पाए हैं पाण्डव-संतान!

(۱) میں وہ رازِ سرمدی پھر تجھ پہ کرتا ہوں عیاں
عارفوں نے جس سے پایا ہے فرازِ لامکاں

۱- تجھے کہتا پھر ہیں پرم گیان ہوں
اوتم سے اوتم گیان کا بیان ہوں
جسے جان کر سب رشی اور منی
دہرم پد کو پا سکھ رہے مان ہوں

I will again proclaim that Supreme Wisdom, of all wisdom the best, which having known, all the Sages* have gone hence to the Supreme Perfection. (1)

۱

بھگوان ہیں اب شکر دہن یوں
وا کرتے ہیں درِ سخن یوں
سرتاج علومِ علم جو ہے
معراج علومِ علم جو ہے
جس کے رازوں سے ہوکے واقف
ہوتے ہیں بقا نصیب عارف
کرتا ہوں پھر اعادہ اس کا
ہو جس سے اثر زیادہ اس کا

नये सिरेसे फिर तुम्हें, कहूं मैं उत्तम ज्ञान ।
विद्या सभीमें श्रेष्ठ जो, प्रेमसे करूं बखान ॥ १ ॥
जान जिसे मुनिवर सभी, यहीं से हो गये सिद्ध ।
सकल विविध पा सिद्धियां, हो चुके परम प्रसिद्ध॥२॥

१४५२

१४/२

इदं ज्ञानमुपाश्रित्य मम साधर्म्यमागताः ॥ सर्गेऽपि नोपजायंते प्रलये न व्यथंति च ॥ २ ॥

दोहा–याहीज्ञानहिसेइके, मेरोलह्योस्वरूप ।
प्रलयविथातिनकोनहीं, परेनतेभवकूप ॥ २ ॥

जो कहते हैं इस ज्ञानको प्राप्तहोके मेरी सधर्मतोको याने मेरे समानरूप वैभवको वे मुनिजन प्राप्त होते भये वे उत्पत्तिकालमें न उत्पन्न होतेहैं और प्रलयमें नें दुःखी होते हैं ॥ २ ॥

Once in this GNOSIS refuged safe, 2
Their Lives throughout attuned to Mine,
They are not 'born' at Æon's Dawn
nor by World's Doom are They disturbed.

۲۔ یہ گیان ہوا ہے آسرا جن کا مدام — اوصاف ہوئے ہیں اُنکے میرے تمام
پیدا نہیں ہوتے ہیں وہ خلقت کے وقت — تکلیف کا ہوتا نہیں پرلے میں نام

कहीं ज्ञान सो पाय जिस परमधाममें जाय ।
सर्ग समय ना जन्मते प्रलयख़ेद ना पाय ॥ २ ॥

(۲)

جن کی قسمت میں ہی اُسکے فیض سے میرا وصال
گردشِ بود و فنا میں اُنکا آنا ہے مُحال

2. Who refuged in this wisdom have
Attained to unity with Me ;[3]
They are not born when worlds are born,
Nor suffer[4] when they are destroyed.[5]

२

इसका आश्रय लेकर मुझमें एक-रूपता पाये लोग ।
सृष्टिकालमें जन्म न पाते तथा प्रलयमें दुखके भोग ॥

(२)

जिस के आश्रय से वे मुनिवर, पाते मेरा रूप अटूट;
सृष्टि काल में और प्रलय में, जन्म-मरण से जाते छूट।

۲- اسی گیان کا پا کے پھر آسرا
میرے سم دھرم بھاؤ حاصل کیا
شروع میں وہ پیدا تو ہوتے نہیں
پرلے میں اُنہوں موت کو جیت لیا

Having taken refuge in this Wisdom and being assimilated to My own nature, they are not reborn even in the emanation of a universe, nor are disquieted in the dissolution. (2)

۲

اس علم کو رہنما بنا کر
اس سے ہر طرح فیض پاکر
داخل مُجھ میں جو ہو چکے ہیں
واصل مُجھ میں جو ہو چکے ہیں
پھنستے نہیں پھر طلسم میں وہ
آتے نہیں قیدِ جسم میں وہ
محفوظ ہیں موت کی بلا سے
آزاد ہیں خدشۂ فنا سے

सुसमीपसे आश्रय, इसी ज्ञानका ले।
मेरे गुण सादृश्यको, आ प्राप्त हुए वे॥ ३॥
आने सृष्टिकालपर, भी न जन्मते वे।
कष्ट भोगते कभी न, प्रलय कालमें भी वे॥ ४॥

२४५४८

१४
३

मम योनिर्महद्ब्रह्म तस्मिन्गर्भं दधाम्यहम् ॥ संभवः सर्वभूतानां ततो भवति भारत ॥ ३ ॥

दोहा--ब्रह्मप्रकृतिमोंजोतिहै, तामैं गर्भहिराखि ।
उपजावतसबसृष्टिहौं, अर्जुनविचअभिलाखि३॥

हे भारत ! मम[2] महद्ब्रह्म याने मेरी प्रकृति[3] सर्वभूतोंकी योनि[4] याने उत्पत्तिस्थान है मैं[5] उस प्रकृतिमें[6] जीवरूप गर्भको धारण करता हौं तब उससे[10] सर्वभूतोंकी उत्पत्ति[11] होती हैं[12] ॥ ३ ॥

۳- ہے بطن میرا بہت بڑا پرکرتی	قائم کرتا ہوں گربھ اس میں ہی
اے بھارتیوں میں افضل ارجن اس سے	پیدائش ہوتی ہے ساری ان چیزوں کی

दोहा--लोकयोनिप्रकृति संग जीवसंयोग कराउं ।
तब सम भूतनको सखे यथाकाल जन्माउं ॥ ३ ॥

3

Vast Brahm* to ME is but a Womb
in which I shed the Cosmic Seed.
The life of every thing create
arises thence, O Bhārata.

(۳)
اپنی قدرت کے شکم کو بارور کرتا ہوں جب
ساری موجودات کی بالیدگی ہوتی ہے تب

3. Great Brahm [6] is but a womb for Me
In which I do the seed disperse;

From thence, O Bharat's son, proceeds
The birth of all created things.

३
प्रकृति योनि है मेरी इसमें करता हूँ मैं गर्भाधान ।
फिर होता है इससे सारे भूतोंका संभव, यह जान ॥

(३)

मेरी महद्-ब्रह्म योनि है; उस में निज संकल्प-स्वरूप;
बीज डाल कर सब भूतों को, प्रकटाता हूँ पाण्डव-भूप !

۳- یہ مایا جگت سارا پیدا کرے
میرے سی گربھ اپنے اندر بھرے
اسی واسطے پیارے ارجن سنو
سکل پرانی اس سے سدا اوترے

My womb is the great ETERNAL; in that I place the germ: thence cometh the birth of all beings, O Bhârata. (3)

۳

ہے طرفہ تر اہتمام قدرت　　ہے بطن صفت نظام قدرت
ابرِ نیساں ہوں میں صدف یہ　　حاصل اسے مجھ سے ہے شرف یہ
آئینہ ہیں میرے جوہر اسمیں　　پیدا کرتا ہوں گوہر اسمیں
خلقت اسی طرح ہے یہ ساری　　اسمیں ہے مری ہی سحر کاری

बडी धारका जगत्‌की, महद् ब्रह्म कही जो ।
आदि कारण प्रकृति, गर्भस्थान मेरी सो ॥ ५ ॥
धारण मैं उसमें करूं, जगत् सकलका बीज ।
सभी पदारथ प्राणि अरु, हों उत्पन्न सबीज ॥६॥

१५/४

सर्वयोनिषु कौंतेय मूर्त्तयः संभवंति याः ॥ तासां ब्रह्म महद्योनिरहं बीजप्रदः पिता ॥ ४ ॥

दोहा—जोजोमूरतिहोतिहैं, सबयोनिनमेंआइ ।
तिनकोहौंहींबीजहौं, मैंहिपिताअरुमाइ ॥ ४ ॥

हे कुंतीपुत्र ! देवमनुष्यादि सर्व योनिनमें जो देही उत्पन्न होते हैं उन सबकी महत् ब्रह्म याने प्रकृति कारण है, मैं चेतनरूप बीजका देनेवाला पिता हूं ॥ ४ ॥

4

جن جن بطنوں سے سُن تو اے نیک خصال
پیدا ہوتی یہاں ہیں جو جو اشکال
اُن سب کا بطن جہاں پرکرتی کو
اور تخم انداز باپ کر مجھ کو خیال

दोहा—जो जो तनु जन्मत सखे प्रकृती तिन हि निदान ।
तिन कायनसों जीवकौ हौं जोडौं इह मान ॥ ४ ॥

And in all wombs, O Kuntî's son, 4
whatever bodies are conceived,
This B r a h m a V â s t their true Womb is,
their Seed-bestowing FATHER, I.

(४)

جتنی اشیاء ہر طرح کی تجھکو آتی ہیں نظر
قدرت اُنکی ماں ہے اور میں باپ ہوں اے نامور

4. And in whatever wombs are born
These varied forms,[7] O Kunti's son,
Great Brahm is verily their womb,
And their seed-giving Father I.

४

सकल योनियोंमें होती हैं विविध मूर्तियाँ, हे कौन्तेय ! ।
उन सबकी यह प्रकृति योनि है, मैं हूँ पिता बीजप्रद-ध्येय ॥

(४)

सकल योनियों में से जितनी, हों उत्पन्न मूर्तियाँ पार्थ ! ;
महद् ब्रह्म है योनि सभी की, पिता तुल्य मैं हूँ निस्स्वार्थ ।

۴- سکل جونیوں میں جو پیدا ہو مورت
عجائب غرائب بنے جو کہ صورت

یہ مایا تو بن گئی ہے ماتا سنتھانی
میں ہوں بیج داتا بنا شبھ مہورت

सर्वयोनिषु कौन्तेय मूर्तयः संभवन्ति याः ।
तासां ब्रह्म महद्योनिरहं बीजप्रदः पिता ॥ ४ ॥

In whatsoever wombs mortals are produced, O Kaunteya, the great Eternal is their womb, I their generating father. (4)

۴

مخلوق جو قسم کے ہیں
قیدی زندان جسم کے ہیں
چاہے جیسے وجود پائیں
جس راہ سے بھی جہاں میں آئیں
میری قدرت سے ہیں یہ پیدا
ہے مخرج دہر بطن اس کا
پڑتا اس میں ہے تخم میرا
ہوں، کونتیے! میں باپ سب کا

तमी मूर्तियां बनें सब, हे भरतसन्तान ।
हे कुन्तिसुत वीरवर, अर्जुन प्रिय बलवान ॥ ७ ॥
जो आकृतियां रच रहीं, विविध शरीरी मात् ।
सभी जन्ममें प्रजाकी, सबकी सांझी मात् ॥ ८ ॥
वही महद्ब्रह्म प्रकृति, अरु सांझा पिता मैं ।
डालनेवाला सभीके, बीजको उसमें मैं ॥ ९ ॥

सत्त्वं रजस्तम इति गुणाः प्रकृतिसं-
भवाः ॥ निबध्नंति महाबाहो देहे
देहिनमव्ययम् ॥ ५ ॥

दोहा–सतरजतमएगुणभये, मायाहीतेंमानि ।
देहमाँझयाजीवको, एईबाधतआनि ॥ ५॥

हे महाबाहो ! सत्त्वगुण, रजोगुण और तमोगुण ये प्रकृतिसे उत्पन्न गुण इस देहमें अविनाशी जीवको बंधन करते हैं ॥ ५ ॥

۵۔ تم اور رج ستوگن ہیں پرکرتی کے پیدا ہوتے یہ سب ہیں پرکرتی سے
ہے جسم میں آتما جو بے تبدیلی اس کو یہ باندھ لیتے ہیں اے پیارے

दोहा–सत्त्व तथा रज तम सखे प्रकृतीके गुण तीन ।
वपुमधि बैठे जीवको बांधत हैं कर दीन ॥ ५ ॥

5

¶ *Sattva, Rajas, Tamas,**—such are
the Moods which Nature e'er displays.
Within the body they bind fast
the changeless SELF enshrined therein.

(۵)

ہیں سہ گانہ علم و شوق و جہل کی خاصیّتیں
روحِ ناجی کو جو کرتی ہیں مقیّد جسم میں

¶ 5. *Sattva* and *Rajas, tamas* too
—The *guṇas* three of Matter born,—
Within the body these bind fast,
The Deathless Self Who dwells within.

५

पैदा हुए प्रकृतिसे ये सब सत, रज, तम, गुण पाण्डुकुमार ! ।
ये देहीको इस शरीरमें बाँधे जो है विना विकार ॥

(५)

प्रकृति जनित सत्व, रज, तम गुण, हो शरीर में प्रादुर्भूत;
निर्विकार जीव को बाँधें, हे विशाल-भुज-पाण्डव-पूत !

۵ - جسم میں یہ مایا کے گن تین تین
ست - رج - و تم تینوں بالکل یہین
یہ جیو آتما کو تو بندھن میں ڈالیں
کہیں جیووں کو آپنے یہ اوچین

Harmony,* Motion, Inertia, such are the qualities, † Matter ‡-born; they bind fast in the body, O great-armed one, the indestructible dweller in the body. (5)

۵

ست، رج اور تم جو تین گن ہیں
اِک ان میں سکون ہے ایک حرکت
اس قالب میں مقیم ہے جو
تینوں ہی گن اس کے ہیں گلوگیر

قدرت سے بہم جو تین گن ہیں
ہے ایک جمود و جہل و غفلت
ساکن اس کا قدیم ہے جو
رکھتے ہیں اسے یہ پا بہ زنجیر

तब होते उत्पन्न हैं, प्रकृतिमें गुण तीन ।
उत्तम सत्त्व अरु मध्य रज, तम निकृष्ट अरु हीन॥१०
इस अविनाशी आत्मको, बांधें देहमें गुण ।
पकड जकडकर त्रय यही, महाबाहो अर्जुन ॥ ११ ॥

२४६०

तत्र सत्त्वं निर्मलत्वात्प्रकाशक-
मनामयम् ॥ सुखसंगेन बध्नाति
ज्ञानसंगेन चाऽनघ ॥ ६ ॥

दोहा--निर्मलऔरप्रकाशकरि,शतगुणशांतिस्वभाय।
ज्ञानसंगसुखसंगसों, बांधतजीवहि आय ॥६॥

हे निष्पाप ! उन गुणोंमें सत्त्वगुण निर्मलतासे प्रका-
शक याने शुभाशुभ कर्मोंका दिखानेवाला रोगरहित है

इसीसे यह सुखकी आसक्तिसे और ज्ञानके संगे करके
बांधता है याने ज्ञानसुखसे शुभकर्म शुभकर्मसे स्वर्गादि
फिर उत्तम कुलमें जन्म फिर ज्ञानसुख ऐसे बांधताहै६॥

۶۔ اِن میں سے صفا ہے ستوگن میں اور نور باعث ہے یہی کہ ہے برائی سے دور
سُکھ سے اور گیان کے تعلق سے یہ انسان کو باندھتا ہے یہ ہے دستور

दोहा—सत्त्व विमलतावश करै प्रकाश अरोगनिदान ।
ज्ञानसंग सुखसंगसों बांधत जीवहिं मान ॥ ६ ॥

Of these, *Sattva*, devoid of stain, 6
illuminative, healthy Mood,
Binds Man through love of happiness
and love of knowledge, Sinless One.

(۶)

دل کے آئینہ میں جب نورِ ازل ہو جلوہ گر
دانش و تسکیں کی صُورت صاف آتی ہے نظر

६

निर्मल है इसलिये प्रकाशक निरुपद्रवी सत्त्वगुण आप ।
ज्ञान और सुखसे देहीको बद्ध करे सुन हे निष्पाप ! ॥

6. Of these *sattva* devoid of stain,
And therefore full of light and health,
Binds fast with love of happiness,
And love of wisdom, sinless one.

۶- یہ ست گن تو نرمل و پرکاش وان
سکل دُکھ مٹا کرتا سُکھ کا سمان
دکھا کر یہ سُکھ گیان کی موج کو
بندہن میں ڈالے یہ ستگن مہان

(६)

उन में निर्मल और प्रकाशक, रोग रहित सत्व-गुण-अङ्ग;
बाँधे इस शरीर को अर्जुन ! ज्ञान और सौख्य के सङ्ग ।

Of these Harmony from its stainlessness, luminous and healthy, bindeth by the attachment to bliss and the attachment to wisdom, O sinless one. (6)

۶

اے گردِ گنہ سے پاک ارجن ممتاز ان سب میں ہے ستوگن
حد درجہ لطیف و پاک ہے یہ ہر طرح سے تابناک ہے یہ
بندش میں ہے روح اس صفت سے یعنی علم اور معرفت سے
ہوتی ہے یہ اس پہ سحر انداز کرتی ہے اسیرِ دامِ اعجاز

उनमेंसे जो सत्त्वगुण, बान्धे सुखसे वह ।
अरु ज्ञानसे सर्वदा, प्रबल आसक्ति वह ॥ १२ ॥
मैल नहीं न रोग है, है उत्तम सुप्रकाश ।
पाप रहित हे ! सत्त्व दे, सुख अरु ज्ञानप्रकाश ॥१३॥

रजो रागात्मकं विद्धि तृष्णासंगसमुद्भवम् ॥ तन्निबध्नाति कौंतेय कर्मसंगेन देहिनम् ॥ ७ ॥

दोहा—रजगुणरागस्वरूपहै, तृष्णासँगकोहेतु ।
कर्मसंगकरिजीवको, ऐसेबंधनदेतु ॥ ७ ॥

हे कुंतीपुत्र ! तृष्णा और स्त्री धनादिनमें आसक्तिका करनेवाला रजोगुण विषयादिकमें प्रीति उपजानेवाला जानो वह जीवँको कर्म संगसे बांधता है जैसे प्रीत्यात्मक कर्मसे उन कर्मसंगिनने जन्म फिर कर्म फिर जन्म ऐसे ॥ ७ ॥

Rajas, know thou, consists of stain,
from union with desire brought forth.
Through love of action, Pṛthā's son,
it binds the Man enshrined in form. 7

۷۔ خواہش ہے اہیت رجوگن کی تو جان
مخلوق تعلق و طمع سے اسے مان
انسان کو کام کے علاقے سے یہ
اے ارجن باندھتا ہے یہ ہے پہچان

तृष्णा प्रेमऽऽसक्तिको हेतु रजोगुण जान ।
क्रियासंगसो बांधतो जीवहिं परम सुजान ॥ ७ ॥

(۷)

اے دلاور یاد رکھ حرص و ہوائے دلربا
ڈالتی ہیں علم کی گردن میں ہار اعمال کا

7. *Rajas*, the passion-nature, know
Is spring of cravings and desires,
With bonds of action, Kunti's son,
It binds the Self Who dwells within.

७

रागात्मक रजगुण है इससे हो तृष्णा, आसक्ति महान ।
बाँध डालता कर्म-संगसे यह प्राणीको पार्थ सुजान ! ॥

۷ - یہ رج گُن کو جانو ہے راگا تمک
ترشنا کو پیدا کرے یک بہ یک
کرم کی محبت میں ارجن پیارے
یہ باندھے سکل جیوؤں کو بیدھڑک

Motion, the passion-nature, know thou, is the source of attachment and thirst for life, O Kaunteya, that bindeth the dweller in the body by the attachment to action. (7)

(७)

रागात्मक, तृष्णायुत करता, रज-गुण का जग प्रादुर्भाव;
कर्म समेत बाँधता है जो, इस शरीर को, सरल-स्वभाव !

۷

اے راحت جسم و جان کُنتی
یہ بات ہے قابلِ تیقن
خواہش کا ہے نکاس اِسی سے
اعمال کے سلسلہ میں بجد

اے نازشِ دودمان کُنتی
تحریک کا نام ہے رجوگن
بُجھتی ہے دل کی پیاس اسی سے
کرتا ہے یہ روح کو مُقیّد

सुखकी इच्छा तीव्र हो, भोगसे अरु बढ जाय।
फिर साधन नहीं भोगका, मिले, वह राग कहाय ॥१४

३४

राग रूप यूं रजोगुण, हे कुन्तिसुत ! जान।
उत्कट इच्छा सङ्गसे, समुत्पन्न पहिचान ॥ १५ ॥
जकड बान्धता जीवको, कर्म पाशसे सो।
हे कुन्तिसुत रजः ही, कर्मरूप धर सो ॥ १६ ॥

९४/८

तमस्त्वज्ञानजं विद्धि मोहनं सर्वदे-
हिनाम् ॥ प्रमादालस्यनिद्राभिस्तं-
न्निबध्नाति भारत ॥ ८ ॥

दोहा—होतजुतमअज्ञानतें, मोहतसबकोहीय ।
आलसनिद्राविकलता, बांधतसबकोजीय ॥ ८ ॥

हे भारत ! सर्वदेहधारी जीवोंको मोहनेवाला तमोगुण अज्ञानको कारण जानो वह प्रमाद आलस और निद्रा करके बंधन करता है ॥ ८ ॥

۸۔ تم ہوتا ہے اگیان سے یکسر پیدا
اور موہنا انسان کا ہے کام اس کا
رکھ یاد کہ باندھتا ہے یہ لوگوں کو
بھول اور نیند اور آلکس سے ہر جا

तम अज्ञान बढ़ावतो अज्ञान हि तमहेत ।
निद्राऽऽलस्यप्रमादसों बांधत जीवहि, चेत ॥ ८ ॥

8
Tamas, dark brood of Ignorance,
befogs all souls that body wear,
And binds the Man through link set up
with heedlessness and sloth and sleep.

(۸)
جب گھڑی جہلِ مُرکّب کا اثر ہو عقل پر
نیند سُستی اور عیّاشی میں رہتا ہے بشر

8. But *tamas* born of ignorance,
Deluding all embodied Selfs,
Doth fetter them, O Bharat's son,
With stupor, sloth and heedlessness.

८

तम अज्ञानज है जीवोंको डाले मोहबीच भरपूर ।
फिर प्रमाद, आलस्य, नींदसे प्राणीको बाँधे, हे शूर ! ॥

(८)

मोहक है अज्ञान जन्य जो, वही तमोगुण का है रूप;
प्रमाद, आलस, निद्रा से वह, जीव बाँधता पाण्डव भूप !

۸ - تو تم گن کو اگیان سے پیدا جان
موہے اس نے دیکھو یہ خورد و کلاں
یہ غلطی و آلس و ندرا سے خاص
ڈالے بندھ ہیں سارے پیر و جوان

But Inertia, know thou, born of unwisdom, is the deluder of all dwellers in the body; that bindeth by heedlessness, indolence and sloth, O Bhârata. (8)

۸

اگیان سے ہے عیاں تموگن
ہیں اس کے سبب تمام جاندار
عیش و عشرت پہ کر کے مائل
دیتا ہے فریب یہ بشر کو

ظلمت کا ہے نشاں تموگن
دامِ تزویر میں گرفتار
حد درجہ بنا کے سست غافل
کرتا ہے ذلیل بے خبر کو

हे भरत सन्तान तू, तमको जान उत्पन्न ।
ज्ञान अभावसे सर्वदा, करे यह मोह उत्पन्न ॥ १७ ॥
सभी शरीरि मात्रको, जकड बांध कर यह ।
सुस्त करे कुच्येष्टकर, मोहसे सुलावे यह ॥ १८ ॥

१४६६

सत्त्वं सुखे संजयति रजः कर्माणि भारत ॥ज्ञानमावृत्य तु तमः प्रमादे संजयत्युत ॥ ९ ॥

दोहा–सतगुणसुखमेंबढतुहै, कर्मरजोगुणहोय ।
आलसमेंतमगुणबढै, रहतज्ञानसबखोय ॥ ९ ॥

हे भारत ! सत्वगुण मनुष्यको सुखमें लगातों है रजोगुण कर्ममें तमोगुण ज्ञानको ढकिके फिर प्रमादमें लगातेहै ॥ ९ ॥

Sattva binds Man to happiness,
Rajas to act, O Pṛthā's son,
While *Tamas*, clouding consciousness,
links up the Man with senselessness.

۹۔ ہوتا ہے سکھ میں ستو کا یاں غلبہ اعمال میں غلبہ ہے ہمیشہ رج کا
جو تم ہے۔ وہ گیان کا احاطہ کرکے غفلت کی شکل میں ہے غلبہ پاتا

दोहा–सुखमें सत्त्व लगावतो, क्रियामाहँ रज जान ।
जीवहिं लाय प्रमादमें ज्ञान रोक तम मान ॥ ९ ॥

(۹)
علم سے آرام ہے اعمال میں تکلیف ہے
غافل و بدمست کرنا جہل کی تعریف ہے

9. *Sattva* unites to happiness,
Rajas to action, Bharat's son;
Whilst *tamas*, veiling wisdom's light,
Doth wed the Self to heedlessness.

९

सुखमें सत्त्व, कर्ममें रजगुण करता है आसक्ति महान ।
करे प्रवृत्ति प्रमादबीच तम, प्राणीका ढक कर सब ज्ञान ॥

9446

(९)

सत-गुण सुख में और रजोगुण, करै कर्म ही में अनुरक्त;
ज्ञान आवरण ढक कर करता, तम गुण सतत प्रमाद-प्रयुक्त।

۹ - یہ ست گن تو سکھ میں لگاتا ہمیں
وہ رج گن کرم میں پھساتا ہمیں
وہ تم گن مٹاتا جو ہے گیان کو
وہ غلطی میں راغب کراتا ہمیں

Harmony attacheth to bliss, Motion to action,

O Bharata, Inertia, verily, having shrouded wisdom, attached on the contrary to heedlessness. (9)

۹

کرتی ہے ستوگن کی تاثیر سحر آسودگی سے تسخیر
رکھتا ہے اگر رجوگن انسان ہوتا ہے عمل کی سمت رجحان
لیکن ہے یہ تموگن ایسا جو گیان پہ ڈالتا ہے پردا
طاری کرتا ہے دل پہ غفلت رکھتا ہے بشر کو محوِ عشرت

सुखमें लगाता सत्त्व अरु, रजस करावे कर्म।
उलझाता मदमस्त कर, ढांप ज्ञानको तम ॥ ९ ॥

१४५८

१५
१०

रजस्तमश्चाभिभूय सत्त्वं भवति भारत।
रजः सत्त्वं तमश्चैव तमः सत्त्वं रजस्तथा ॥ १० ॥

दोहा—रजगुणतमगुणपेलिकै, रहतसत्त्वगुणपूरि।
रजसतकोएलैजुतम, रहतेसततमदूरि ॥ १० ॥

हे भारत ! यद्यपि ये गुण प्रकृतिके हैं तौभी विपरीतताका कारण यह कि, रजोगुण और तमोगुणको जीतिके सत्त्वगुण प्रबल होता है और रजोगुण सत्त्वगुणको जीतिके तमोगुण प्रबल होता है तैसेही तमोगुण सत्त्वगुणको जीतिके रजोगुण प्रबल होताहै यहाँ कारण प्राचीन कर्म और नित्य आहारादिक है ॥ १० ॥ /

۱۰ ۔ غلبہ جس وقت ستو گن پاتا ہے پر رج دب جاتا ہے تم بھی دب جاتا ہے

رج، ستو اور تم کو ہے دباکر ہوتا تم جب وہ رج اور ستو پر چھاتا ہے

रज तम दोउ दबायके सत्त्व बढ कभु तात।
रज बढतो तम सत्त्वसों, कबहुं तम बढजात ॥ १०

Whichever Mood preponderates above the two remaining ones, 10
Is thus set free to operate within the creature, Bhārata.*

(۱۰)

علم و شوق و جہل میں ہے امتزاجِ باہمی
ایک کی بیشی سے باقی دو میں ہوتی ہے کمی

10. When *tamas*, Bharat, is o'ercome
Along with *rajas*, *sattva* reigns.
Rajas or *tamas* reigns in turn,
When are the other two eclipsed.

१०

रज तम हटे सत्त्वगुण होता, सत तम हटे रजोगुण जान ।
सत्त्व और रजके हटनेसे तम पैदा होता, यह मान ॥

۱۰- یہ رج - تم کے اوپر کبھی ست بلی ہو
و رج ست پہ تم کی ہی طاقت چلی ہو
و - تم - ست کے اوپر کبھی رج ہو بھارا
یہ جنگ و جدل ان کی خاصی بھلی ہو

(१०)

रज, तम, गुण के जीते होता, अर्जुन ! सत्व सतत बलवान;
सत्व, रजोगुण के कम होते, होता तम गुण प्रबल महान।

Now Harmony prevaileth, having overpowered Motion and Inertia, O Bharata; now Motion, having overpowered Harmony and Inertia; and now Inertia, having overpowered Harmony and Motion. (10)

۱۰

رج اور تم کو دبا کے بھارت — بڑھتی ہے ستوگن کی طاقت
ستو اور تم کا نہ کچھ ہو جب زور — رج کا ہوتا ہے تب بپا شور
جب ہوں رج اور ستو پسپا — تم کا چھاتا ہے تب اندھیرا
طرفہ تر یہ معاملہ ہے — کیسا دلچسپ سلسلہ ہے

भरतवंश अवतंस हे ! जब रज तम दब जाय ।
सत्त्व प्रकट होवे तभी, सात्त्विक जीव कहाय ॥२०॥
जीत सत्त्व और तमः को, गुण हो रज सुव्यक्त ।
ऐसे ही बढ जाय तम, जब सत रज अव्यक्त ॥२१॥

९४६०

१४
११-१२

सर्वद्वारेषु देहेऽस्मिन् प्रकाश उपजायते ॥ ज्ञानं यदा तदा विद्याद्विवृद्धं सत्त्वमित्युत ॥ ११ ॥ लोभः प्रवृत्तिरारंभः कर्मणामशमः स्पृहा ॥ रजस्येतानि जायंते विवृद्धे भरतर्षभ १२

दोहा–सबद्वारनिमेंदेहमें, जबहिंप्रकाशतुज्ञान ।
तबहिंबढैहैसत्त्वगुण, अर्जुन यह तू जान ॥११॥
बढत रजोगुणहैजबहिं, नरशरीरमें आइ ।
लोभकरमउद्यमअशन, इनहिंदेतप्रगटाइ ॥१२॥

हे भरतवंशिनमेंश्रेष्ठ ! इसे देहमें जब सर्वनेत्रादिद्वारोंमें प्रकाश याने वस्तुका यथार्थ निश्चय सोई ज्ञान उत्पन्नहोय तब सत्त्वगुण बढाहै ऐसो जानना और रजोगुणके बढनेसे लोभ जो धनादिक खरचेविना और मिलनेकी इच्छा प्रवृत्ति याने प्रयोजनविना चंचलता कर्मनका आरंभ इंद्रियलोलुपता विषयइच्छा इतने उत्पन्न होते हैं ॥ ११ ॥ १२ ॥

١١ غلبہ یوں ستو کا ہے جانا جاتا
جب گیان کی روشنی سے معمور ہوں سب
جو جو دروازہ شہر تن کا ہے کھلا
اُس وقت سمجھ کہ ستو کا زور ہوا

١٢ لالچ - مصروف رہنا اور کرنا کام
غلبے سے رج کے سب ہیں پیدا ہوتے
خاطر کا اضطراب خواہش بھی مدام
اے ارجن یاد رکھ تو میرا یہ کلام

दोहा–ज्ञानेंद्रियमें होत जब विमल प्रकाश सुजान ।
ज्ञान बढै, तब जान तू सत्त्व बढ्यो सुखखान ॥ ११ ॥

कर्मारंभ अशांति अरु लोभ चपलता राग ।
ये जब बढते जान तब बढ्यो रजोगुणभाग ॥ १२ ॥

12

Greed, enterprise and going forth,
yearning and restless discontent
are signs of the ascendancy
of *Rajas*, best of Bharatas.

11

When of this body all the gates
are lit up by the rising sun
Of Knowledge, then may'st thou be sure
that *Sattva* has the upper hand.

(۱۱)

شہرِ تن کے سارے دروازوں پہ جب ہو روشنی
تو سمجھنی چاہیئے اُس میں حکومت علم کی

(۱۲)

آرزو تدبیر کوشش بیقراری اور اُمنگ
شوق کی حالت میں دکھلاتی ہیں اپنا راگ و رنگ

11. When wisdom's light [8] shoots forth its beams
From all the gates the body has,
Then one indeed may apprehend
That *sattva* is predominant.

12. Greed, energy, desire, unrest,
The undertaking too of deeds.
O best of Bharats, these arise
When *rajas* gains ascendancy.

११

इस शरीरके सब द्वारोंमें जब हो भव्य प्रकाश विशाल ।
तब ऐसा जानो कि सत्त्वगुण बढ़ा हुआ रहता उस काल ॥

१२

कर्मारम्भ, प्रवृत्ति कर्ममें, स्पृहा, अशान्ति, प्रलोभ महान ।
ये पैदा होते जब अर्जुन ! तब रज बढ़ा हुआ तू जान ॥

When the wisdom-light streameth forth from all the gates of the body, then it may be known that Harmony is increasing. (11)

Greed, out-going energy, undertaking of actions, restlessness, desire—these are born of the increase of Motion, O best of the Bhâratas. (12)

१४
११-१२

(११)

इस शरीर के सब द्वारों में, जब हो ज्ञान-प्रकाश-प्रवेश;
तब समझो है प्रबल सत्व गुण, हे पाण्डव-कुल-कमल-दिनेश !

(१२)

लोभ, प्रवृत्ति, कार्यारम्भों में इच्छा-अशान्ति-सम्पन्न;
हो तब समझो वृद्धि पा रहा, रजगुण हो कर के उत्पन्न ।

۱۱- جو اس دیہہ کے اندر سرو دوار ہیں
ہو پرکاش پیدا اندر باہر ہیں
علم گیان ہیں ہو پرتی بڑھی
سمجھ لے ستو گن بڑھا کار ہیں

۱۲- بڑھے لوبھ اور بہت کاموں کا شوق
کاموں ہیں بے صبری و شوں کا و ذوق
سمجھ لے بھرت کل کے روشن ستارے
یہ رج گن کو سب گن کے اوپر ہے فوق

इस देहमें दशद्वार जो, सबमें उपजे ज्ञान ।
उजियाला तब जान लो, बढा सत्त्व सुमहान् ॥२२॥

भरतश्रेष्ठ ! जब रज बढे, यह हों तब उत्पन्न ।
अभिरुचि, लालच, लालसा, चञ्चलकर्मारम्भ ॥२३॥

۱۱

جب علم کا آفتاب ضو بار ہو مشرق حواس سے نمودار
اک اک در سے مکان تن کے گوشے گوشے سے اس چمن کے
امڈے اک نور کا سمندر ہر موئے بدن ہو شمع پیکر
اس وقت یہ چاہیئے سمجھنا غلبہ ہے بشر پہ ستوگن کا

۱۲

دل پر چھاتا ہے جب رجوگن غالب آتا ہے جب رجوگن
لالچ کرتا ہے وار اپنا پا جاتا ہے شکار اپنا
آمادہ بکار ہو کے انساں محرومِ قرار ہو کے انساں
رہتا ہے اسیر پنجۂ آز اے کسل بھرتے ہیں باعثِ ناز

९४६४

९४/१३

अप्रकाशोऽप्रवृत्तिश्च प्रमादो मोह एव च ॥ तमस्येतानि जायंते विवृद्धे कुरुनंदन ॥ १३ ॥

दोहा—अर्जुनजबहींकरतहै, तमगुणआइप्रकास ।
आलसमोअज्ञानतब, मनमेंकरतविलास ॥१३॥

हे कुरुनंदन ! तमोगुणके बढ़नेसे विवेककी हानि निरुद्यमता और न करनेका करना और विपरीतज्ञान इतने ये होतेहैं ॥ १३ ॥

۱۳۔ گیان اور مصروفیت نہ ہوئی زنہار
تم کے غلبے سے انکی ہے پیدائش
اور آلکس اور موہ کا ہونا ہر بار
اے ارجن جان اس کو گر ہے ہشیار

प्रधान मोह अज्ञान अरु त्याग कर्मको और ।
ये जब बढ़ते जान तब तम हि बढ्यो मतिचोर ॥ १३ ॥

13

Lack of knowledge and enterprise,
heedlessness and inert stupor,
O best of Kurus thou, arise
when *Tamas* rules supreme in man.

---

(۱۳)

کاہلی و بیوقوفی۔ حسرت و دیوانگی
جہل کی شدّت سے پیدائش ہیں ان جذبات کی

---

13. Obscurity and heedlessness,
Stagnation and delusion too,
O Kurus' joy, all these arise
When *tamas* gains the upper hand.

१३

अप्रकाश, कर्मोंमें आलस और प्रमाद, विमोह तथैव ।
ये होते उत्पन्न पाण्डुसुत ! जब, तम बढ़ता तभी सदैव ॥

(१३) ९

मोह, प्रमाद युक्त और, जब, हो प्रवृत्ति-प्रकाश-विहीन:
तब समझो यह जीव हो रहा, बृद्धि तमोगुण में है लीन।

۱۳- اندھیرا بھی ہو اور آلس بڑی
و غلطی و موہ میں بدھی ہو جڑی
سراسر کوئی ہو نحوست کا مارا
سمجھ لو کہ تم کی کلا ہے چڑھی

Darkness, stagnation and heedlessness and also delusion—these are born of the increase of Inertia, O joy of the Kurus. (13)

12

۱۳

لیکن اے کورو نندن ارجن — غلبہ پاتا ہے جب تموگن
رہتا نہیں شمع علم کا نور — ہوتا ہے عمل کا شوق کافور
ہوتی ہے جہالت ایسی طاری — ہے سوجھتی دل کو ہرزہ کاری
چلتی نہیں ایک آگہی کی — نوبت آتی ہے گمرہی کی

4

कुरुकुलके हे हर्षकर ! बहुत बढे जब तम। 10
तब ये सब उत्पन्न हों, अरु; बढ जावे भ्रम ॥ २४ ॥

न उजियाला ज्ञान न, अभिरुचि भी तब न। 13
व्यर्थ कुचेष्टा भुलावा, सत्यकर्म तब न ॥ २५ ॥

यदा सत्त्वे प्रवृद्धे तु प्रलयं याति देह-
भृत् ॥ तदोत्तमविदांल्लोकानमला-
न्प्रतिपद्यते ॥ १४ ॥

If from this body man fares forth
while *sāttvic* Mood preponderates,
He rises to those stainless Worlds
where they who know the Highest, dwell.

14

दोहा–जोसतगुणकीवृद्धिमें, तजैजीवनिजदेह ।
तो ज्ञानीकेलोकमैं, जायकरै वहगेह ॥ १४ ॥
जब सत्त्वगुणके बढते समयमें देहधारी प्रलय याने मृत्युको प्राप्त होय तब आत्मज्ञानिनके शुद्ध लोकोंको प्राप्तहोती है अर्थात् आत्मज्ञानिनके कुलमें आत्मज्ञान जाननेयोग्य शरीरोंको प्राप्त होताहै "लोकस्तुभुवनेजने" इसप्रमाणसे यहाँ लोकशब्द जनवाची है ॥ १४ ॥

(۱۴)
تن سے جو رُخصت طلب ہوتے ہیں فرطِ علم میں
عارفوں کی منزلِ کمیاب ملتی ہے اُنہیں

۱۴ جس وقت کہ ستو کا ہو غلبہ دل پر
اور موت کا ہو شکار اس وقت بشر
وہ اعلےٰ عالموں کے لوکوں میں سدا
جاتا ہے جو پاکی و صفائی کے ہیں گھر

दोहा–सत्त्व बढै ते जो मरै सो नर सुभग सुजान ।
हरिभक्तनके विमल कुल जन्मत ज्ञाननिदान ॥ १४ ॥

¶ 14. Should the embodied Self depart,
When *sattva* is predominant,
He reaches then those spotless realms
Where they who know the Highest dwell.

१४

सत्त्व बुद्धिके समय मनुज जो करता निज शरीरका त्याग ।
वह उत्तम तत्त्वज्ञ, सुरोंके लोक-बीच जाता बड़भाग ॥

(१४)

तजता है जो देह उस समय, रहता है जब सत गुण व्याप्त:
उत्तमवित् निर्मल लोकों को, करता है तब वह नर प्राप्त ।

۱۴۔ جس حالت میں ست گن ترقی کرے
کوئی ایسی حالت میں مانش مرے
اوتم گیانیوں کے پوتر جنم
کے اندر وہ مانش آ کر اوترے

If harmony verily prevaileth when the embodied goeth to dissolution, then he goeth forth to the spotless worlds of the great Sages. (14)

۱۴

سر پہ جب موت آ کھڑی ہو — یعنی جب کوچ کی گھڑی ہو
اس وقت جو ستوگن ابھر آئے — مرنے والے کے دل پہ چھا جائے
جاگ اٹھے ضرور اس کی تقدیر — جنت ہو جائے اس کی جاگیر
پا جائے وہ بار اس جہاں میں — جس میں بستی ہیں پاک روحیں

बहुत बढे जब सत्त्वमें, देही त्यजे यह लोक ।
उत्तमोंद्वारा प्राप्त तब, पा जाय निर्मल लोक ॥ २६ ॥

रजसि प्रलयं गत्वा कर्मसंगिषु जायते ॥ तथा प्रलीनस्तमसि मूढयोनिषु जायते ॥ १५ ॥

दोहा—रजगुणमेंतजिप्राणको, कर्मवंतघरजाय ।
तमगुणमेंजोमरतहै, पशुनिजायप्रगटाय ॥१५॥

रजोगुणकी वृद्धिमें मृत्युको प्राप्तहोके कर्मसंगिनमें जन्मलेताहै याने उनमें जन्म लेके सकाम कर्म करके स्वर्गको जाताहै फिर उनहीमें जन्म लेके फिर कर्म करके स्वर्गमें ऐसेही फिरता रहताहै तथा तमोगुणमें मराभया नीचेयोनिमें जन्मताहै वहाँभी वैसाही क्रम जानना ॥ १५॥

۱۵۔ غلبے میں رج کے جان ہے جو دیتا   وہ اہل عمل کے گھر ہے ہوتا پیدا
اور جو مرتا ہے تم کے غلبے میں یہاں   نیچی جونوں میں ہوتا ہے جنم اس کا

रज हि बढै ते मर हि नर कर्मसंगिकुल जात ।
तम बढते नर मरहिकें जन्मत पशुकुल तात ॥ १९ ॥

(۱۵)
خانۂ عامل میں پیدائش ہے اُلفت کا مآل
جہل کے غلبہ میں رحلت کا نتیجہ ہے زوال

15. But should He go when *rajas* reigns
He is re-born 'mongst those who act;
And should He die when *tamas* reigns,
He's born again in senseless wombs.

15
In *Rajas* dying, he is born
'mong people fast to actions bound,
While, passing forth in darkest Mood,
he goes to birth in senseless wombs.

१५
देह रजोगुणमें जो छोड़े वह होता है कर्मासक्त ।
और तमोगुणमें जो मरता वह होता है मूढ अभक्त ॥

१४६८

(१५)

कर्म-सङ्गियों में जन्में वे, रजगुण में जो हों अवसान;
जन्म—मूढ़—योनि में पाते, तम—गुण—युक्त पुरुष—अज्ञान ।

۱۵- جو رج گن کی حالت میں چھوڑے جسم
کرم سنگیوں میں ملے پھر جنم
و- تم گن کی حالت میں جو مر گیا
وہ ہو بیوقوفوں میں پیدا بھم

Having gone to dissolution in Motion, he is born among those attached to action; if dissolved in Inerita, he is born in the wombs of the senseless. (15)

۱۵

لیکن جو دم فنائے قالب آجائے رجوگن اس پہ غالب
انساں ایسوں میں پھر ہو پیدا ہوتے ہیں جو عمل کے شیدا
ہر دم جو نکل رہا کسی کا جب زور کرے تموگن اپنا
لے ڈوبیگی اس کو قسمت اسکی ادنیٰ ہوگی ولادت اسکی

ऐसे ही रज बढे तब, करे जो जीव प्रयाण ।
अथवा तम अति वृद्धिमें, फंसा हुआ अनजान ॥२७॥
पहिला जा पशुपक्षिमें, फंसे कर्ममें नीच ।
पौदोंमें जाय दूसरा, मन्दमति अतिनीच ॥ २८ ॥

१४८०

१४/१६

कर्मणः सुकृतस्याहुः सात्त्विकं निर्मलं फलम् ॥ रजसस्तु फलं दुःखमज्ञानं तमसः फलम् ॥ १६ ॥

दोहा—सुकृतकर्मतेंहोतहै, सात्त्विकफल अतिस्वच्छ।
रजगुणकोफलदुःखहै, तम अज्ञानफलतुच्छ १६

सुकृत कर्मको फल सात्त्विक निर्मल कहतेहैं याने उसके करते करते कोई जन्ममें मुक्त होताहै और रजोगुणी कर्मका फल दुःख याने उस सकामसे स्वर्ग स्वर्गसे मृत्युलोक फिर स्वर्ग ऐसे संसारदुःखही है तमोगुणी कर्मको फल अज्ञान है याने उससे नरकही है ॥ १६ ॥

Of a good action it is said 16
the 'fruit' is *sāttvic*, void of stain;
While *Rajas* yields as fruit grim pain,
and *Tamas*, sheer unconsciousness.

(۱۶)

نیک اعمالی کا ثمرہ روشنی طبع ہے
رنج کا موجب معیشت جہل کا بدوضع ہے

۱۶ - اچھے اعمال کا ہے پھل بھی اچھا　کہتے ہیں ساتوک اسے مرد صفا
رج کا ہے پھل ہمیشہ دکھ سا رجن　اور پھل اگیان ہے ہمیشہ تم کا

दोहा—सुखमय फल है सत्यको तिस हि पुण्यफल जान।
दुखमय फल रजको तथा, तमको फल अज्ञान ॥ १६ ।

16. Of all good actions it is said
The fruit is *sāttvic*, free from taint,
Whilst pain the fruit of *rajas* is
And that of *tamas* ignorance.

१६

पुण्यकर्मका फल मिलता है जनको निर्मल सत्त्व प्रधान।
दुःख रजोगुणका फल होता और तमोगुण-फल अज्ञान ॥

(१६)

सात्त्विक कर्मों से मिलते हैं, फल निर्मल सतगुण-संयुक्त;
रजगुण का फल दुःख, तमोगुण का फल हो अज्ञान-प्रयुक्त।

۱۶ - بھلے کام ست گن سے جو کر چلیں
وہ نرمل پھلوں کو ہی حاصل کریں
و رج گن کے کرموں کا دکھ ہے نتیجہ
و تم گن کا اگیان پھل بھی بھریں

It is said the fruit of a good action is harmonious and spotless; verily the fruit of Motion is pain, and the fruit of Inertia un-wisdom. (16)

۱۶

جس کام میں ستوگن ہو شامل
ہے قابلِ قدر اس کا حاصل
ہوتا ہے وہ عمل طرب ناک
اس کا ثمرہ ہے عیب سے پاک
کہتے ہیں جسے رجوگنی کام
ہوتا ہے وہ باعثِ صد آلام
لیکن جو تموگنی ہیں کردار
گرم ان سے ہے گمرہی کا بازار

उत्तम किये सुकर्मका, सात्त्विक निर्मल फल।
कहते रजका दुःख फल, अज्ञान तमफल ॥ २९ ॥

१४८२

१४/१८

सत्त्वात्संजायते ज्ञानं रजसो लोभ एव च ॥ प्रमादमोहौ तमसो भवतोऽज्ञानमेव च ॥ १७ ॥

दोहा—लोभरजोगुणतेंभयो, सतगुणतेंहैज्ञान ।
तमगुणतेंहैविकलता, मोहऔरअज्ञान ॥ १७ ॥

सात्त्विककर्म से ज्ञान होताहै और राजससे लोभही होताहै तामससे मूर्खता और मोह होतेहैं और अज्ञान भी होताहै ॥ १७ ॥

۱۷ پیدا ہوتا ہے ستو سے دائم گیان
اور رج سے طمع تجھے رہے اسکا دھیان
اگیان اور بھول موہ وہ چیزیں ہیں
جو تم سے ہوا کرتی ہیں ان کو پہچان

दोहा—ज्ञान बढै बहु सत्त्वसों रजसों लोभ बढात ।
प्रमाद मोह अज्ञान अरु बढते तमसों तात ॥ १७ ॥

17. From *sattva* wisdom is produced,
And avarice from *rajas* springs;
From *tamas* ignorance comes forth,
And heedlessness and error too.

(۱۷)

علم کا میوہ سکوں ہے شوق کا حرص و ہوا
تیرگی مستی و غفلت ہیں ضمیمہ جہل کا

१७

ज्ञान सत्त्वमें पैदा होता, लोभ रजोगुणसे हो एक।
और तमोगुणसे होते हैं मोह, प्रमाद तथा अविवेक॥

17

From *Sattva* rises knowledge bright,
from *Rajas*, greed of gain is born;
From *Tamas*, stupor, heedlessness,
and even loss of consciousness.

(१७)

सतगुण से हो ज्ञान, लोभ हो रजगुण से पाण्डव-संतान ! ;
हों उत्पन्न तमोगुण ही से, मोह, प्रमाद और अज्ञान ।

۱۷- یہ ست گن سے پیدا بھلا گیان ہو
و- رج گن سے لالچ کا سامان ہو
تموگن سے پرماد- موہ ہوتے پیدا
بڑھا خاص کر پھیر اگیان ہو

From Harmony wisdom is born, and also greed from Motion; heedlessness and delusion are of Inertia and also un-wisdom. (17)

۱۷

مشہور جو ستوگن صفت ہے — وہ جادہ نمائے معرفت ہے
لالچ کا ہے سبب رجوگن — ہے وجہ غم و تعب رجوگن
گن ہے لیکن تموگن ایسا — کر دیتا ہے بشر کو اندھا
طاری ہوتی ہے اس پہ غفلت — بن جاتا ہے شکار ظلمت

सत्त्वसे पैदा ज्ञान हो, और हो रजसे लोभ ।
तमसे तो अज्ञान हो, मोह, मद, आलस्य, क्षोभ ॥३०

१४२४

९५
१८

ऊर्ध्वं गच्छंति सत्त्वस्था मध्ये तिष्ठं-
ति राजसाः ॥ जघन्यगुणवृत्तिस्था
अधो गच्छंति तामसाः ॥ १८ ॥

दोहा—सात्विकऊंचेजातहैं, राजसमध्यमलोक ।
तामसजातअधोगतिन, पावतबहुविधिशोक १८॥

सात्विककर्म करनेवाले मुक्तिको पातेहैं राजसकर्मवाले मध्यमें (स्वर्ग मृत्यु लोकहीमें) रहतेहैं जैसे पुण्यसे स्वर्ग, पुण्यक्षीण होनेसे मनुष्यलोक फिर पुण्यसे स्वर्ग ऐसे वारंवार मध्यहीमें रहतेहैं तमोगुणी नीचगुणकी वृत्तिमें वर्त्तनेवाले तामसी नीचेजाति पशुकीटादिकमें जन्मते रहतेहैं ॥ १८ ॥

۱۸۔ جاتے ہیں تمام ستو والے اونچے — رہتے ہیں بیچ ہی میں سب ارج والے
رہنے والے نیچلے گن میں — گرتے ہیں تامسی ہمیشہ نیچے

3

दोहा—सत्त्वगुणी क्रमसों सखे परमधामको जात ।
रजोगुणी मध्य हिं रहैं, तमसों अधम समात ॥ १८ ॥

The *sāttvic* upwards wend their way,
the *rājasic* remain between.
The *Tāmasic*, caught in the trend
of Nature's nether Mood, sink down. 18

(۱۸)

منزلِ عرفاں ہے بالا جائے طاعت درمیاں
جہل و بدکاری کے درجہ میں ہے ذلت اور زیاں

18. Who follow *sattva* upwards go,
The *rājasic* midway remain.
The *tāmasic* who tread the path
Of the last *guṇa* downwards go.[10]

१८

सात्त्विक जन स्वर्गादि लोकको पाते राजस मध्यम लोक।
और तमोगुणमें स्थित जनको सदा अधोगति मिले सशोक॥

۱۸۔ ستو گن سے ملتی ہے اونچی گتی
و رج گن سے مدھ میں سدا الشکنی
جو تم گن سے عادت بڑھے نیچتا
تو بس، نیچ ملتی بڑی دُر گتی

They rise upwards who are settled in Harmony; the Active dwell in the mid-most place; the Inert go downwards, enveloped in the vilest qualities. (18)

(१८)

मिलता ब्रह्म-लोक सतगुण, से पाते रजगुण से नर योनि;
तमगुण वाले पाते जग में, परम निम्न, पशु-पक्षी योनि।

18

جن میں کثرت ہے ستوگن کی
رفعت پاتی ہے روح ان کی
ہے جن سے رجوگن آشکارا
انجام ہے درمیانی ان کا
لیکن جو عیوب کے ہیں بندے
ہیں جن کے تمام فعل گندے
عادات تموگنی ہیں جن کی
گرتے ہیں میان قعر پستی

आश्रय ले गुण सत्त्वका, ऊपर ऊपर जाय।
नीच गुणी व्यवहार कर, तामस नीचे जाय॥ ३१॥
रहें बीचमें ही राजसी, ऊपर नीचे न हो।
साधारण जीवन बिता, यथा कालही खो॥ ३२॥

नान्यं गुणेभ्यः कर्त्तारं यदा द्रष्टाऽनुपश्यति ॥ गुणेभ्यश्च परं वेत्ति मद्भावं सोऽधिगच्छति ॥ १९ ॥

दोहा–गुणहींकोकरतारकरि, जानैज्ञानीकोय ।
मोहिलखैगुणतेपरे, मोमेंलीनसुहोय ॥ १९ ॥

जब विवेकीपुरुष सत्त्वादिगुणोंके विना और किसी को कर्त्ता नहीं जानताहै और आपको गुणोंसे न्यारा जानताहै तब सो मेरी साम्यताको प्राप्त होताहै १९॥

۱۹۔ جب ناظر دیکھ لیتا ہے سمجھتا پایا   فاعل نہیں کوئی جز گنوں کے اس جا

اور آتما ان تین گنوں سے ہے پرے   وہ میرے بھاؤ کو پہنچ ہے جاتا

दोहा--जीव अकर्त्ता, गुणनसों पर अरु भिन्न सुजान ।
कर्म करैं गुण–जान इह होत मुक्त नर मान ॥ १९ ॥

¶ When He that *sees* at last perceives
no agent save these Nature-Moods,
And knows the ONE beneath them all,
to My condition He attains. 19

(۱۹)

جسکی نظروں میں ہر کُل مخلوق اجزاءِ صفات
ذات سب سے پاک و برتر اُسکو حاصل ہے نجات

19. And when the seer sees at length,
No agent save the *guṇas* three,
And knoweth Him Who these transcends,
To My Estate he then attains.

१९

द्रष्टा जन जो यही देखता, कर्ता नहीं गुणोंसे और ।
तथा गुणोंसे परको जाने वह पाता है मेरी ठौर ।

۱۹- گنوں سے علیحدہ نہ کرتا کو مانے
مگر آپ کو خود اکرتا ہی جانے
گنوں سے پرے جیو نیارا سمجھ
میرے بھاو سندر میں آ کر سمانے

5

(१९) 9

जो ज्ञानी इन तीन गुणों के, भिन्न मानता नहीं प्रभाव:
गुणातीत वह मुझ को जानै, तब पाता है मेरा भाव।

When the Seer perceiveth no agent other than the qualities,* and knoweth THAT which is higher than the qualities,* he entereth into My Nature. 12 (19)

۱۹

جس وقت اس چشم سیر بیں پر
کھلتا ہے یہ سِر نہانی
اس ذات کو ہے وہ جان لیتا
ہوکر اس وقت مست عرفاں

انسان کے دیدۂ یقیں پر
افعال کی ہیں صفات بانی
جس میں نہیں کام کچھ صفت کا
پاتا ہے مرا وصال انساں

4

10

गुण बिनकर्त्ता दूसरा, जब देखे नहीं जीव।
और गुणोंसे परे जो, उसे पहिचाने जीव ॥ ३३ ॥
तब पावे मेरे भावको, वह मेरी सत्ता पाय। (19)
अङ्ग बना मम प्रिय वह, निष्कलङ्क हो जाय ॥३४॥

९४८८

१४/२०

गुणानेतानतीत्यत्रीन्देही देहसमुद्भवान् ॥ जन्ममृत्युजरादुःखैर्विमुक्तोऽमृतमश्नुते ॥ २० ॥

दोहा—देहकरतजोतीनगुण, तिनकोदेहजुत्यागि ।
जन्ममृत्युदुखतेछुटे, रहैमुक्तिमेंपागि ॥ २० ॥

यह देहधारी जीव देहमें उत्पन्नभये इन सत्त्वादि तीनों गुणोंको उल्लंघन करके जन्म मृत्यु और जरापनके दुःखोंकरके छुटाभया मोक्षको पाताहै गुणयुक्त नहीं २०

The Form-enshrined who goes beyond
these three co-partners of all Form,
From woes of birth, death, age, set free,
quaffs here the cup of deathless Life. 20

۲۰ پیدا شدہ از جسم گنوں سے یکسر اے ارجن آ کے جسم والا باہر
پیدائش و مرگ و ضعف و غم سے چھٹکر پاتا ہے بقائے سرمدی و ابدی

उक्त ज्ञानको साधकर, गुणातीत अरु होय ।
जरा जन्म मृति दुःखसों छूटत नरवर सोय ॥ २० ॥

(۲۰)
ضعف و بیماری و مرگ و زیست سے بے واسطہ
تارکِ اوصاف کی قسمت میں ہے آبِ بقا

20. When the embodied Self has passed
Beyond these body-makers [11] three,
'Tis freed from birth, age, death and pain,
And immortality attains.

२०

जो जन कारणरूप जीत ले इस शरीरके ये गुण तीन
जन्म, मरण, वृद्धत्व दुखोंसे हो विमुक्त, वह मुझमें लीन

(२०)

देह-जन्म-दाता इन तीनों, गुण को जो करते हैं पार;
जरा-जन्म-मृत्यु-मुक्त वे, पाते अमृत, जीवन-सार।

۲۰ - یہ دیہہ سے جو گن تین ہوتے ہیں پیدا

انہوں سے نیارا نہ ہو ان میں شیدا
جنم مرن سے دکھ جرا سے وہ چھوٹے
کرے پان امرت کو حاصل ہو فائدہ

When the dweller in the body hath crossed over the three qualities,* whence all bodies have been produced, liberated from birth, death, old age and sorrow, he drinketh the nectar of immortality. † (20)

۲۰

گن سب یہ جو تین قسم کے ہیں
باعث جو ظہور جسم کے ہیں
ان کی حد سے اگر نکل جائے
اک محبس سے بشر نکل جائے
پیری اس کو نہ پھر ستائے
پیدا ہو وہ پھر نہ موت آئے
غم سے نہ کبھی ہو سرگرانی
حاصل کرے زیست جاودانی

तीन यही गुण देहसे, जो होते उत्पन्न।
जीव पार कर, दुःखसे, छूट, अमृत सम्पन्न ॥ ३५ ॥
जन्म बुढापा मौतसे, छूटा सर्वथा जीव।
मुक्ति सुखको भोगता, आ-नन्द ले जीव ॥ ३६ ॥

अर्जुन उवाच ।

कैर्लिंगैस्त्रीन्गुणानेतानतीतो भवति प्रभो ॥ किमाचारः कथं चैतांस्त्रीन्गुणानतिवर्त्तते ॥ २१ ॥

दोहा–जिननाशेहैं तीनगुण, ताके लक्षणकौन ।
कैसेवाकेआचरण, तुमसोमोंसुकहोन ॥ २१ ॥

ऐसे सुनिके अर्जुन पूंछतेहैं कि, हे प्रभो ! कौनसे चिह्नोंकरके ईन तीनों गुणोंको उल्लंघनकियाभयाँ होताहै वह कैसे आचरणवालो होताहै और ईन तीनों गुणोंको कैसे उल्लंघन करै ॥ २१ ॥

۲۱۔ جو شخص کہ ان تین گنوں سے گزرا — اس کی پہچان اے مہاراج ہے کیا
کیا کیا وہ کام کرتا رہتا ہے یہاں — کس طرح ہے وہ گنوں سے پار آتا

दोहा–किन चिह्नसों ज्ञात हो गुणातीत नरराय ।
कौन उपायनसों तथा गुणगण जीत्यौ जाय ॥ २१ ॥

What are, O Lord, the marks of Him who has transcended these three Moods? What His behaviour? How comes He to raise Himself above these three. 21

(۲۱)

تارکِ الدُّنیا کا کیسا جادۂ اخلاق ہے
کس طرح اُسکا حسابِ زندگی بیباق ہے

21. What are the marks of him, O Lord,
Who hath beyond the *guṇas* crossed?
What is his conduct, how doth he
Beyond the *guṇas* wend his way?

किन चिन्होंसे गुणातीत हो जन, उसका कैसा आचार ? ।
यह बतलाओ, नर जाता है परे गुणोंसे कौन प्रकार ? ॥

۲۱- پربھو تین گن سے نیارا کوئی
نشان اُن کا کیسا پیارا کوئی
ہے آچار کیسا ہے دیوہار کیسا !!
وہ کرتا ہے کیسے گذارا کوئی

What are the marks of him who hath crossed over the three qualities, * O Lord? How acteth he, and how doth he go beyond these three qualities? * (21)

(२१)

गुणातीत के कौन चिह्न हैं, और कौन उस के आचार ?
तीन गुणों को किस प्रकार वह, कर जाता है प्रभुवर ! पार ?

۲۱

ارجن نے اب ادب سے پوچھا — میرے مخدوم میرے آقا
ہیں دور صفات سے جو انسان — فرمائیے کیا ہے ان کی پہچان
کیا ہیں طور و طریق ان کے — کرتے ہیں جہاں میں کام کیسے
ہے یہ جو صفات کا سمندر — پاتے ہیں عبور اس پہ کیونکر

इन तीनों ही गुणोंको, इसने किया है पार ।
किन चिह्नोंसे जान लें, यह हम हे महाराज ॥ ३७ ॥
कैसा करे व्यवहार वह, अन्य साथियों साथ ।
इन तीनों ही गुणोंको, कैसे तरा इक साथ ॥ ३८ ॥

१४५२

१४

२२-२३-२४-२५

श्रीभगवानुवाच ।

प्रकाशं च प्रवृत्तिं च मोहमेव च पांडव ॥ न द्वेष्टि संप्रवृत्तानि न निवृत्तानि कांक्षति ॥ २२ ॥ उदासीनवदासीनो यो गुणैर्न विचाल्यते ॥ गुणा वर्त्तत इत्येव योवतिष्ठति नेंगते ॥ २३ ॥ समदुःखसुखः स्वस्थः समलोष्टाश्मकांचनः ॥ तुल्यप्रियाप्रियो धीरस्तुल्यनिंदात्मसंस्तुतिः ॥ ॥ २४ ॥ मानापमानयोस्तुल्यस्तुल्यो मित्रारिपक्षयोः ॥ सर्वारंभपरित्यागी गुणातीतः स उच्यते ॥ २५ ॥

दोहा—मोहज्ञानअरुकर्मको, जिनजान्योहियमाहिं ।
चितपायेचाहैनहीं, लहिसुखपावैताहिं ॥ २२ ॥
उदासीनबैठोरहै, सुखदुखचपलनहोय ।
गुणसबकारजकरतहै, जोजानतहैलोय ॥ २३ ॥
सुखदुखकोसमकरिगनै, कंचनमाटीभाय ।
प्रियअप्रियकोतुल्यगति, स्तुतिनिंदाइकदाय २४॥
तुल्यमानअपमानअरु, मित्रशत्रुममताहि ।
सबआरंभनिजोतजै, गुणातीतकहिताहि ॥२५॥

अर्जुनका प्रश्न सुनिके भगवान् कहतेहैं कि, हे पांडुपुत्र! जो पुरुष प्रकाश याने आरोग्यादिक सत्त्वगुणके कार्य और प्रवृत्ति याने रजोगुणके कार्य और मोह याने तमोगुणके कार्य ये जो प्रवर्त होइ तौ इनको नहीं त्याग चाहता है और निवर्त्तभये इनको न चाहता है उदासीन सरीखा स्थित भयाहुआ गुणोंकरके नहीं चलायमान होता है आप आपके कार्योंमें गुण ही वर्त्तमान है

ऐसे जो स्थिर है चलायमान नहीं होता है सुख दुःखमें सम स्वस्थ ठीकरी कंकर पत्थर और सोना जिसके सम है तुल्य है प्रिय अप्रिय जिसके धीर, इसीसे आपकी निंदा स्तुति समान जानता है मान और अपमान तुल्य मित्रशत्रुपक्षमें तुल्य मेरे सेवनादिकबिना सर्वथा-रंभोंका त्यागी सो गुणातीत कहाता है ॥ २२ ॥ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥

दोहा—प्रकाश प्रवृत्ती मोह ये कार्य गुणोंके तात ।
इनसों द्वेष करै न अरु इनको जा न चहात ॥ २२ ॥

उदासीन हो रहत जो तिनसो चलित न होय ।
गुण निज कार्य करैं इह जान न फँसतो जोय ॥ २३ ॥

स्तुति निंदा मृत् कनक प्रिय अप्रिय सुख दुख तात ।
इनकौ सम समझै तथा ध्यानमाहँ हिय लात ॥ २४ ॥

मान मित्र अपमान अरि सम समझै इन जोय ।
जन व्यवहार उदास अरु गुणातीत नर सोय ॥ २५ ॥

The Blessed One replied :

Illumination, act-impulse,
yea, even darkness,—none of these
Does He dislike when cast o'er HIM,
or long for when it goes away. 22

Who dwells as Witness unconcerned
whom Creature-Moods no more can sway,
Aloof in Poise, unmoved by aught,
since "'t is but Nature's Moods that play;"— 23

The SAME in pain and joy, SELF-based;
clod, nugget, stone, the SAME to him;
To things or loved or unloved, *fair*;
poised, blame as lief as praise to Him;— 24

With equal heart in fame and shame,
with equal mind to friend and foe,
Detached from all He undertakes,—
"*Past Moods Arisen*," He is called. 25

(۲۲)

علم و شوق و جہل کے حملوں سے جو ڈرتا نہیں
اور اِن سب سے جدائی کا الم کرتا نہیں

(۲۳)

عالمِ حادث میں جسکو ہے سکوں دائمی
جو صفاتی دور سے جُنبش نہیں کھاتا کبھی

(۲۴)

راحت و کُلفت میں جسکی عقل رہتی ہے بجا
جس کی نظروں میں ہے یکساں آہن و سنگ و طلا
بے تعلّق ہے جو اپنی ہجو اور تعریف سے
کامیابی اور ناکامی مساوی ہے جسے

(۲۵)

پاک ہے جو شوق و نفرت عزّت و توہین سے
تارکِ فعل و صفت اُسکو سمجھنا چاہیئے

22. Who hateth not delusion, light,
Nor energy when these prevail;
Who craveth not for them at all,
O Pāṇḍav, when they've ceased to be,

23. Who seated like one unconcerned,
Is never by the *guṇas* moved;
Who, knowing that the *guṇas* act,
Remaineth firm, immovable,

24. Who's centred in himself,[12] who looks alike
On joy and pain, clod, stone and gold,
On praise and blame, dislikes and likes,
And who with wisdom is endued,

25. Who is the same in fame and shame,
Who treats alike both friend and foe,
His undertakings who resigns,
Is said to have the *guṇas* crossed.

२२

पार्थ ! प्रकाश, प्रवृत्ति, मोह ये हों तो, करे न इनसे द्वेष ।
और न हो तो इनकी मनमें इच्छा तनिक न करे विशेष ॥

२३

कभी गुणोंसे चलित न हो जो उदासीन-सा हो आसीन ।
गुण ही गुणमें वर्त्त रहे, यों जान, रहे स्थिर डिगै कभी न ॥

२४

सुखदुखमें सम, स्वस्थ, जानता तुल्य मृत्तिका, पत्थर, स्वर्ण ।
प्रिय-अप्रियमें तुल्य, धीर, जो निन्दा-स्तुतिमें सम दे कर्ण ॥

२५

जिसे मान अपमान एक हों, सम हो शत्रु-मित्रका पक्ष
काम्य-कर्म-आरम्भ तजे जो गुणातीत वह है नर दक्ष ।

He, O Pandava, who hateth not radiance, nor outgoing energy, nor even delusion, when present, nor longeth after them, absent; (22)

He who, seated as a neutral, is unshaken by the qualities;* who, saying, "The qualities* revolve," standeth apart immovable. (23)

Balanced in pleasure and pain, self-reliant, to whom a lump of earth, a rock and gold are alike, the same to loved and unloved, firm, the same in censure and in praise. (24)

The same in honour and ignominy, the same to friend and foe, abandoning all undertakings—he is said to have crossed over the qualities.* (25)

१४८६

१४
२२-२३-२४-२५

(२२)

करता नहीं द्वेष यदि हो वह, मोह-प्रवृत्ति-प्रकाश-प्रवृत्त;
नहीं करै आकांक्षा उन की, गुणातीत यदि रहै निवृत्त।

(२३)

विचलित नहीं गुणों से होता, उदासीन सम रहै सदैव;
'वर्त रहे गुण' ऐसा समझे, नहीं डुलावै चित्त तथैव।

(२४)

आप रहै थिर अपने ही में, सुख दुख जिसको एक समान;
सम कर देखै मिट्टी, पत्थर, कंचन प्रिय या अप्रिय सुजान।

(२५)

शत्रु-मित्र, अपमान-मान या निन्दा संस्तुति सतत समान;
त्यागी सब धंधों का, उसको गुणातीत कहते विद्वान।

۲۲- ہو پرکاش یا شغل ہو کام کا
نواسی ہو یا موہ کے دہام کا
نہ ہو دویش کیوں ایسی حالت ہوئی
نہیں خیال ہو اس سے اُپرام کا

۲۳- اوداسین کے طور ورتے سدا
گنوں سے اچل ہو نہ ڈرتے سدا
گنوں ہیں یہ گن ورتمان آپ ہیں
سمجھ کر نہ چت میلا کرتے سدا

۲۴- وہ دُکھ سُکھ میں سم بے فکر دیکھ لو
لوہے سونے کو ایک نظر دیکھ لو
پریہ اپریہ میں جو ہے ردھیروان
سماں نندا استت بھی کر دیکھ لو

۲۵- جو مان اور اپمان میں ایک سمان
متر و اور شترو پہ بھی مہربان
جو سب کاموں کو تیاگ دیتے سدا
گن تیت ان کو کریں ہیں پہچان

उजियाला, रुचि, मोहसे, हे पाण्डुसुत वीर !
हुओंसे जो चिढता नहीं, हटोंको चाहे न धीर ॥ ३९ ॥
उदासीन सा जो रहे, गुण नहीं सकें डिगा ।
जिसे, न कांपे, टिक रहे, गुणातीत कहला ॥ ४० ॥

माने गुण ही वर्तते, हैं, नाही मम दोष ।
पुराय लगे भी मुझे न, मैं निर्मल निर्दोष ॥ ४१ ॥

लोहे पत्थर स्वर्णमें, दुःख और सुखमें ।
वर्ते एक समान ही, टीका निजात्मामें ॥ ४२ ॥
बेप्यारे अरु प्रियमें, स्तुति निन्दा निजमें ।
बुद्धिमान रमें एक सा, मैल न ला मनमें ॥ ४३ ॥

यश अपयशमें एकसा, सुहृद दुर्हृदमें समान ।
बैरी मितके पक्षको, भी समझे इकजान ॥ ४४ ॥
आडम्बर सब छोडकर, नये स्वार्थ सब त्याग ।
वर्त्ते जो वह कहा गया, गुणातीत सविराग ॥ ४५ ॥

۲۲

بھگواں رطب فشاں ہوئے یوں — ارجن سے وہ ترزباں ہوئے یوں
جو علم کو رغبت عمل کو — یا ظلمت پرفن و دغل کو
اس وقت برا نہیں سمجھتا — جس وقت بندھا ہو زور ان کا
یا جب ان کا ہو دل میں فقداں — انکی خواہش میں ہو نہ حیراں

۲۳

جو صورت ناظر کشیدہ — رکھتا ہو ترک میں عقیدہ
مضطر نہ صفات سے کبھی ہو — ششدر نہ صفات سے کبھی ہو
جو اس نکتہ سے آشنا ہے — یہ سب چکر صفات کا ہے
ہے یکسوئی سے کام لیتا — دل کو نہیں یوں مچلنے دیتا

۲۴

یکساں جس کو ہیں راحت و غم — جو ہے بے لوث مدحت و ذم
لوہا سونا ہو یا ہو پتھر — سب ہیں جس کے لئے برابر
صورت پیدا بھلائی کی ہو — یا بات کوئی برائی کی ہو
شاد اس سے نہ اس سے مضمحل ہو — رکھتا جو مزاج مستقل ہو

۲۵

جس کو نہ ہو فخر ننگ و ناموس — ذلت نہ کبھی ہو جس کو محسوس
رکھے نہ کسی سے میل یا بیر — یکساں ہوں جسے یگانہ و غیر
افعال میں ہو نہ دخل پندار — خود کو نہ قرار دے جو مختار
اس کی مٹی نہیں ہے برباد — ہے قید صفات سے وہ آزاد

१४
२६ - २७

मां च योऽव्यभिचारेण भक्तियोगेन सेवते ॥ स गुणान्समतीत्यैतान्ब्रह्मभूयाय कल्पते ॥ २६ ॥ ब्रह्मणो हि प्रतिष्ठाऽहममृतस्याव्ययस्य च ॥ शाश्वतस्य च धर्मस्य सुखस्यैकांतिकस्य च ॥ २७ ॥

दोहा--मोकोंजोदृढभक्तिसों, सेवैचितकेचाय ।
सोतीनोंगुणकोलहै, रहैब्रह्मकोपाय ॥ २६ ॥
अर्जुनहौंहीब्रह्महौं, मोह्योमेरोरूप ।
हौंअविनाशीधर्महौ, आनँदपरमअनूप ॥ २७ ॥

जिसवास्ते कि, मरणधर्मरहितै और इसीसे अविनाशी जो ब्रह्म याने मुक्तजीव उसका और सनातन धर्म जो भक्तियोग उसका और मुख्य सुख जो स्वस्वरूपकी प्राप्ति उसका मैं आधार हौं इसीसे जो अखंडित भक्तियोगकरके मेरेको भजता है सो इन गुणोंको उल्लंघने करके मेरी समताको प्राप्त होता है॥२६॥२७॥

इति श्रीमत्सुकुलसीतारामात्मजपंडितरघुनाथप्रसादविरचितायां श्रीमद्भगवद्गीतामृततरंगिण्यां चतुर्दशाऽऽध्यायप्रवाहः ॥ १४ ॥

۲۶- سچی بھگتی سے جو کہ میری طاعت کرتا ہے۔ نہ ہو غیر کی جس میں شرکت
وہ بھی حد سے گنوں کی جاتا ہے گزر پد برہم کا پانے کی ہے اسمیں طاقت

۲۷- ارجن میں ہی ہوں برہم کی جائے قیام اور امرت کی جو بے تغیر ہے مدام
میں ہی ہوں قدیم دھرم کا مسکن بھی میں ہی ہوں سرور بے نہایت کا مقام

दोहा--भक्तियोगसों करत है मम उपासना जोय ।
जीत गुणनको जात है परम धामको सोय ॥ २६

दोहा--अव्यय अमृत हि जीवको धर्म सुखनको तात ॥
मैं आश्रय तासों मम भक्त रूप निज पात ॥ २७ ॥

26

And whoso gladly bears My Yoke
of partless Love, that knows none *else*,
Past these three Moods arising, free,
is fatally transformed to BRAHM.

For in my heart is Brahma shrined.

the Deathless and Unchanging ONE;
There, too, Eternal Right, and J o y
that knows no cause outside Itself.

(٢٦)

عشقِ صادق سے جو مجھ پر جان کرتا ہے نثار
اُسکی حق تک ہو رسائی قلزمِ باطل کے پار

(٢٧)

ظلمتِ ہر دو جہاں میں جلوہ گر ہے میرا نور
مظہرِ قانونِ قدرت منبعِ علم و سرور

26. And whoso serveth Me alone,
With *Yog* of love unfailingly,
He going past the *guṇas* three
Is fit to be transformed to Brahm.

27. For in Me is the dwelling place
Of Brahm, the Changeless, Deathless One,
And of Eternal Righteousness,
And of the Bliss that never wanes.

२६

एकनिष्ठ जो भक्ति-योगसे मुझको भजता है दिनरात
गुणातीत होकर वह मानव मिलता ब्रह्मरूपमें तात !

२७

अव्यय अमृतस्वरूप ब्रह्मकी भारत ! मुझे प्रतिष्ठा जान !
शाश्वत धर्म तथा ऐकान्तिक सुखका भी मैं ही हूँ स्थान ॥

१५०२

१४
२६ – २७

(२६)

भक्ति-योग से सतत भजै जो, मुझ को मेरा भक्त अनन्य;
योग्य ब्रह्म-भाव के होता, पार करै वह सब गुण अन्य।

(२७)

अमृत, अव्यय-ब्रह्म और मैं, शाश्वत-धर्म-शास्त्र का ज्ञान;
एकान्तिक सुख की मैं ही हूँ, सदा प्रतिष्ठा बुद्धिनिधान।

۲۶- مجھے جو دہیاوے اٹل پریم سے
وسمرین انن بھگتی کے نیم سے
گناتیت ہو کر وہ میرے بھگت
برہم بہاؤ اُن کو تو آخر ملے

۲۷- میں ہوں بلو جسنے یوگ سب سے بڑا
امر پد نراکار سُکھ سے بھرا
میرے دہیان سے سُکھ اکھنڈت ملے
سناتن دہرم کا ہوُں میں آسرا

And he who serveth Me exclusively by the Yoga of devotion, he, crossing beyond the qualities,* he is fit to become the ETERNAL. (26)

For I am the abode of the ETERNAL, and of he indestructible nectar of immortality, of immemorial righteousness,* and of unending bliss. (27)

एक ही से जो प्राप्य सुख, धर्म सनातन नित्य ।
अविनाशी ब्रह्म अमर जो, मैं सबकी स्थिति नित्य॥४६

अत: जो मुझको सेवते, भक्तियोगको धार ।
नहीं ध्यान करें अन्यका, कर जायसे गुण वे पार ॥४७॥

ब्रह्मानुभव समर्थ हों, ब्राह्मी स्थिति समर्थ ।
इन त्रय गुणको पार कर, बन जाय ब्रह्म यथार्थ ॥४८॥

—

۲۶

میرا ہی جو صرف ہے پرستار — رہتا نہیں غیر کا طلب گار
جیتا ہے جو میری آرزو میں — مرتا ہے جو میری جستجو میں
دل قید صفات سے ہٹا کر — ان پر کامل عبور پا کر
بنتا ہے مرے کرم کا حقدار — پاتا ہے وصال آخر کار

۲۷

سر چشمہ آبِ زندگانی — ہوں میں ہی وہ ذاتِ جاودانی
مُجھ سے جلوہ عیاں ہے اس کا — مُجھ سے پیدا نشاں ہے اس کا
نیک اعمالی کا پاک مخزن — ہوں دھرم کا لازوال مسکن
شکل آرام ہے مجھی سے — تسکین دوام ہے مُجھی سے

٩٧٥٠٤

چودھواں ادھیاے گیان تیت یوگ

یعنی

علم و عمل و جہل کی تعریف

59

جو انسان ہین مہذب اہل اخلاق — وہی ہین علم و فضل و عقل مین طاق

وہ جب رخصت ہون دنیا کے چمن سے — رہین دایم بری آواگون سے

ہی ایرم بار پرمیشر کی مایا — اُسی نے ساری خلقت کو بنایا

وہی ہی ذات پیدایش کی طاقت — وہی ہی لطف و آسایش کی طاقت

پدر ہی ذاتِ خالق ہی صفت ماں — ہین پیدا سب اُنھین سے جن و انسان

ستوگن بھی رجوگن بھی تموگن — ہوئے مخلوق مایا ہی سے ارجن

یہی گن جیو کو تن مین کرین بند — جو ابناشی ہی اے مردِ خردمند

ستوگن مین فضیلت علم کی ہی — رجوگن مین امیدِ دنیوی ہی

تموگن مین نمایان ہی جہالت | زبون ہی اس سے ہر انسان کی حالت
ستوگن کی لطافت ہی وہ پُر نور | کہ دل سے ظلمتِ کلفت رہے دُور
ہی پابندی ستوگن کی غنیمت | کھُلی ہی علم سے جسکی حقیقت
رجوگن مین ہی خواہش سر سے پا تک | عمل پہونچے حدِ حرص و ہوا تک
بھری ہین خواہشین جسکے عمل مین | دبا ہی حرص کا بستہ بغل مین
نتیجے کے صلے مین کام کرنا | ہی راہِ معرفت سے در گذرنا
رجوگن کے جو بندے ہین جہان مین | پھنسے ہر دم ہین دایم این و آن مین
تموگن جہل و غفلت سے ہو پیدا | رہے وہ نخوت و شہوت پہ شیدا
ستوگن ہی وہ شی جس سے ہو آرام | نہین اُسکو غم و تشویش سے کام
رجوگن سے ہو کامون کی ضرورت | تموگن سے نمایان ہو کدورت
ہون جب دروازے سب روشن بدن کے | جمین سکّے وہین انتہ کرن کے
جو یہ سان مفیدِ عام ہونگے | ستوگن کے موافق کام ہونگے
جو ہو کرم اندری کا لطف پھیکا | بڑھیگا مرتبہ گیان اندری کا
جز و کل کی جو حالت سے ہی آگاہ | نظر آئیگی مطلب کی اُسے راہ
جو یہ آثار اچھّے ہون نمایان | تو پابندِ ستوگن ہی بس انسان
ستوگن پر جو ہو انسان غالب | بر آئین اُسکے دل کے سب مطالب
پس مردن وہان اُسکا گذر ہو | جہان ذاتِ الٰہی جلوہ گر ہو
رجوگن والا شایق کرم کا ہو | پس مردن اُسی مین مبتلا ہو
جو کرمون مین ہی شامل فکر و تدبیر | رہا کرتا ہی انسان اُن سے دل گیر

تموگن والا ہو کاہش کا طالب
پس مردن ملے حیوان کا قالب

ستوگن سے ہو اونچا گیان کا کوہ
رجوگن سے ہو پیدا لوبھ اور موہ

تموگن سے ہوں پیدا جہل و نخوت
بشر بدنام ہو جنکی بدولت

ستوگن کی نمایاں ہے بلندی
اسے حاصل ہے لقدِ ارجمندی

پسِ مردن رجوگن کی بدولت
بشر کو پھر ملے انسان کی صورت

رہے آواگون حاصل بشر کو
نہ کچھ پروے پرو فعلوں کے اثر کو

تموگن والا مر کر جب ہو پیدا
تو پھر بھی ہو بدافعالی کا شیدا

جس انسان ذکی کا یہ یقین ہے
کہ وہ افعال کا فاعل نہیں ہے

تو بیشک گیان کا دل میں عمل ہے
نہ ان تینوں گنوں کا کوئی پھل ہو

جو ان تینوں گنوں سے دور ہو جا
وہی کامل وہی مسرور ہو جائے

نہ خوفِ مرگ سے اُسکو الم ہو
نہ اُسپر ناتوانی کا ستم ہو

کہا ارجن نے دل آنکر ہی مجبور
یہ ان تینوں گنوں سے کون ہے دور

ہے کیا صورت جو تینوں سے بری ہے
بس اس منزل میں بھی کچھ رہبری ہے

کہا بھگوان نے ہو گیان جسکو
نہ ہو تینوں گنوں کا دھیان جسکو

اُسے ہو انکی قیدوں سے رہائی
وہ آئینہ ہی ہو جس میں صفائی

لئے جاتے ہیں جو انسان سے کام
نہ اُن پر ہو فدا مرد خوش انجام

غم و راحت کا یکسان ڈھنگ سمجھے
برابر شانِ لال و سنگ سمجھے

برابر سمجھے حالِ یار و اغیار
نہ ہو اعزاز دنیا کا طلب گار

نہ اُلفت ہو نہ نفرت ہو کسی سے
نہ کاہش ہو نہ رغبت ہو کسی سے

ادھیاے چہاردہم ترگن بہباگ نام

کنوں آں سخن بر زباں از دلست — کہ بالاتر از وے سخن مشکل است
کہ ایں سخن ہر کہ دریافت است — ز دریاے معنی گہر یافت است
چو من فارغ از زادن و مردنست — دلش پاے دست آوردنست
نہ ایں نہ دیگاں دو گر ہر چہ ہست — بقید نگہ آنکس کہ ایں نفس بست
بہ ہستی کو تخم ز ان من است — جہاں جملہ زیں ازان من است

ہیاسہ گن شد زما آنخت — کہ زو گشت بنیاد عالم درست
صفاے ستوگن چو آئینہ دان — از و ہست تسکین آرام جان
ہماں دانش و معرفت میدہد — کہ انسان ز آمد شدن وا رہد
رجوگن ہمہ تن تمنا بود — از و کار کردار پیدا بود
تموگن بود موجب غافلی — از و سر زند جاہلی کاہلی
ازیں ہر سہ گن ہر کہ زور آورد — سر آدمی را بشور آورد
دلش را دہد میل اوصاف خویش — برد کار خود را بہر رنگ پیش
اگر ستو بود بخشد آرام جاں — دگر رج ز کردار ہا کام جاں
تم آرد گراں خواب بیدانشی — کہ او ہست اسباب بیدانشی
اگر در ستوگن بود جاں کسے — بھوت گہم میرسد آں کسے
اگر جاے او در رجوگن گذاشت — بقعہاے نیکاں علم بر فراشت
دگر در تموگن گذشت از جہاں — بود داخل زمرۂ ابلہاں
ستوگن بباید بکردار نیک — کہ کارے بنا شد بہ از کار نیک
ز رج بر سر آید بلاے عظیم — کشد از حکومت خجالت عظیم
تموگن کند بے خرد مرد را — کہ نشناسد آں جوہر فرد را
ز ستوگن شود عارف حق شناس — رجوگن کند طامع بیقیاس
تموگن کند مست دیوانہ اش — بہ بیدانشی سازد افسانہ اش
بود میل اول بطرف علا — میانہ بود محو حرص و ہوا

تموگن بہ تحت الثرے می برد
ببین از کجا تا کجا می برد

ازیں ہر سہ آنسو منم جان من
بگفتم حقیقت بہ بین شان من

ازیں ہر سہ ہر کس جدا میشود
ندا اشنا درست او جدا میشود

بگفتا کہ اے رفتہ تو ہمہ
عزیزان خبر گر نفتہ تو ہمہ

ازیں ہر سہ گن ہر کہ وارستہ است
دلی خود نگیستے تو بستہ است

چناں دانش چوں لتکلی شوم
دریں راہ تا پا بپایش روم

بگفتا ہر آنکس کہ آزادہ است
بہر جا بیک جلوہ دلدادہ است

بنالد ز ایصال مطلوب او
بنالد ز حرمان مرغوب او

مساوی بود ہشت او دہر کہیں
ز شادی نہ شادان از غم نہیں

بہ اندازہ گن با تغیر بود
نگہ مسکنت گہ تکبر بود

بہ تحریک آنہا زجا کم رود
کہ ایں رہ بدل آشنا کم رود

تعلق ندارد بکار جہاں
غریبی بود در دیار جہاں

زر و سیم لعل و در و خاک سنگ
برابر بہ بیند چو آفت رنگ

بماند ترا بو تحفہ ابر ہرا
بہر رنگ در جلوہ داند مرا

ندارد عزت افتخارش بود
نہ از ذلت خویش عارش بود

بود دامنش پاک از مدح و ذم
بیک حال باشد بمہر و ستم

شمارش بود بہ دیاری ہمہ
بود کار او حق گذاری ہمہ

بکار سے جہاں دلبری کم کند
ازیں وانگہہ خاطرش رم کند

کن آمیتہ نامی چنیں کس بود
غرض آدم خوب آنکس بود

کہ ہست از با دمن صبح و شام
کشیدہ ست مینانہ ام را تمام

منم صورت و معنی ذات پاک
چو مینایم دریں مشت خاک

منم کو ہمہ تن بخجات آمدہ
بیک ذات در صد صفات آمدہ

منم دین مستحکم و بیزوال
منم آں کمال کہ بشکال

من آں نام آرام آں خلوتم
کہ از خلوت آوردہ در جلوتم

گیتا کے ادھیائے چہاردہم کا مہاتم

کسی جا ایک راجہ تھا خردمند
رہا کرتا تھا ہر دم شاد و خرسند

وہین اک راجہ سنگدیپ کا تھا
عقیل و زیرک و اہل وفا تھا

جو اُس راجہ کو تھی اُس سے محبت
تو تحفہ بھیجا کچھ از راہ الفت

وہان راجہ براہ نکتہ دانی
ہوا سنجیدہ رہین مہربانی

وزیرون سے کہا ہو کر مخاطب
مجھے ہی کون شی دینا مناسب

یہی ٹھہرا کہ دو کتے شکاری
وہان بھیجو براہ انکساری

غرض یون ہی ہوا تعمیل ارشاد
کیا تحفہ روانہ بادل شاد

ہوا وہ راجہ اِس تحفہ سے مسرور
قبول اُسکو کیا بس حسب دستور

شکاری جانور پائے جو فی الفور
چلا راجہ سوئے صحرا بصد غور

کسی سے شرط یہ ٹھہری سر دست
کہ دیکھین کسکا کتا ہی زبردست

غرض جنگل مین اک خرگوش آیا
شکار تازہ کتے کو دکھایا

یہ جھپٹا وہ اُدھر بھاگا اُچک کر
گرے اک غار مین وہ دونون تھک کر

جو تھا لبریزِ آب تر سے وہ غار
ہوئے غرق اُسمین جا کر چار ناچار

تو اُن دونون نے چھوڑا قالب خاک
میانِ سُرگ پہونچے بادل پاک

گیا راجہ برائے جستجو وان
تو آ پہونچا گلِ مطلب کی بو وان

یہ دیکھا آنکھ سے دونون ہین بیجان
ہوا راجہ نہایت دل مین حیران

وہان اک برہمن تھا نیک افعال
ہوا یون راجہ اُس سے اہلِ اقبال

گئے بیکنٹھ کو کیونکر یہ حیوان
عیان کر ہم سے یہ اسرار پنہان

کہا اُس نے براہِ نکتہ دانی
جو ہی اِس غار مین لبریز پانی

گرو میرا تھا اُس مین پانون دھوتا
کثافت جو تھی اُس پانی مین کھوتا

پڑھا کرتا تھا گیتا بادلِ شاد
اُسے بس چودھوان ادھیا تھا یاد

کہا تو جنم سابق کا سن احوال
برہمن تھا یہ خرگوشِ نکو فال

مگر یہ مادۂ سگ برہمن تھی
کثیف و خوار و اہل مکر و فن تھی

دیا شوہر کو اپنے ایک دن زہر
اجل آ پہونچی سر پر صورتِ قہر

غرضِ بعد اُس کے زن بھی مر گئی صاف
کنارہ اِس جہان سے کر گئی صاف

ہوا انصاف انکا از رہ ہوش
کہ سگ یہ اور وہ شوہر ہو خرگوش

سنین گیتا نہ جب تک برہمن سے
نہ ہون آزاد یہ آواگون سے

غرض وہ ہی یہ راجہ وقت آیا
کہ نقدِ کست اُنھون نے صاف پایا

غرض راجہ کے دل مین آگیا گیان
سدا گیتا کے پڑھنے کا کیا دھیان

چودھویں ادھیاے کا خلاصہ

۱۔ پیدائش عالم۔ تیرھویں ادھیاے میں آتما کو اکریا کہا گیا۔ اور پرکرتی میں تمام کریا بتائی گئی۔ اس ادھیاے میں پرکرتی کے تینوں گنوں کی تشریح ہے۔ اور یہ بتایا گیا ہے۔ کہ تمام کام انہیں تینوں گنوں میں ہوتے ہیں +

(ا)۔ اوّل اس بدیا کی تعریف کرتے ہیں۔ اور کہتے ہیں کہ یہ گیان سب سے اعلےٰ ہے۔ منی لوگ اسے پاکر سدھی کو پہونچے ہیں۔ جو اس بدیا کا سہارا لیتے ہیں۔ اُن کے اوصاف میرے سے ہو جاتے ہیں۔ اور آواگون سے چھوٹ جاتے ہیں +

(ب)۔ وہ بدیا یہ ہے۔ کہ جڑ اور چیتن کے میل سے جگت پیدا ہوتا ہے۔ جو ملا ہے اسے چیتن یعنی اس کا حاکم اور منتظم میں ہوں +

۲۔ پرکرتی کے تین گن۔ ان کے نام ستوگن۔ رجوگن اور تموگن ہیں۔ تمام کام ان میں ہوتے ہیں۔ آتما گیان سروپ ہوا کرتا ہے۔ لیکن انادی اگیان کے باعث اپنے کو کرتا مان کر اور گنوں کے بس میں آن کر باندھا جاتا ہے +

۳۔ گنوں کے خاصے۔ ان کے متعلق مندرجہ ذیل باتیں یاد رکھنی چاہئیں:-

(ا)۔ ستوگن میں صفا اور نور ہے۔ اس واسطے آتما کو سکھ اور گیان کے تعلق سے باندھتا ہے۔ رجوگن کی ماہیت خواہش ہے۔ اور تعلق و طمع سے پیدا ہوتا ہے۔ یہ کام کے علاقے سے آدمی کو باندھتا ہے۔ تم اگیان سے پیدا ہوتا ہے۔ اور اس کا کام آدمی کا موہنا ہے۔ یہ خواب غفلت اور

موہ کے علاقے سے انسان کو باندھتا ہے +

(ب) سکھ میں ستو کا غلبہ ہوتا ہے۔ اعمال میں رج کا۔ اور غفلت میں تم کا۔ ہر ایک گن باقی دو کو دبا کر غلبہ پایا کرتا ہے +

(ج) غلبے کی پہچان یہ ہے۔ کہ بدھی۔ من۔ اندریوں میں جب پرکاش کا زور ہو تو ستو کا غلبہ جانو۔ لالچ۔ مصروف رہنے۔ کام کرنے۔ بے چینی اور خواہش میں رج کا غلبہ جانو۔ آلکس غفلت۔ موہ میں تم کا غلبہ جانو +

(د) ستو کے غلبے میں آدمی مرے تو اونچے لوکوں میں جاتا ہے۔ رج کے غلبے میں مرے تو انسانی چولے میں۔ اسی دنیا میں کام کرنے والوں کے گھر پیدا ہو کر دکھ سکھ بھوگتا ہے۔ اور تم کے غلبے میں مرے تو جانوروں میں پیدا ہوتا ہے +

(ہ)۔ ساتوک اعمال کا پھل اچھا ملتا ہے۔ راجسک کا دُکھ ہے۔ تامسک کا اگیان ہے۔ کیونکہ ستو سے گیان پیدا ہوتا ہے۔ رج سے طمع۔ اور تم سے اگیان نتیجہ یہ ہے۔ کہ ستو والے اونچے جاتے ہیں۔ رج والے بیچ میں رہتے ہیں۔ تم والے نیچے گرتے ہیں +

۴۔ گنوں کی حد سے باہر آنے کا نتیجہ۔ تمام کاموں کے کرنے والے گن ہیں۔ آتما محض گیان سروپ ہوا کرتا ہے۔ جو شخص یہ الوکھ کے گنوں کے احاطے سے باہر آجاتا ہے۔ وہ ترگناتیت کہلاتا ہے۔ انہیں کو بقائے ابدی یا موکش ملتی ہے +

۵۔ ترگناتیت جیون مکت کے لکشن۔ ارجن ترگناتیت کے اوصاف پوچھتا ہے۔ اور بھگوان یہ جواب دیتے ہیں:-

(ا) علم۔ شوق کار۔ اور غفلت کا جب ظہور ہو۔ تو اُن سے جو نفرت نہ کرے۔ اور جب یہ گر جائیں تو یاد کر کے خواہش نہ کرے۔ بلکہ محض لاتعلق بیٹھا ہے۔ گنوں

سے جدا گمان نہ ہو - اور یہ سمجھے کہ گُن گُن کام کر رہے ہیں - میں اسنگ آتما ہوں - وہ ترگن اتیت ہے +

(ب) جو ایسا شانت اور حلیم المزاج ہے - کہ سُکھ دُکھ - تعریف وملامت دوست و دشمن سب کو یکساں نظر سے دیکھتا ہے - وہ ترگناتیت ہے +

(ج) جو مجھ میں بلا شرکت غیرے بھگتی رکھتا ہے - وہ ترگناتیت کا درجہ پاکر برہم پد کو پہنچتا ہے - کیونکہ میں برہم روپ ہوں +

تصویر نمبر ۱۴ نظامِ قدرت

اس میں عملی تثلیث کا مفصل بیان ہے یعنی نظامِ قدرت میں نو طاقتیں اپنا اپنا کام کر رہی ہیں

چُنانچہ اہلِ ہند نے انہیں نو دُرگا موسوم کیا ہے۔ شارکا کُرّۂ خاکی۔ راگیا کُرّۂ آبی جوالا کُرّۂ آتشی۔ چنڈی کُرّۂ ہوائی۔ کالکا وُسعتِ خلہ۔ بھوانی کشورِ دل۔ سرسوتی حیطۂ عقل اور ساوتری دائرہ پندار پر حکومت کرتی ہے۔ نویں اور سب سے اعلیٰ طاقت کا نام اُما ہے جو رُوحانیت کی مالک ہے۔ یہ نو طاقتیں صفتِ سہ گانہ کے باہمی ترکیب اور کمی بیشی سے وجود میں آئی ہیں۔ اِس مسئلہ کی بموجب ہندوستان کے مختلف حصوں میں شاکت مت کا نفاذ ہوا۔ اس تصویر میں شکتی یعنی ارادتِ ازلی کا منظر دکھایا گیا ہے۔
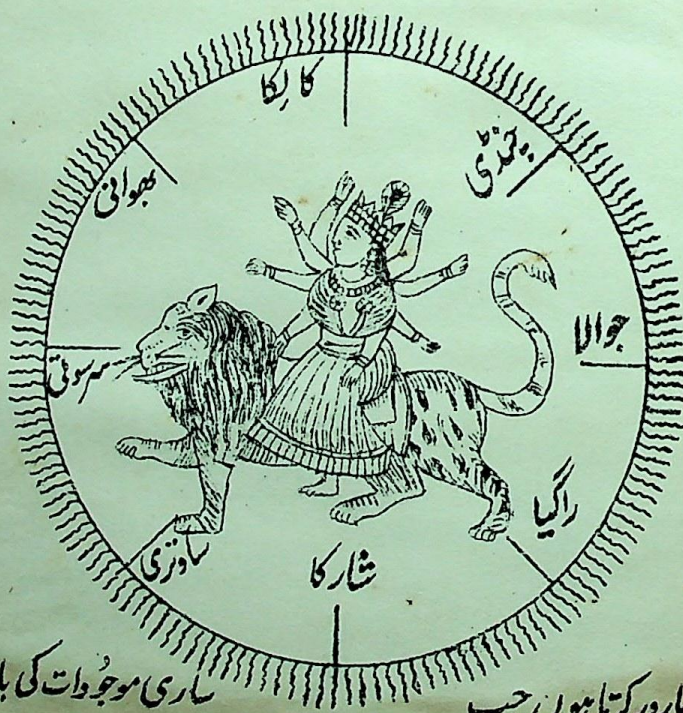
تصویر نمبر ۱۴

نظامِ قدرت

کالکا

چنڈی

بھوانی

جوالا

سرسوتی

راگیا

ساوتری

شارکا

اپنی قدرت کے شکم کو بارور کرتا ہوں جب ساری موجودات کی بالیدگی ہوتی ہے تب

ओ३म्

श्रीमद्भगवद्गीता

पुरुषोत्तम योग - अध्याय ॥१५॥

पृष्ठ १५१७ से १५६८ तक

१५२०

श्रीनन्दनयनानन्दं यशोदानन्दकन्दुकम् ।
गोगोपगोपिकागोपं राधानाथं नमाम्यहम् ॥

9429

پندرھواں ادّھیائے

پرشوتم یوگ یا ماہیّت ربّ اکبر

چودھویں ادّھیائے میں بھگوان نے یہ بتایا ہے۔ کہ تمام کرم پرکرتی کے گنوں میں ہوتے ہیں۔ اور آتما گیان سروپ ہونے کی وجہ سے اکرتا ہے۔ جو اس طرح اپنے آپ کو اسنگ اور اکرتا دیکھتا ہے۔ اور سمجھتا ہے۔ کہ گن گنوں ہی کا م کر رہے ہیں۔ وہ ترگناتیت یعنی تینوں گنوں کی حد سے گزر جاتا ہے۔ اور جیون موکش پدوی یعنی برہم پد پاتا ہے۔ ساتھ ہی یہ بتایا۔ کہ جو بلا شرکت غیرے بھگتی سے مجھے بھجتا ہے وہ بھی ترگناتیت ہو جاتا ہے۔ یہ ادّھیائے اسی بات کی تشریح ہے۔ اسمیں بھگوان اپنا شُدھ روپ بتا سکتے ہیں۔ ارجن حیران ہے۔ کہ کرشن انسانی چولے میں ہیں۔ انہیں سمجھنے سے کوئی برہم پد کو کیونکر پہنچ سکتا ہے اس لئے کوئی سوال نہیں کرتا۔ دیالو بھگوان خود بحث اٹھاتے ہیں۔ پہلے سنسار کا روپ دکھاتے ہیں جو تبدیلی پذیر ہے۔ بعد میں اپنے کو شُدھ برہم روپ بتاتے ہیں:-

१५
१

श्रीभगवानुवाच ।

ऊर्ध्वमूलमधःशाखमश्वत्थं प्राहुरव्ययम् ॥ छंदांसि यस्य पर्णानि यस्तं वेद स वेदवित् ॥ १ ॥

दोहा--ऊरधजरशाखातरे, अविनाशीअश्वत्थ ।
देवपुत्रजोजानई, सोजानैसबअर्थ ॥ १॥

तेरहवें अध्यायमें क्षेत्ररूप प्रकृति और क्षेत्रज्ञ पुरुष याने जीव इनका स्वरूप कहा शुद्धजीवात्माकेभी प्रकृति संबंधी गुणोंके प्रवाहनिमित्त देवादिक आकारसे परिणामको प्राप्तभई जो प्रकृति उसका संबंध अनादि कहा चौदहवें अध्यायमें कहा कि, इस जीवको जो कार्य और कारण अवस्थानमें यह गुणसंगप्रवाहमूलप्रकृतिसंबंध सो भगवान्हीने कियाहै ऐसेकहिके विस्तारसहित गुणसंग प्रकारको कहिके कहा कि, गुणसंगनिवृत्तिपूर्वक स्वस्वरूपकी प्राप्ति भगवद्भक्ति मूलही है. अब पंद्रहवें अध्यायमें जो भजने योग्य भगवान् आपके कल्याण गुणादिको करके बद्धमुक्त दोनों प्रकारके जीवोंसे विलक्षण (न्यारे) उनको पुरुषोत्तमत्व कहनेको जो यह बंधन आकारसे विस्तरित प्रकृतिका परिणाम विशेषसंसार उसको पीपरवृक्षरूपकल्पित करके श्रीकृष्णभगवान् बोलतेभये कि, जिसके वेद पत्ते अर्थात् जैसे पत्तोंकरके वृक्ष बढताहै तैसे यह संसाररूप वृक्ष वेदोक्तकर्म करके बढताहै इससे वेद पत्तारूप हैं ऊर्ध्वमूल याने सत्यलोकमें ब्रह्मा जिसका मूल है अधःशाख याने सत्यलोकसे नीचे जो देव मनुष्य कीट पतंगपर्यंत शरीर ये उसकी शाखा हैं ऐसा अव्यय याने सम्यक् ज्ञानप्राप्ति होनेसे प्रथम अज्ञानदशामें प्रवाह रूप करके छेदनेके अयोग्य इसीसे अज्ञानीके अविनाशीहै ऐसा इस संसारको अश्वत्थ याने पीपरवृक्षरूप श्रुति कहती है तिसको जो जानतेहैं सो वेदका जाननेवालाहै अर्थात् वेद इस संसारके छेदनेका उपाय कहता है तो जो इसको जानैगा तौ छेदनेकाभी उपाय जानैगा इससे वह वेदजाननेवालाहै ॥ १ ॥

दोहा—जड ऊपर शाखा अधः वृक्ष=सँसार अछेद । वेद पत्र तिसके, तिसै जानत, जानै वेद ॥ १ ॥

1. With shoots below and roots above,
'Tis said the deathless *Pipal* [1] grows—
Its leaves are hymns: who knoweth it
Is in the Veds most truly versed.

ऊर्ध्व मूल हैं, शाखा नीचे, अविनाशी, अश्वत्थ स्वरूप;
पत्ते छंद, वेद वेत्ता ही समझें इस का यह रूप।

ROOT up, with branches downward spread, 1
this changeless World-Tree stands, they say;
Its leaves, the myriad Rhythms [of Life,] —
whoso knows *this* is Véda-Know'r.

जड़ ऊपर शाखाएँ नीचे ऐसा अव्यय पीपल एक।
वेद पत्र हैं जिसके, ऐसा जाने उसको वेद-विवेक॥

With roots above, branches below, the Asvattha is said to be indestructible; the leaves of it are hymns; he who knoweth it is a Veda-knower. (1)

ऊपर जड नीचे तना, परमात्मा–अव्यक्त।
उस अविनाशी वृक्षका, कहा विचित्र सुव्यक्त॥१॥

कल तक रहे न आजसा, सुवृक्ष संसार।
उसकी नश्वर वस्तु सब, ढक रहीं रूप अपार॥२॥

छन्द पर्ण इस ही लिये, कही गईं वे सब।
पतनशील पत्ते बनीं, छन्द आवरक सब॥ ३॥

ऐसे जो उस वृक्षको, जाने, जाने वेद।
कहलावे वेदज्ञ वह, सो जाने जग भेद॥ ४॥

بھگوان نے اب یہ راز کھولا — لافانی ہے شجر اک ایسا
وسعت نہیں جس کی کچھ مقرّر — شاخیں نیچے ہیں جڑ ہے اوپر
ہے ہر صورت سے یہ برومند — پتّوں کے بجائے اس میں ہیں چھند
جو کنہ سے اس کی ہے خبردار — ویدوں کے وہ جانتا ہے اسرار

अधश्चोर्ध्वं प्रसृतास्तस्य शाखा गुणप्रवृद्धा विषयप्रवालाः ॥ अधश्च मूलान्यनुसंततानि कर्मानुबंधीनि मनुष्यलोके ॥ २ ॥

दोहा—गुणसींचीशाखाबढी, विषयापल्लवभाय ।
जरफैलीकर्मनिबँधी, मनुजलोकमेंआय ॥२॥

अब उस संसारवृक्षकी औरभी विलक्षणता कहते हैं जैसे कि सत्त्वादिगुणोंकरके बैढीभई और शब्दादिक विषय जिनके प्रवाल थाने कोंपर याने जो नये एक दिन के निकसेभये पत्ते वैसे पत्ते जिनके विषयहैं ऐसी उस वृक्षकी शाखैं नीचे मनुष्यलोकमें और ऊपर देव गंधर्वादिलोकोंमें फैलरहीहैं अर्थात् नीचकर्मसे नीचे मनुष्योंसे भी नीच पश्वादिशरीर ऊपर उत्तमकर्मसे उत्तम देवादि शरीररूप शाखैं फैलरहीहैं नीचे मनुष्यलोकमें भी उसकी कर्मानुसारी मूलें फैलरहीहैं अर्थात् मनुष्यलोकमें जो ऊंच नीच कर्म वही मूलरूपहैं ऊंच नीचपदवी कर्मविना नहीं कर्म मनुष्यशरीरविना नहीं होताहै ॥२॥

Both upwards and downwards its branches spread out, 2
By Nature's Moods fed, sprouting sense-objects forth;
While other roots, feeling their way down to Earth,
Are made fast to action in Man's World out here.

2. Upwards and downwards,[2] *guna*-fed,[3] its leaves
Which have sense-objects for their buds, extend,
And downwards in the world of men are stretched
Its many roots which are the bonds of deeds.[4] ||

۲ شاخیں پھیلی ہیں اس کی اوپر نیچے بڑھتی ہیں گنوں سے اور انکریں نیچے
نیچے بھی پھیلی - جڑیں ہیں ساری دنیا میں سے کرموں کا تعلق ان سے

दोहा—तिस शाखा ऊपर अधः विषयपत्रयुत जाय (फैलरहीहै) ।
कर्मरूप जड भूमिमें फैलरही बहुताय ॥ २ ॥

(۲)
جسکے ہر سو شاخ و غنچہ ہیں خواص اور لذتیں
حلقۂ دام عمل ہیں جسکی آویزاں جڑیں

(२) 9

नीचे ऊपर शाखाएँ हैं, प्राप्त गुणों से करतीं वृद्धि;
विषय कोपलें मृत्यु लोक में, कर्म-बन्ध जड़ हुईं विवृद्धि ।

Downwards and upwards spread the branches of it, nourished by the qualities *; the objects of the senses its buds; and its roots grow downwards, the bonds of action in the world of men. (2)

12

२ 7

फैली हुई है अधऊर्ध्व शाखा पली गुणोंसे विषयाङ्कुरा जो ।
कर्मानुबन्धी उसकी जड़ें भी नृलोकमें आ, गहरी गड़ी हैं ॥

۲

4

اوپر نیچے تمام اس کی شاخیں ہیں قریب و دور پھیلی
لذّات میں ہے شگوفہ کاری کرتی ہیں صفات آبیاری
نیچے کی طرف جڑیں جھکی ہیں پابند ان سے سب آدمی ہیں
انسانوں میں بشکلِ افعال پھیلا ان کا ہے چارسو جال

10

ऊपर नीचे फैलतीं, उसकी टहनी अनन्त ।
वस्तुबीज जो बढ रहीं, त्रय गुण जलसे अनन्त ॥५॥

शब्दादि इन्द्रिय विषय, कोपल सूक्ष्म पहिचान ।
मानव जन्मके कर्मको, जड निचलीं तू जान ॥ ६ ॥

नीचे नीचे फैलतीं, बन रहीं बन्धन दृढ ।
मूल जन्म अरु मृत्युका, कारण बनीं सुदृढ ॥७॥

(2)

न रूपमस्येह तथोपलभ्यते नान्तो न चादिर्न च संप्रतिष्ठा ॥ अश्वत्थमेनं सुविरूढमूलमसंगशस्त्रेण दृढेन छित्त्वा ॥ ३ ॥ ततः पदं तत्परिमार्गितव्यं यस्मिन्गता न निवर्तन्ति भूयः ॥ तमेव चाद्यं पुरुषं प्रपद्ये यतः प्रवृत्तिः प्रसृता पुराणी ॥ ४ ॥

दोहा—आदिअंतनहिंजाहियै, थानरूपनहिंजाहि ।
दृढअसंगहथियारलै, दुसहमूलतरुढाहि ॥ ३ ॥
चाहकरैताठौरकी, फिरैनजाकोपाय ।
सृष्टिभईजापुरुषते, ताकीशरनसुजाय ॥ ४ ॥

इस संसारवृक्षका इसलोकेमें जैसा कहाहै तैसा रूप अज्ञानीजनों करके नहीं जाननेमें आताहै न उसका अंत और न आदि और न स्थिति जाननेमें आतीहै ऐसे दृढमूलें इस पीपर वृक्षको अतिदृढ वैराग्यरूपे शस्त्रसे छेदन करके फिर जिससे यह प्राचीन प्रवृत्ति याने गुणमय भोगरूप संसारप्रवाह विस्तरित है उसी आदि पुरुषके शरणागतहोके उस पदको ढूंढना कि, जिसमें गयेभये मुनिजन फिर इससंसारमें नहीं आते हैं३॥४॥

۳۔ صاف اُس کی ماہیت نہیں ہوتی عیاں ہے اوّل و آخر اور مقام اسکا کہاں
گو بیخ بہت ہے اس شجر کی مضبوط ہتھیار اسنگ سے اُسے کاٹ کے ہیں
۴۔ پھر ڈھونڈھنا چاہیے وہی سب کا مقام واپس آنیکا جس جگہ سے نہیں نام
اور پانی چاہیے وہ ذات ازلی جس کا ہے قدم سے یہ خلقت کا نظام

सोय खोजे पर धामको जाय न लौटत जासु ।
भवबंधन टूटनहित आदिहिं पुरुष उपासु ॥ ४ ॥

Nor here may be acquired knowledge of its form, nor its end, nor its origin, nor its rooting-place; this strongly rooted Asvattha having been cut down by the unswerving weapon of non-attachment. (3)

That path beyond may be sought, treading which there is no return. I go indeed to that Primal Man,* whence the ancient energy forth-streamed. (4)

दोहा—रूप आदि आश्रय तिस अंत न जानत कोइ ।
असंगशस्त्रसे काट तो दृढ जड तरु इह जोइ ॥ ३ ॥

३

न रूप वैसा इसका यहाँ पै मिले न आधार न अन्त आदि।
प्रगाढ मूलों-युत जो इसे, हे असंगरूपी दृढ शस्त्र काटे॥

४

तुरन्त पीछे वह स्थान ढूँढे जहाँ गये जीव, न लौटते हैं।
प्रवृत्ति होती जिससे पुरानी उसी महापूरुषको भजूँ मैं॥

3

Not *thus* is its Form to be seen from this world
Its End, its Beginning, its Main-Root are hid.
These overgrown nether-roots, clinging below,
With sword of unswerving detachment once cut,—

4

Then at last is the P a t h to be trodden,
which leads
To that State, which attained, one 'returns'
not again.
"Yea, I, too, make My Way to that Primeval MAN
Out of Whom the Great Forthstreaming
streamed forth of yore."

(३)

पातं वैसा रूप नहीं है, इसका आदि, मध्य या अन्त;
दृढ़ असङ्ग शस्त्र से इसको, काट सकें जो नर बुधवन्त।

(४)

अन्वेषण करते उस पद का, नहीं जहाँ से लौटें लोग;
आदि पुरुष की शरण ले रहा, फैले जिस से गुण-मय-भोग।

3. Its form [5] as such is unperceived on earth,
Its origin, its end, its rooting-place,
When this strong-rooted *Pipal* is cut down
With axe of non-attachment keen and strong,

4. That Goal [6] beyond can then, indeed, be sought,
From whence who reach it come again no more.
"I refuge seek in that Primeval Soul
From Whom did emanate the Ancient Stream." [7]

इस प्रकार यह रूप उस, का नहीं होता प्राप्त ।
इस मानुषी लोकमें, रहे अदृश्य अप्राप्त ॥८॥
आरम्भ मिलता नहीं, स्थिति मिले न अन्त ।
कारण कार्य न मिल सके, जो सम्बन्ध अनन्त ॥९॥

इस परिणामी वृक्षकी, पक्की दृढ जो मूल ।
मैं मेरीकी वासना, उनसे ही यह समूल ॥ १० ॥

कुल-हाडे पक्के अति, से काट यह वृक्ष ।
वैराग्य सङ्गरहितता, से छेद सुवृक्ष ॥११॥

ढूंडिये तब प्राप्तव्य वह, गहिये मार्ग गभीर ।
चल जिसपर नहीं लौटते पुनः धीर गम्भीर ॥१२॥
जिससे आदि प्रेरणा, कर पाई विस्तार ।
उसी प्रथम मैं पुरुषको, प्राप्त हूं सब प्रकार ॥१३॥

۳

جیسا ہے اس شجر کا انداز
اس کا کھلتا نہیں یہاں راز
آغاز اس کا ہے رازِ پنہاں
انجام اس کا نہیں نمایاں
ہے جائے قیام سرِّ مکتوم
یہ بھید نہیں کسی کو معلوم
گہری ہیں جڑیں جو اس شجر کی
ہوں نذر وہ ترک کے تبر کی

۴

تبدیل عمل میں آرزو ہو
پھر اس منزل کی جستجو ہو
جس میں اک بار جا کے انساں
ہوتا نہیں پھر رجوع دوراں
رہ کر زندانِ آب و گل میں
ہر وقت ہو یہ خیال دل میں
مقصد ذاتِ احد ہے جس کا
ہے نخل کہن یہ جس سے پیدا

निर्मानमोहा जितसंगदोषा अध्यात्मनित्या विनिवृत्तकामाः ॥ द्वंद्वै-

र्विमुक्ताः सुखदुःखसंज्ञैर्गच्छंत्यमूढाः पदमव्ययं तत् ॥ ५ ॥

दोहा–कामसंगअरुमोहतजि, अध्यातमरतिहोय ।
सबदुखतजिताकोनहीं, अविनाशीजोकोय ॥५॥

जो मानमोहकरके रहिते हैं और जिनने संगदोषोंको जीता है और जो अध्यात्मशास्त्रहीमें नित्य वर्तमान हैं और जिनकी कामना निवृत्त जो सुखदुःखसंज्ञक द्वंद्वोंसे छुटे भये हैं वे ज्ञानिजन उस अविनाशी पदको प्राप्त होते हैं याने स्वस्वरूपको प्राप्त होते हैं ॥ ५ ॥

۵ ۔ پاتے ہیں وہ بے زوال پد بے پندار — جو کبر و جہل اور تعلق سے ہیں پار
خواہش نہیں جن کو جو کہ عارف ہیں سدا — اضداد جو سکھ دکھ ہیں نہیں اُن سے کار

दोहा–मान मोह सँग कामते रहित आत्मरत तात ।
द्वंद्वमुक्त अरु ज्ञानयुत पद अव्यय उहि पात ॥ ९

(۵)

جنکا دل ہے خود نمائی جہل و اُلفت سے بری
شوق باطل چھوڑ کر جنکی لگن حق سے لگی
دُور ہو جاتا ہے جب تکلیف و راحت کا خیال
ایسے مرتاضوں کو ملتا ہے عروجِ بیزوال

5

Past error and pride, viscous mind-stains
washed out,
At-One with ALL-SELF,-all heart's longings
turned back,
Set free from all 'pairs' such as pleasure and pain,
They come, glamour-proof, to that STATE
beyond change.

5. Who no delusions have, who are not proud,
Who have attachment's evil overcome.
The freed from lust and "pairs," [8] the Self-absorbed,
The men of wisdom reach that Deathless [9] Goal.

(५)

मान-मोह, सुख-दुख-द्वंदों से, और कामना रहित अमूढ़;
सङ्ग दोष जय कर पाते हैं, मेरा अविनाशी पद-गूढ़ ।

Without pride and delusion, victorious over the vice of attachment, dwelling constantly in the SELF, desire pacified, liberated from the pairs of opposites known as pleasure and pain, they tread, undeluded, that indestructible path. (5)

५

मानी न मोही न तथा न संगी अध्यात्ममें नित्य तथा अकामी ।
विमुक्त होके सुख-दुःखसे भी पाते वही अव्यय स्थान ज्ञानी ॥

۵

جن میں نہیں عہد خود پرستی ظلمت کی نہیں ہے جن میں پستی
قایم بالذّات و آرمیدہ رکھ کر دُنیا سے دل کشیدہ
ہوں غم میں نہ ابرساں جو گریاں راحت میں نہ گل صفت ہو خنداں
ایسے روشن ضمیر کامل پاتے ہیں وہ لازوال منزل

उस पद को करें प्राप्त वह, मोहरहित मतिमान ।
नाशरहित परमात्म को, धीर विज्ञ गुणवान ॥१४॥
छोड़ें जो अभिमान को, सङ्ग दोष लें जीत ।
कामवासना त्याग सब, वैराग्य से प्रीत ॥१५॥
सुख दुःख आदि नाम के, जोड़े त्यागें जब ।
आत्माश्रित हो सर्वदा, पाएं ईशजन तब ॥१६॥

न तद्भासयते सूर्यो न शशांको न पावकः ॥ यद्गत्वा न निवर्त्तते तद्धाम परमं मम ॥ ६ ॥

दोहा—पावकरविअरुचंद्रमा, ताहिकरैनप्रकाश ।
फिरैनताकोपाइकैं, सोहैमेरोवास ॥ ६ ॥

सूर्य उस आत्माको नहीं प्रकाशिसकता है न चंद्रमा और न अग्निप्रकाशिसकता है जिसरूपको याने शुद्धआत्मस्वरूपको प्राप्त होके नहीं संसारमें आते हैं वह मेरा परमें धाम है याने मेरे रहनेका मुख्यस्थान मेराशरीर है इस जगह "यस्यात्माशरीरं" यह श्रुतिभी प्रमाण है॥६॥

۶۔ روشن جس کو کرے نہ مہر رخشاں   روشن نہ کرے آگ نہ ماہ تاباں
جا کر جہاں باز گشت ممکن ہی نہیں   ارجن میرا مقام عالی ہے وہاں

दोहा—चंद्र अग्नि रविहू तिसे ना दरसाय सकात ।
हटत नहीं तासों पुनी सो ज्योती मम तात ॥ ६ ।

That STATE to light it needs no sun;   6
no moon shines there, nor fire burns.
Once they've come *there*, they ne'er 'return'.
That is My HOME beyond this All.

(۶)

آتش و شمس و قمر کی روشنی اس جا نہیں
جو مری منزل پہ پہنچا وہ کبھی لوٹا نہیں

6. The sun shines not upon that Goal,
Nor moon nor fire illumine it;
That is Mine Own Supernal Home
From whence, once there, none e'er returns.

(६)

रवि, शशि, पावक भी उस पद को, दे सकता है नहीं प्रकास;
जिसे प्राप्त कर नहीं लौटता, पाता परम-धाम का वास ।

Nor doth the sun lighten there, nor moon, nor fire; having gone thither they return not; that is My supreme abode. (6)

६

जिसको नहीं प्रकाशित करता दिनकर पावक कला-निधान ।
जहाँ गये पीछे न लौटते मेरा वही परम है स्थान ॥

۶

جو منزل ہے نہایت اعلیٰ — جس میں اپنا ہے خود اُجالا
ایسی جس کی ہے شانِ معراج — مہر و مہ کی نہیں جو محتاج
ہے لاکھ تجلّیوں کا مسکن — کرتی نہیں جس کو آگ روشن
امکاں نہیں جس سے واپسی کا — ہے وہ ارفع مقام میرا

सूर्य चान्द अरु आग जिस, को न सकें चमका ।
पहुंच जहां नहीं लौटते, धाम वही मेरा ॥१७॥

परम स्थान मम ईश ही, सुब्रह्म परमात्म ।
शुद्धात्मसत्ता विमल, वही मेरी निज आत्म ॥१८॥

जैवि सृष्टिमें नित्य जो, जीवरूप विद्यमान ।
मेरा ही इक अंश है, टुकडा मेरा पहिचान ॥१९॥

A portion of Mine own Self, transformed in the world of life into an immortal Spirit,* draweth round itself the senses of which the mind † is the sixth, veiled in matter. ‡ (7)

ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः ॥ मनःषष्ठानीन्द्रियाणि प्रकृतिस्थानि कर्षति ॥ ७ ॥

दोहा—जीवलोकमेंजीवयह, अविनाशीमोरूप ।
मनहीआदिजुइंद्रियनि, औरप्रकृतिकोभूप ॥७॥

जो यह ऐसा वर्णन किया सो यह मेरोही सनातन अंश है याने जैसे प्रकृति और अनंतजीव मेरेही हैं उनमें यह एक मेराही है मेरीही विभूति है सो यह इस जीवलोकेमें जीवभूत याने अति संकुचितज्ञान भयाहुआ पांच ज्ञानेंद्रिय और एक मन ऐसे मनसहित छः प्रकृतिविकार इस देहमें रहीभयीं इंद्रियोंको खैंचता फिरता है ॥७॥

۷۔ یہ جو مری ذات کے حصے ہیں قدیم
دنیا میں جو آتے جاتے ہیں اے ذی فہیم
پرکرتی میں سے چھ حواسوں کو لے
جن میں سے من چھٹا ہے سب کو تسلیم

۷- میرا انش ہی جیو قدرت کا آفتاب [illegible]
سناتن جیو ہے چھٹے من سمیت پانچ اندریوں کو اپنی طرف کھینچتا [illegible]

दोहा—जीव सनातन लोकमें मोर अंश उह राय ।
कायस्थित इंद्रियगण हि लै घूमत बहुकाय ॥ ७ ॥

मेरा ही है अंश सनातन जीव, जीव-लोकोंके बीच ।
प्रकृतिस्थित मन सहित पंच इन्द्रियको वह लेता है खींच ॥

(۷)
ایک ذرّہ میری ہستی کا ہر جانداروں کی جاں
میری قدرت ہر حواسِ خمسہ و دل سے عیاں

¶ A Ray of ME in Life-Sphere [pure,]* transformed to deathless Life-Spark there,
Draws round it mind, and senses five, of [outer] Nature denizens. 7

7. A portion of Myself transformed
To an immortal Soul on earth,[10]
The senses and the mind attracts
In matter veiled,[11] towards itself.

(७)
जीव-लोक में जीव सनातन, रहता मेरा अंश अनित्य;
मन युत पंचेन्द्रियं को खींचे, थिर हो रहै प्रकृति में नित्य ।

۷

اجسام کے اِن صنم کدوں میں
جو روح ہے جیو آتما ہے
کل تعمیروں میں آب و گل کی
پھیلا ہر سُو ہے کام جن کا

دنیائے وجود کی حدوں میں
میرا ہی وہ جزو لا فنا ہے
جالب ہے وہی حواس دل کی
قدرت میں ہے قیام جن کا

प्रकृति कार्य संसार में, इन्द्रिय जो रहीं टिक ।
मन है छः वां जिन्हीं में, जीव उन में रहा टिक ॥२०॥

१५३२

१५/८

शरीरं यदवाप्नोति यच्चाप्युत्क्रामतीश्वरः ॥ गृहीत्वैतानि संयाति वायुर्गन्धानिवाशयात् ॥ ८ ॥

दोहा—जाशरीरकोंतजतइह, कहाकरैसनबंध ।
इंद्रियईश्वर सँगरहैं, वायुसंगज्योंगंध ॥ ८ ॥
जब यह जीव शरीरको प्राप्त होता है और जब वर्त्तमानशरीरसे जाताहै तब यह मन इंद्रियोंका ईश्वर आपकी सेनारूप इन इंद्रियोंको, पवन पुष्पादिक गंधस्थानसे गंधोंको जैसे तैसे ग्रहणकरके जाता है ॥ ८ ॥

Whene'er this Lord a form invades,
whene'er He wings His flight therefrom,
He grasps and carries these with Him,
as Wind wafts scents from where they lurk.

۸۔ جب چھوڑتا ہے یا کہ کوئی تن لیتا — چلتا ہے ان کو لیکے مالک تن کا
جس طرح سے خوشبوئے معطر لیکر — گلشن سے چلا کرتی ہے گلشن کی ہوا

सूक्ष्मभूत अरु इन्द्रिएं संग लेकर परकाय ।
जाय जीव, जिमि गंधको लेकर चलतो वाय ॥ ८ ॥

(८) जब यह जीव जन्म लेता है, या करता शरीर का त्याग;
ले जाता तब इन्द्रियगण को, जैसे पवन गंध का भाग ।

(۸)

کالبد سے روح جب ہوتی ہے واصل یا جدا
ساتھ لیجاتی ہے اپنے جیسی نکہت کو صبا

८

जिस शरीरको लेवे अथवा छोडे यह ईश्वर स्वच्छन्द ।
संग इन्द्रियोंको ले जाता ज्यों पुष्पोंमें मारुत, गन्ध ॥

8. Whene'er the Lord [12] a form acquires,
Whenever He departs therefrom,
He taketh these with Him and goes
As takes the wind perfumes from flow'rs.[13]

۸۔ جب حاصل کرے جسم یا چھوڑ دے
جسم سے یہ ناطہ کو جب توڑ دے
پون جیسے خوشبو کو لے ساتھ میں
یونہی اندریوں کو وہ سنگ لے چلے۔

When the Lord acquireth a body and when He abandoneth it, He seizeth these § and goeth with them, as the wind takes fragrances from their retreats.
(8)

۸

بوئے خوش دید کو ساتھ اپنے لے جائے ہوا اُڑا کے جیسے
ساکن ایسے ہی قصرِ تن کا طائر اس عنصری چمن کا
مسکن کو جب اپنے چھوڑتا ہے رشتہ قالب سے توڑتا ہے
پھر سے ترتیب آب و گل کو لے جاتا ہے حواس و دل کو

रहा खींच उन सभी को, ज्यों वायु शुभगन्ध ।
पुष्प आदि से खींचती, साथ ले जाती सुगन्ध ॥२१॥
मन इन्द्रिय को साथ यूं, ले कर जाता जीव ।
जब शरीर को छोडता, नव शरीर पा जीव ॥२२॥

श्रोत्रं चक्षुः स्पर्शनं च रसनं घ्राणमेव च ॥ अधिष्ठाय मनश्चायं विषयानुपसेवते ॥ ९ ॥

दोहा–श्रवणनेत्रअरुनासिका, त्वचाजुरसनाजानि ।
इनकोगहिमनसंगलै, करतजीवविषयानि ॥९॥

यह जीवात्मा श्रोत्र इंद्रियें याने कान नेत्र और स्पर्शन जो त्वचाइंद्रिय रसना जो जिह्वा और घ्राण जो नासिका और मन इनको आश्रयकरके विषयोंको सेवता है ॥९॥

۹- چشم و گوش و زبان و جلد و بینی
ہو جاتا ہے محو لذتِ محسوسات
اور من پر کرکے حکمرانی اپنی
یہ جیو یہاں آکے ہے دستور یہی

Well-masked in hearing, sight and touch, 9
well-masked in taste and smell-sense too,
Yea, masked in *mind*, He sallies forth
in pursuit of what makes Him feel.

दोहा–चख नासा रसना मन त्वचा कर्ण अरु राय ।
इनके द्वारा भोगतो विषयन जीव कुमाय ॥ ९

9. Presiding o'er the sense of sight,
And o'er the sense of touch and taste,
And over hearing and the mind,
He doth enjoy all things of sense.

۹- شبد روپ ہیں اور پرس کے سہارے
وہ چھوتے ہیں اور سُو نگھنے کے دوارے
یہ من کی مدد سے ہی جیو آتما
وِشے سیوما ہیں پھرے طرف چارے

(۹)

گوش و چشم و لمس و بینی و زباں کی قوتیں
لیتی ہے دل کے وسیلہ سے نفس کی لذتیں

(९)

रसना घ्राण, नेत्र, कान युत, त्वचा और निज हृदय समेत;
जीव भोगता पा कर आश्रय, इन का ही है शौर्य-निकेत !

देह का राजा जीव यह, कर मन पर अधिकार ।
कान आंख त्वक् नाक अरु, जिव्हा का वशीकार ॥२३॥
विषय सभी के सेवता, अति समीप से वह ।
इन्द्रिय मन से भोग शुभ, अशुभ भोगता वह ॥२४॥

٩

کان، آنکھ، زباں، ہاتھ، دل، ناک
یہ سب ہیں وسیلہ ہائے ادراک
پردے پردے میں ہو کے داخل
ذرّے ذرّے میں ہو کے شامل
لذّات قبول کر کے ان کی
ہر بات قبول کر کے ان کی
مصرف میں ہے اپنے ان کو لاتی
حظ اس سے ہے روح یوں اٹھاتی

६

कान, और आँखें, त्वक्, जिह्वा, नासा मनसंयुक्त तथैव ।
इनके आश्रयसे यह करता जीव विषय उपभोग सदैव ॥

Enshrined in the ear, the eye, the touch, the taste and the smell, and in the mind † also, He enjoyeth the objects of the senses. (9)

१५४२

१५/१०

उत्क्रामंतं स्थितं वापि भुंजानं वा गुणान्वितम् ॥ विमूढा नानुपश्यंति पश्यंति ज्ञानचक्षुषः ॥ १० ॥

दोहा–इंद्रिययुतनिकसतरहत, करतविषयकोभोग ।
मूढजीवकोउनलखै, लखैजुज्ञानीलोग ॥ १० ॥

यह जो गुणोंकरके युक्त आत्मा तिसको देहत्यागनेको अथवा देहमें रहते भयेको अथवा विषयभोगतेभये को भी अज्ञानीजन नहीं देखतेहैं जिनके ज्ञानदृष्टिहै वे देखतेहैं ॥ १० ॥

۱۰ مرنے کے وقت یا کہ یاں جیتے جی
محو بہ گنوں سے بھوگتے بھوگ سبھی
دیکھ اس کو نہیں سکتے ہیں اہل پندار
وہ دیکھتے ہیں کہ چشم عرفاں ہو کھلی

दोहा–किसहू अवस्थामें नहीं जीवहिं जानत मूढ ।
जानत ज्ञानी एक–जो जीव सुरूप सुगूढ ॥ १० ॥

10. Who are deluded see Him not,
When He Who's to the *guṇas* wed,
Enjoys Himself or goes or stays,
They see Him who are wisdom-eyed.

(۱۰)
آمد و شد درک و معقولات سے ارواح کی
باخبر مردِ ذکی ہے بے خبر مردِ غبی

Or taking flight, or perched within, 10
or revelling, one with Nature's Moods,
World-glamour's victims see Him not:
the Wisdom-Eyed* perceive Him well.

(१०)
देह त्यागते, देहस्थित या, करते हुए विषय का भोग;
गुण-युत-अज्ञानी क्या समझें, देखें ज्ञानी उसका योग ।

निकल रहे अरु टिक रहे, विषय कर रहे भोग । 10
को नहीं मूर्ख पहिचानते, देखते ज्ञानी लोग ॥२५॥
प्रकृति गुण सम्बद्ध इसे, देख सकें नहीं मूढ । 10
खोल ज्ञान की आंख शुभ, देखते योगाऽरूढ ॥२६॥

10

خارج ہوتا ہے جسم سے جو — چھُٹتا ہے اس طلسم سے جو
وابستہ شکل و نام اس میں — کرتا ہے جو قیام اس میں
ہر وقت صفات سے مُنزّا — کرتا ہے جو صرف لذّتوں کا
واقف اس سے نہیں ہیں گمراہ — شاہد اس کی ہے چشم آگاہ

१० 7

एक देहसे देहान्तरको जाते, रहते, करते, भोग ।
गुणयुत इसे विमूढ न देखें, देखें ज्ञान-दृष्टिके लोग ॥

The deluded do not perceive (Him) when He departeth or stayeth or enjoyeth, swayed by the qualities ;* the wisdom-eyed perceive. 12 (10)

यतंतो योगिनश्चैनं पश्यंत्यात्मन्यवें-स्थितम् ॥ यतंतोऽप्यंकृतात्मानो नैनं पश्यंत्यचेतसः ॥ ११ ॥

दोहा—योगेश्वरजतननिकिये, देखतहैंहियमाहिं ।
मूरखजतनहिकरतहूँ, जीवहिदेखतनाहिं ॥११॥

योगिजन जतन करतेकरते आपके अंतःकरणमें रहे भये इस आत्माको देखतेहैं और जो विषयासक्तहैं वे जो शास्त्रद्वारा उपाय करैं तौभी वे अज्ञानी हैं आत्माको नै देखिसकैं ॥ ११ ॥

۱۱۔ وہ یوگی ہی جو یوگ میں ساعی ہو — دیکھا کرتا ہے اپنے اندر اس کو
کرتے ہوئے کوشش بھی نہیں دیکھتے ہیں — دل صاف نہیں جنکے ہیں غافل جو

मोर भक्तिकर कायमें देखत योगी जीव [जीवात्माको]
मोर भक्तिविन पाय ना ठानहु यत्न अतीव ॥ ११ ॥

(۱۱)

اہلِ دل کوشش سے خود میں دیکھ لیتے ہیں اُسے
شاغلانِ بےخبر محروم ہیں دیدار سے

II. By strenuous effort devotees
Perceive Him dwelling in their selves.[14]
The wisdomless, the self-untrained,[15]
Though striving hard, perceive Him not.

۱۱۔ تپین شیل یوگی سمادھی لگائیں
بے اپنے اندر اسے دیکھ پائیں
روشوں میں جو لین اور بے علم ہیں
کریں گر تپین پھر بھی محروم جائیں

11

Yogis as well, who strive amain,
see Him enshrined within themselves;
While they whose Will† is not yet born,
strive as they may, perceive Him not.

(११)

देखें निज हृदयस्थित योगी, रहते हुए सदैव सयत्न;
अविवेकी अशुद्ध उर वाले, नहीं हो सकें सफल प्रयत्न।

अपने में ही देखते, टिका हुआ यह जीव ।
योगाभ्यासी यत्न से, ध्यानी ज्ञानी जीव ॥२७॥
यत्न से भी सकें देख न, इसे अयोगी अजान ।
चित्त आत्मा जिन का टिका, नहीं, सुकृत न ज्ञान॥२८॥

11

خود کو پہچانتے ہیں جو لوگ
اس روح کو وہ خود اپنے اندر
جو ہیں غفلت پرست لیکن
گو کوشش سے نہیں وہ تھکتے

جن کا شب و روز شغل ہے جوگ
پاتے ہیں صاف جلوہ گستر
شفاف نہیں ہے جن کا باطن
پھر بھی نہیں اس کو دیکھ سکتے

Yogis, also, struggling, perceive Him, established in the SELF; but though struggling the unintelligent perceive Him not, their selves untrained. (11)

११

युक्त हुए योगीजन इसको देखे स्थित आत्माके बीच ।
नहीं देखते अज्ञानीजन यत्नयुक्त भी मतिके नीच ॥

यदादित्यगतं तेजो जगद्भासयतेऽखिलम् ॥ यच्चंद्रमसि यच्चाग्नौ तत्तेजो विद्धि मामकम् ॥ १२ ॥

दोहा–तेजजुहैआदित्यमें, भासतसबसंसार ।
चंद्रमाँझअरुअग्निमें, सोमेरोनिरधार ॥ १२ ॥
जो सूर्यनमें रहाभया तेज सर्व जगतको प्रकाशिरहाहै और जो तेज चंद्रमामें और जो अग्निमेंहै उसे तेजको मेरोही तेज जानो ॥ १२ ॥

۱۲۔ مہر پرنور میں جو روشن ہے نور
جس سے یہ جہان ہے روشنی سے معمور
اور آتش و ماہتاب میں نور ہے جو
وہ میرا نور جان اے اہل شعور

दोहा–तेज अग्नि रवि चंद्रको जगत प्रकाशत जोय ।
सोउ तेज मम, तिनहिं हौं दीन भक्तिवश होय ॥ १२

(۱۲)
مہر عالمتاب اک جلوہ ہے میرے نور کا
ماہ میں اور شعلۂ آتش میں ہے میری ضیا

12. The light which dwelling in the sun
Illumines all the world below;
Which shineth in the moon and fire,
That light, know thou, is Mine Own Light.

۱۲۔ جو سورج میں ہے تیج بھاری مہان
جگت سارا جس سے ہو ظاہر عیاں
جو ہے چاند میں نور یا آگ میں
سمجھ تیج پیارے میرا بے گماں

12

The light that, streaming from the Sun,
lights up this Solar World entire,
What shines in moon, and what in fire,
that light is of My Light, know thou.

(१२) सूर्य-ज्योति-चेतन्यात्मक में, जिससे पाता जगत प्रकाश;
अग्नि, चन्द्रमा में भी अर्जुन ! मेरा ही है तेज, विकाश ।

१२

यह आदित्य-तेज जो सारा जगत प्रकाशित करे महान ।
और तेज जो चन्द्र-अग्निमें वह भी तू मेरा ही जान ॥

That splendour issuing from the sun that enlighteneth the whole world, that which is in the moon and in fire, that splendour know as from Me. (12)

۱۲

خورشید کے دائرہ میں آکر
جو نورِ ضیا دہ جہاں ہے
جس سے تنویر ماہ میں ہے
جس سے ہوتی ہے آگ روشن

اس منبع نور میں سما کر
جس سے روشن یہ خاکداں ہے
آتا یہ حدِ نگاہ میں ہے
اس کا سمجھو مجھی کو مخزن

जग सारा चमका रहा, सूरज का शुभ तेज ।
जान चन्द्रमा अग्न का, भी सारा मेरा तेज ॥२९॥
ओज अपने से धारता, कर भूमि प्रवेश ।
प्राणि अप्राणि सभी को, भूत मात्र निश्शेष ॥३०॥

13

I, filling this whole Earth, support
all creatrues by My Vital Pow'r.
Transmuted into juicy sap,
't is I that nourish every plant.

१२

धारण करता मैं भूतोंको क्षितिमें हो प्रविष्ट, कर जोष ।
फिर बनकर रस सोम, करूँ मैं सकल औषधोंका परिपोष ॥

गामाविश्य च भूतानि धारयाम्यहमोजसा ॥ पुष्णामि चौषधीः सर्वाः सोमो भूत्वा रसात्मकः ॥ १३ ॥

दोहा–धारतहौंसबजीवकों, करिपुहमीपरवेस ।
पोषतहौंहीऔषधी, रसमयशशिकेभेस ॥ १३ ॥

मैं पृथिवीमें प्रविष्टहोके अपने अचिंत्य सामर्थ्यकरके सर्वभूतोंको धारण करताहौं और अमृतमय चंद्र होके सर्व औषधिनको पालताहौं ॥ १३ ॥

۱۳ ساری ہو کر زمیں میں میری طاقت تمام تھامے رکھتا ہوں میں ہی مخلوق تمام
دیتا ہوں نباتات کو میں ہی تو نمو ہو کر وہ رس کہ سوم ہے جس کا نام

भूको अंतर्यामि बन सबहुन धारों हौंहि ।
चंद्ररूपकर पोसतो हौं ओषधि जग जोहि ॥ १३ ॥

(۱۳)
میری طاقت سے جمادات طبق کا ہے قیام
عرق بنکر ہے نباتاتی طراوت میرا کام

(१३)
कर प्रविष्ट पृथिवी में, देता, सब भूतों को तेजस्तोम;
करता पुष्ट महौषधियों को, मैं ही बन कर रस-मय-सोम ।

Permeating the soil, I support beings by my vital energy, and having become the delicious Soma,* I nourish all plants. (13)

13. I, filling all the earth, support
All beings by My energy.
Transformed into the wat'ry moon,[1]
I nourish every living herb.

۱۳۔ زمین کے ذروں میں سماتا ہوں میں
سبھی بہار کو پھر اٹھاتا ہوں میں
میں امرت بنوں چاند میں جائیکہ
سبھرو اوشدھی کو اوگاتا ہوں میں

۱۳

سر رشتہ دامنِ زمیں ہوں — اس کے اندر میں جاگزیں ہوں
خود کو اس بھیس میں چھپائے — دنیا بھر کا ہوں بوجھ اُٹھائے
ہوں چرخ پہ بن کے ماہِ انور — آبِ حیواں کا میں ہی مصدر
جتنے بھی ہیں دہر میں نباتات — پاتے ہیں نمو مجھی سے دن رات

4

ओषधिरसमय सोम बन, पुष्ट करूं मैं सब । 10
वनराजि सुवनस्पति, स्वयं उन्नत करूं सब ॥३१॥
जीवित प्राणि शरीर के, आश्रित जो जठराग्न ।

13

मैं उसका ही रूपधर, भस्म करूं सभी अन्न ॥३२॥

१५५६

९३
९८

अहं वैश्वानरो भूत्वा प्राणिनां देह-
माश्रितः ॥ प्राणापानसमायुक्तः प-
चाम्यन्नं चतुर्विधम् ॥ १४ ॥

दोहा–हौंहींजठराअग्निकै, सबदेहिनमैंआय ।
प्राणअपानसहाइसों, जारतअन्नपचाय ॥ १४ ॥
मैं जठराग्नि होके सबप्राणिनके देहमें रहाभया प्राण और अपान संयुक्तभक्ष्य, भोज्य, लेह्य, पेय ऐसे चार प्रकारके अन्नको पचाताहौं ॥ १४ ॥

۱۴۔ میں ہی تو حرارت عزیزی ہو کر
چاروں قسموں کا ہوں پچاتا کھانا
داخل ہوں بدن میں سب کے ای دل شوز
مل کر آمد شد نفس سے یکسر

देहिनके अरु देहमें जठरानल मैं तात ।
प्राणापानविभेदयुत खायो अन्न पचात ॥ १४ ॥

(۱۴)
جسم حیوانی میں رہتا ہوں حرارت کی طرح
ہضم کرتا ہوں غذا معدے کی قوت کی طرح

(१४)
हो जठराग्नि प्राणियों की मैं, देहों में करता हूँ वास;
देता पचा चार अन्नों को, प्राण-अपान-युक्त मतिरास !

14. Transformed into the inner fire,[17]
In living creatures do I dwell,
United with the breaths of life,[18]
The fourfold food[19] I do digest.

14
Into digestive fire transformed,
within all living bodies lodged,
With 'on-breath' and with 'off-breath' yoked,
't is I, digest the fourfold food.

۱۴۔ میں جھٹرا اگن بن کے اے دلربا
سارے پرانیوں کے جسم میں ہی جا
پچاتا ہوں ان چار پرکار کے
پرانوں کی آپس میں کر ایکتا

१४

वैश्वानर होकर जीवोंके रहूँ देहमें ले आधार ।
प्राण अपान संग होकर मैं अन्न पचाऊँ चार प्रकार ॥

I having become the Fire of Life, † take possession of the bodies of breathing things, and united with the life-breaths, ‡ I digest the four kinds of food. (14)

۱۴

جس چیز کو جسمِ عنصری کی — کہتے ہیں حرارتِ غریزی
ہراک حیوان میں وہ میں ہوں — ہراک انسان میں وہ میں ہوں
انفاس کے سلسلے سے مل کر — جاری جو ہے جسم میں برابر
کرتا ہوں غذا میں ہضم اسمیں — مشہور ہیں جن کی چار قسمیں

जुड़ा श्वास प्रश्वाससे, चहुं विध अन्न पका ।
जो खाते जो चूसते, पीते, लेते चबा ॥ ३३ ॥
सुप्रविष्ट हूं हृदयमें, सब के ही मैं शरण ।
मुझी से होता स्मरण है, ज्ञान तर्क निराकरण ॥३४॥

१५५२

१५
१५

सर्वस्य चाहं हृदि संनिविष्टो मत्तः स्मृतिर्ज्ञानमपोहनं च ॥ वेदैश्च सर्वैरहमेव वेद्यो वेदांतकृद्वेदविदेव चाहम् ॥ १५ ॥

दोहा–सबकेहियमेंहौंरहों, मोतेज्ञानविचार ।
वेदसबैमोकोकहैं, मैंतिनकोकरतार ॥ १५ ॥

मैं सर्वके हृदयमें प्रविष्टहौं और सर्वके स्मृति, ज्ञान और विचार मेरेसे होतेहैं और सर्व वेदोंकरके मैं ही जानने योग्यहौं और वेदांतका कर्ता और वेदका जाननेवाला मैं ही हौं ॥ १५ ॥

۱۵ میں رہتا ہوں سب کے دل میں انجیاں
مجھ سے ہے علم و حافظہ اور نسیاں
ویدانت بنایا میں نے ہوں عالم وید
جانا جاتا ہوں میں ہی بید سے یہاں

दोहा–ज्ञान तर्क स्मृति मोहते, हियमें हों हि रहात ।
फल दाता, वेदज्ञ हौं, वेद हु मोहि जतात ॥ १६

(۱۵)
سب کے باطن میں ہے مجھ سے عقل و سہو و حافظہ
میں ہی ہوں تثلیثِ علمی اور اسکا خاتمہ

(१५)
सब के हृदयस्थित हूँ, पाते, मुझ से ही सब स्मृति ज्ञान;
वेद-वेत्ता कर्त्ता हूँ मैं, जानें मुझे वेद-विद्वान ।

And in the hearts of all I dwell, deep-seated. 15
From ME retention, assent and rejection.

'T is I the ONE THING aimed at in all Scriptures:
Both Know'r and Ender of all 'Scripture', I.

15. And I am shrined in every heart: from Me
Both memory [20] and knowledge [21] come and go. [22]
'Tis I who in the Veds is to be known,
Ved-knower I and Author of Vedānt.

१५

सबमें मैं निविष्ट, मुझसे हो स्मरण, अपोह और विज्ञान ।
वेदवेद्य, वेदान्त-रचयिता, और वेदविद मुझको जान ॥

And I am seated in the hearts of all, and from Me memory and wisdom and their absence. And that which is to be known in all the Vedas am I; and I indeed the Veda-knower and the author of the Vedanta. (15)

۱۵

ہوں میں ہی مقیم خانۂ دل
آباد مجھی سے ہے یہ محفل
دانائی کا ہے وجود مجھ سے
ہے حافظہ کا شہود مجھ سے
دونوں ہوتے ہیں مجھ سے نابود
عرفاں مرا وید سے ہے مقصود
ہر وید سے آشنا ہوں میں ہی
موجد ویدانت کا ہوں میں ہی

वेदोंद्वारा ज्ञेय मैं, सभी वेद का सार ।
ज्ञाता भी मैं ही वेद का, वेदतत्त्व कर्तार ॥३५॥

१५५८

६५

१६ — १७

द्वाविमौ पुरुषौ लोके क्षरश्चाक्षर एव च ॥ क्षरः सर्वाणि भूतानि कूटस्थोऽक्षर उच्यते ॥ १६ ॥ उत्तमः पुरुषस्त्वन्यः परमात्मेत्युदाहृतः ॥ यो लोकत्रयमाविश्य बिभर्त्यव्यय ईश्वरः ॥ १७ ॥

दोहा--लोकमाँझद्वैपुरुषहैं, क्षरअरुअक्षरभाय ।
क्षरशरीरकोकहतहैं, अक्षरजीवगनाय ॥ १६ ॥
उत्तमपुरुषसुऔरहै, परमातमकेसेस ।
तीनलोकसोयतरहौ, करिकैनिजपरवेस ॥ १७॥

इस लोकमें क्षर और अक्षर ऐसे ये दोप्रकारको पुरुष हैं तिनमें सर्व शरीरधारीभूत प्राणी क्षर और मुक्त जीव अक्षर कहाता है इन दोनोंसे उत्तम पुरुष और है जो परमात्मा ऐसे कहाता है जो अविनाशी ईश्वर त्रिलोकीमें प्रवेशकरके सर्व त्रिलोकीका भरण पोषण करताहै ॥ १६ ॥ १७ ॥

(۱۶)
عالمِ امکاں میں دو جلوے ہیں فنا و بقا
ساری موجودات فانی ہے مگر باقی ہے علم

(۱۷)
نورِ رحماں ہے حقیقت میں ان دونوں سے فوق و وفات
ناظرِ درسِ حق مطلق وہ مقبولِ صفات

۱۶۔ دنیا میں دو پرش ہیں سن میری بات — فانی ہے ایک۔ ایک کی باقی ذات
جو مایا کا دیہہ ہیں وہ فانی ہیں — کارن مایا ہے قائم اسے نیک صفات

۱۷۔ ہے اُتّم پرش اور ہی چیز مگر — پرماتما کہتے ہیں جسے دانشور
جو رب لایزال سب کا ہے حفیظ — ان تینوں عالموں میں ساری کر

दोहा—दो प्रकारके जीव हैं क्षर अरु अक्षर तात ।
बद्धजीवको क्षर कहैं अक्षर मुक्त कहात ॥ १६ ॥

इन दोनों सो भिन्न हरि पुरुषोत्तम विख्यात ।
बद्ध मुक्त जडवर्गको धारत ईश कहात ॥ १७ ॥

16. This world two groups of beings[23] holds—
Th' enduring[24] and the perishing.[25]
The perishing all creatures are,
The changeless that which lasts for aye.

17. There also is the Soul Supreme,
The Highest Self—His other name,
Th' Eternal Lord Who doth uphold
And permeate the triple world.

١٦- یہ دُنیا میں دو پرش مانے ہوئے
فانی و لافانی جانے ہوئے !!
جسم سارے فانی نظر آوتے
امر جیوان میں سمانے ہوئے

١٧- اُتم پرش ان سے نیارا سمجھ
وہ پرماتما اور سہارا سمجھ
ترلوکی میں ویاپک و پالک وہی
وہ لافانی ایشور پیارا سمجھ

(१६)

क्षर अक्षर दो पुरुष मात्र ही, व्याप रहे जग में सर्वत्र;
प्राणि मात्र क्षर, एवम् अक्षर, है कूटस्थ, पाण्डु के पुत्र !

(१७)

सर्वोपरि है पुरुष किन्तु जो, इन से परमात्मा वह एक;
तीनों लोकों को धारण कर, पालै पोषै सहित विवेक ।

¶Man forms two 'men' in [twofold] world,* 16
the waning and th' unwaning One.
The waning holds all elements‡;
'Rock-Seated' is th' Unwaning called.

But truest MAN is other yet,— 17
proclaimed as SELF Supreme is HE,—
Who, through this Triple World infused,
unchanging Lord, upholds it all.

There are two Energies* in this world, the destructible and the indestructible; the destructible is all beings, the uuchanging is called the indestructible. (16)

The highest Energy* is verily Another, declared as the Supreme SELF, He who, pervading all, sustaineth the three worlds, the indestructible Lord. (17)

१६

क्षर अक्षर ये दो प्रकारके पुरुष लोकमें है मतिमान ! ।
भूतवर्गको क्षर कहते हैं अक्षर है कूटस्थ महान ॥

१७

उत्तम पुरुष अन्य है उसको परमात्मा कहते हैं पार्थ ! ।
वही ईश अव्यय, घुस जगमें पालन करता सकल पदार्थ ॥

١٦

ہے اک ایسا نظامِ ہستی — دو قسم کی ہے تمام ہستی
اس میں سے ایک عارضی ہے — ہستی جاوید دوسری ہے
ہیں سب چیزیں جہاں کی فانی — مشہور زباں ہیں آنی جانی
بے لوث تغیّر و تبدّل — جاوید مگر ہے روح بالکل

١٧

جس سے ہے بسی ہر ایک بستی — جو ہے سب سے بلند ہستی
بے بہرہ نیستی وہی ہے — ہستی جو ہے دوسری وہی ہے
ہر جائی ہے قیام اس کا — روحِ اعظم ہے نام اس کا
تینوں دُنیاؤں کی ہے بانی — وہ قادرِ کُل ہے جاودانی

पूर रहे संसार को, दोनों ही यह पुरुष ।
नाश रहित है एक तो, नश्वर दूजा पुरुष ॥३६॥
नश्वर पुरुष आकार हैं, प्राणि अप्राणि देह ।
अविनाशी वह ही कहा, इक रस अचल विदेह ॥३७॥

उत्तम पुरुष तो और ही, कहा गया परमात्म ।
तीन लोक प्रविष्ट हो, धार उस रहा आतम ॥ ३८ ॥
अविनाशी जगदीश्वर, क्षर अक्षर के पार ।
उन से उत्तम परे जो, पुरुषोत्तम शुभसार ॥३९॥

१५५८

१५
१८

यस्मात्क्षरमतीतोऽहमक्षरादपि चो-

त्तमः ॥ अतोऽस्मि लोके वेदे च प्रथितः पुरुषोत्तमः ॥ १८ ॥

दोहा—क्षरअरुअक्षरतेपरे, हौंसबते अधिकाय ।
यातेंवेदसलोकमें, पुरुषोत्तममोनाय ॥ १८ ॥

जिसवास्ते कि, मैं वृद्धावस्थ जीवसे श्रेष्ठ और मुक्तसेभी उत्तम हौं ईससे स्मृति और वेदमेंभी पुरुषोत्तमे प्रसिद्ध हौं ॥ १८ ॥

[illegible]

۱۸ میں ادا سب فانیوں کی حد سے ہوں پرے
اس واسطے اس لوک میں اور وید میں بھی
اور اُتم بھی ہوں چونکہ اس مایا سے
پرشوتم ہیں مجھکو کہتے

दोहा—क्षर अक्षर इन दोउसों हौं उत्तम हौं जासुँ ।
स्मृति अरु वेद बखानते मोहि पुरुषोत्तम तासुँ ॥ १८ ॥

(۱۸)

فانی و باقی کی معلومات سے بالا ہوں میں
اسلئے دیر و حرم میں پاک اور یکتا ہوں میں

18

Since I transcend the 'man' that wanes,
and AM beyond th' Unwaning, too,
Therefore the World and Scripture both
give ME the Name of MAN SUPREME.

(१८)

मैं क्षर से अतीत, अक्षर से भी, जग में हूँ श्रेष्ठ महान;
लोक वेद इससे प्रसिद्ध हूँ, मैं ही पुरुषोत्तम भगवान ।

18. Since I transcend what perisheth,
And do excel what changeth not;
Therefore the Veds and all the world
Proclaim Me as the Soul Supreme.

इसी लिये संसारमें वेदमें, भी सुप्रसिद्ध ।
पुरुषोत्तम ही नाम से, सब जगमें मैं सिद्ध ॥४०॥

۱۸

فانی ہیں یہ وجود جتنے
ہے روح جو دو جہاں میں آباد
اس سے بھی بڑی ہے بات میری
دُنیا مجھے کہتی ہے مُقدّم

باہر ہوں میں ان کے دائرے سے
ہے بیم زوال سے جو آزاد
سب سے ارفع ہے ذات میری
ویدوں کی نظر میں ہوں مکرّم

Since I excel the destructible, and am more excellent also than the indestructible, in the world and in the Veda I am proclaimed the Supreme Spirit.* (18)

१८

मैं हूँ क्षरसे परे और हूँ अक्षरसे भी उत्तम धाम ।
इससे लोक तथा वेदोंमें पुरुषोत्तम है मेरा नाम ॥

यो मामेवमसंमूढो जानाति पुरुषोत्तमम् ॥ ससर्वविद्भजति मां सर्वभावेन भारत ॥ १९ ॥

दोहा—जोकोउमोकोनैभजत, तेईमूरखमान ।
अर्जुनजेमोकोभजत, तेइजानसुजान ॥ १९ ॥

हे भारत ! जो सम्यक्ज्ञानी पुरुष ऐसें मेरेको पुरुषोत्तम जानता है सो सर्वज्ञ है इसीसे वह सर्वभाव याने माता पिता सुहृद् धनादिक मेरेको जांनिके मेरेही को भजता है ॥ १९ ॥

۱۹۔ جو بے پندار ہو کے پہچانتا ہے
میں ہی پرشوتم ہوں یہ مانتا ہے
وہ سب بھاوؤں سے پوجتا ہے مجھکو
وہ عالم کل ہے مجھکو کل جانتا ہے

दोहा—जो ज्ञानी मोहि जानतो पुरुषोत्तम इसरीति ।
मम उपासना करत सो सबविध अवस सप्रीति ॥ १९ ॥

19. Who, undeluded, knoweth Me
In this wise as the Soul Supreme.

He, knowing all, doth worship ME
With his whole being, Bharat's son.

(۱۹)
مجھکو ایسا جان لیتا ہے جو مردِ ہوشیار
علم اُسکا ہے مکمل وہ ہے میرا جاں نثار

Whoso, all glamour shaken off, perceives ME thus as MAN SUPREME,—
All-Knower He,— e'er worships ME *with His whole Being*, Bhārata. 19

۱۹۔ جو گیانی مجھے ایسا ہے جانتا
اتم پرش مجھ کو رہا مانتا
سرو بھاؤ اتم میرے ہیں وہ ہرے
بھجن لوگ مجھ کو ہی پہچانتا

(१९)
पुरुषोत्तम विचार कर मुझ को, मोह रहित वह नर निस्स्वार्थ;
सब ज्ञानों का ज्ञानी भजता, सब भावों से मुझको पार्थ !

१६

ऐसे मोहमुक्त हो मुझको पुरुषोत्तम जो लेता मान।
सब प्रकारसे मुझको भजता वह नर हो सर्वज्ञ महान॥

He who undeluded knoweth Me thus as the Supreme Spirit*, he, all-knowing, worshippeth Me with his whole being, Bhárata. (19)

19

بھارت آگاہ راز ہوکر — مردِ عرفاں نواز ہوکر
جو مجھ کو بزرگ جانتا ہے — سب سے ممتاز مانتا ہے
وہ مخزنِ علم سربسر ہے — اس کو ہر بات کی خبر ہے
رہ کر مسرور و شاد ہر وقت — کرتا ہے مجھی کو یاد ہر وقت

जो यूं मुझको जानता, पुरुषोत्तम सुखरूप।
माया मोह सभी त्याग कर, भरतश्रेष्ठ हे भूप! ॥४१॥
श्रद्धा भक्ति सर्वथा, ही मुझ में वह धार।
मुझे सदा ही सेवता, वह सर्वज्ञ, सुसार ॥४२॥

इति गुह्यतमं शास्त्रमिदमुक्तं मयाऽ

नघे ॥ एतद्बुद्ध्वा बुद्धिमान्स्यात्कृत-
कृत्यश्च भारत ॥ २० ॥

दोहा--छिपीबातग्रंथनजुही, सोतोसोंकहिदीन ।
पारथजोजानतयह, तेईबुद्धिप्रवीन ॥ २० ॥

हे निष्पाप ! ऐसे यह अतिगोप्य शास्त्र मैंने कहा हे भारत ! इसको जानिके बुद्धिमान् और कृतकृत्य होतो है ॥ २० ॥

इति श्रीमत्सुकुलसीतारामात्मजपंडितरघुनाथप्रसाद-
विरचितायां श्रीमद्भगवद्गीतामृततरंगिण्यां
पंचदशाध्यायप्रवाहः ॥ १५ ॥

Thus by Me this most secret teaching hath been told, O sinless one. This known, he hath become illuminated and hath finished his work, O Bhārata. (20)

۲۰- ازبس کہ میں نے باپ سمجھتا ہوں تجھے
یہ سِرِّ خفی کہا ہے میں نے تجھ سے
ہوتا ہے سمجھ کے اس کو انسان گیانی
کرنا نہیں رہتا ہے جہاں میں کچھ اسے

कह्यो शास्त्र इह गुह्य हौं प्रीतिविवश तेहि भूप ।
जान इसै नर बुद्धियुत हो कृतकृत्य सुरूप ॥ २० ॥

(२०)
सब से गुह्य-ज्ञान-शास्त्र का, तुम्हें सुनाया है निष्पाप; !
इसे जान कर हो जाता है, नर कृतकृत्य प्राज्ञवर आप ।

(۲۰)
اب تجھے میں نے بتائے ہیں جو اسرارِ ازل
انکو ارجن جان لے علم و عمل کا ماحصل

20. O sinless one, thus have I taught
This most mysterious science now,
This knowing, Bharat, man becomes
Enlightened, and his work is done.

20
Thus is this Teaching, most arcane,
revealed by ME, O Sinless One.
Illumined, He that understands :
what He came here to do, is done.

۲۰- اے [illegible] پاپ بھارت [illegible]

یہ شاستر جو [illegible] گیان [illegible] امرت سمان
[illegible]

२०

बतलाया यह शास्त्र तुझे है महागुह्य भी और सुसत्य ।
इसे जान धीमान और भी हो जावेंगे अति कृतकृत्य ॥

۲۰

راہِ عصیاں سے دور ہو تم — بھارت اس سے نفور ہو تم
اس علمِ خفی کا ہو کے ماہر — مجھ سے جو ہوا ہے تم پہ ظاہر
انسان ہو کامیابِ عرفاں — اس پر کھل جائے بابِ عرفاں
پا جائے سکونِ دل بالآخر — کرنا دھرنا نہ کچھ پڑے پھر

हे निष्पाप ! कहा तुझे, मैं यह शास्त्र सुगूढ ।
इसे जान ज्ञानी बने, सुकृतकर्मा अमूढ ॥४३॥
भरत-वंश-अवतंस हे !, परम गुप्त यह ज्ञान ।
प्राप्त करो कर्त्तव्य, अब, पालन अपना सुजान ॥४४॥

१५५६

پندرھوان ادھیاے پرسوتم یوگ

یعنی

حق شناسی کا طریقہ

یہ دنیا ایک نخلِ باشرف ہی　　جڑا اسکی صاف اوپر کی طرف ہی

ہین شاخین اِسکی زیرِ نخلِ مذکور　　ہین پتے وید۔ اسکے چشم بد دور

حقیقت اسکی جو جانے بڑا ہی　　وہی ویدانتی اہلِ صفا ہی

جو شاخین مختلف وصفون سے نکلین　　ہین بنیاد حرص و خواہش و کین

ہین محسوسات اُنکے پھول پتے　　عمل ہین پھل اسی دنیا کے دھندے

جڑین افعال انسانی ہی ہین　　جو نیچے کی طرف لٹکی ہوئی ہین

جو نخل ایسا ہی غائب ہی نظر سے　　ہوا ساں ہی نہاں چشم بشر سے

جڑ اُسکی ہی قوی و سخت از بس　　اسی کا ٹو اگر کچھ چل سکے بس

اگر دنیا کی خواہش پر نہ ہو غور　　کٹے یہ تیغ آزادی سے فی الفور

پھر اب کیا ہی تلاشِ مدعا ہو　　حواسِ عقل و دانائی بجا ہو

وہان پہونچے نہ ہو جس جا محن کچھ　　وہان سے پھر نہ ہو آگون کچھ

جو دانشمند نادانی سے ہو دور　　وہ دل پر فتح پاکر ہوگا مسرور

غم و راحت سے رکھیگا نہ مطلب　　رہیگی اُسپہ نازل رحمتِ رب

جو طاقت ہی ہماری غیر فانی ہی جانداروں مین اس سے زندگانی
قیام جیو یون ہوتا ہی تن مین کہ جیسے بو ہو گلہائے چمن مین
جو ہین کم فہم اس سے بے خبر ہین نہین واقف کہ کیا اسکے اثر ہین
ہی جس انسان کی چشم عقل پُر نور نہین وہ معرفت کی راہ سے دور
جو علم خود شناسی سے ہین آگاہ وہ حق کو دیکھتے ہین حسب دلخواہ
جو ہی خورشید عالمتاب مشہور ہی اسمین میری ذات پاک کا نور
یہی ہی چاند کا اور آگ کا حال نمایان انمین ہی میرا ہی اجلال
زمین مین ہو کے بھی داخل مری ذات دکھاتی ہی کراماتِ جمادات
نباتاتِ زمانہ جسقدر ہین بھروسا انکو میری ذات پر ہی
جو جیوالون کے تن مین ہی حرارت جو ہی ہضم غذا کی انمین طاقت
یہ سب میری ہی قدرت کی ہی امداد کہ ہین جاندار اس دنیا مین آباد
دلِ آفاق مین مسکن ہی میرا تمیز و حافظہ مخزن ہی میرا
مین ہی ہون رازدار علم تحصیل مجھی سے سب کی بر آتی ہی اُمید
مین ہی ویدون کا عالم رازدان ہون خبیر و بانی کون و مکان ہون
یہ ہستی بھی تعجب سے بھری ہی ہی فانی ایک قایم دوسری ہی
بدن تو ایک دن ہوتا ہی نابود مگر رہتا ہی دایم جیو موجود
جہان دونون سے بھی ہی ذات برتر سمجھ تو مجھکو ای مرد دلاور
سمجھ سے دور ہی ہر کام میرا قدیر و لامکان ہی نام میرا
جو ابناشی ہی تینون لوک مین ہی وہ ہی آزاد کسکی روک مین ہی

روا نہ کسانرا نفہمش ہوس
کہ سر سبزیٔ او چساں میشود
بود بیخ او محکم از یاد من
پس از قطع او منتہائی رسید
بجائیکہ نازد انکہ در آ
بمنزلگہ وصل پس آں روند
زیادہ مئی و امن افشاندہ ہست
دشمنے نیست نے محبت کس
بگوئیم ازاں خلوت خاص آہ
نگردید آنکس کہ انجا رسید
بود نور جاں شمہ نور من
ہمیشہ پس از مرگ با خود برد
دل و پنج حس جاں کشد سوئے خویش
دل و پنج حس ہچو کار خود اند
ز حالات جاں عاشقاں آگاہند
تماشاے جاں در بدن میکنند
ز من مستعار ست نور و فروغ
چہ مہر و چہ ماہ و چہ سوزندہ نار

کما ینبغی نیست معلوم کس
چگونگیش بہار و خزاں میشود
بپائش ز قطع امل پیشہ کن
بجائے کہ ناید بدید و شنید
دراں منزل خاص اند درا
کہ با دامن پاک چوں جاں رود
بنائے تمنا برافگندہ است
بدانند کہ باقی ست اللہ بس
کہ خود در تابش مہر و ماہ
نزاند ہے خبر ہیچ گوشے شنید
قریب است از دل بود در من
چو بادی کہ بوئے خوش و بد برد
درین گلستاں میکشد بوئے خویش
ز پابندی چشم یار خود اند
گرفتار لذات حس ابلہ اند
نہ چوں ابلہاں بر سخن میکنند
بود خوئے صبح صادق دروغ
فروزندہ تابندہ از من شمار

ادھیائے پانزدہم پرکھوتم جوگ نام

عجائب درختی ست این کائنات
ہمہ شاخہا سوئے پائین عیاں
میانہ پائدار ست و نا پائیدار
بود بید داں ہر کہ این راز یافت
تماشا کن او را درین کہنہ کاخ
ز گوں شاخہا گشت نمو میکنند
دگر سنگ کند میل بالا روی
خواص ہوا ہستش بود برگ و بار
تعلقات شائیش با اعمال بست

کہ ہیچش بپاتا ہے خوش صفات
در قہمائے بید ست ہر برگ آں
نہ پیدا شود آب و دانش قرار
نہ کار آں مانند تا یافت
بہر شاخ با شمشیر افگندہ شاخ
نہ آزو ہوا امر فرز میکنند
بمغز سخن رس کہ عارف شوی
ہوا و ہوس دار دش بیقرار
برین صفحہ گیر نقش آمال بست

منم آنکه بارِ جهان میکشم
شوم هر نباتات تا پرورم
فراموشی و یاد عالم منم
منم آنکه مقصود بید آمده
منم آنکه بیدا زبانِ من است
جهان از وجود و عدم باهم است
همه در فنا نیست عارف بجاست
اچهر جان و چهر قالبِ فنتی هست
جهانی رجهانم دشمن از جان اوست
من آنم که گشتم بخود آشنا
چو دانستم این را که من کیستم
ز فهمید خود پر آگاه اوتم شدم
شناسائے من عارفِ کامل است
بگفتم بتو راز پنهان خویش
بفهم و خبردار هشیار شو
همه آنکس که فهمیدے جا رسید

چه دانند یاران چسان میکشم
شوم آتش و مرغزاران خورم
درین خلق شادی و ماتم منم
منم آنکه یاس و امید آمده
ز عرش آنطرف آستانِ من است
چه گیسوئے خوبان خم اندر خم است
که او رفته است از خود و با خدا ست
دگر آنکه باکبر یا و منی است
بچشم آیدت هر که جهان اوست
گذشتم ز بحرِ فنا و بقا
گر فنا ز تن از پئے چیستم
چه معبود مسجود عالم شدم
بهر رنگ یادِ منش در دل است
نمودم ترا شوکت و شان خویش
مخواب این همه آه بیدار شو
دگر نه عبث رنج و محنت کشید

کسیدن جاکے راجہ سو گیا بس
جو تھا آمادہ جنگ و جدل وہ
کیا قتل اسکو اور رانی کو مارا
رہا چندے وہ مشغول طرب یون
قضا جو سر پہ آپہونچی قضا را
تھا پیش دھرم راج اسکا جو انصاف
ہزارون جنم پائے بد گہر نے
بشکل اسپ پھر پیدا ہوا وہ
قوی ہیکل ہوا وہ اسپ چالاک
وہ سوداگر وطن مین آکے پہونچا
کوئی راجہ وہان تھا اہل حشمت
ہنسا راجہ کو گھوڑا دیکھ کر صاف
ہوئی راجہ کو حیرت دیکھ کر یہ
کسی نے بھی نہ یہ عقدہ کیا حل
وہ گھوڑا تھا جو نایاب زمانہ
وہ ٹھوکر سے ہوا کو پست کرتا
کہا کرتا تھا راجہ ہوکے مسرور
چلا اس اسپ پر چڑھکر کسی روز
ہوا جب تشنگی سے راجہ بیتاب

یکایک محو غفلت ہو گیا بس
محل مین جاکے پہونچا بر محل وہ
کیا وہ ملک و زر قبضہ مین سارا
کیا پھر چرخ کجرو نے غضب یون
کیا دنیائے فانی سے کنارا
تو ٹھہرایا گیا بدکیش وہ صاف
لگا دنیا مین ہر سو گشت کرنے
میان دہر گھوڑا بنگیا وہ
تو اسکو لیگیا اک اہل ادراک
سر بازار گھوڑا لاکے پہونچا
خریدا اسپ کو کچھ دیکے قیمت
ہوئی بوسے وفا مد نظر صاف
کہی ہر ایک سے جاکر خبر یہ
گئی وہ بات ہی مین بات بس ٹل
کبھی کھایا نہ اس نے تازیانہ
پہونچ جاتا جدھر کو جست کرتا
یہ گھوڑا ہی عجائب چشم بد دور
ہوا جنگل مین جاکر جلوہ افروز
تو آپہونچا کنارے چشمہ آب

گیتا کے ادھیائے پانزدہم کا مہاتم

کوئی نرسنگھ راجہ نامور تھا
بہت راجہ کو تھی اس سے محبت
مگر دل مین یہ خواہان تھا بدآہنگ
وزیر اس کا شریر و بد گہر تھا
سدا رکھتا تھا دل سے اسکی الفت
کرون راجہ کا اپنے تاج و اورنگ

وہین اک صومعہ آہن بنا تھا
دیا گھوڑے کو باندھ اُستے شجر سے
وہان دیکھا برہمن ایکسا ذیہوش
وہ سب لڑکون سے کہتا گیان کی بات
تھا لڑکا اُس مین اک مشغول بازی
پدر نے دیکھا جب باچشم انصاف
کہا تو کھیل اس سے میرے فرزند
وہ کھیلا کرتا اس پتے سے دن رات
سِوا اسپ آگیا پتا وہ لے کر
جو یہ اسکو دیکھا با دل پاک
چلا بکنٹھ کیجانب وہ ذیہوش
پڑا دیکھا زمین پر قالب خاک
کہا خود اُسنے ہنسکر آسمان سے
کہ مجھکو ہو گئی مکت اب میسر
برہمن سے براہ نکتہ دانی
کہ مین نے مول جب اسکو لیا تھا
سبب اسکا ہی کیا فرمایئے آپ
کہا اُس جنم مین تھے آپ راجا
یہ گھوڑا تب وزیر بد گہر تھا

برہمن اُسمین اک اہل وفا تھا
گیا مندر کے اندر چشم و سر سے
جو گیتا پاٹ کرتا تھا بصد جوش
کہ سیکھے جسمین ہر طفل نکو ذات
نہ کچھ سنتا براہ حیلہ سازی
تو نیم اشلوک پتے پر لکھا صاف
ہی بہتر تیرے حق مین کلمۂ پند
ہوئی مرغوب خاطر اُس کو یہ بات
گرا دست پسر سے اُسکے سر پہ
تو چھوڑا اسپ نے وہ قالب خاک
کہ راجہ آیا اتنے مین بصد جوش
ہوا اس ماجرے سے دل مین غمناک
نکالا کلمۂ مطلب زبان سے
ہو غمناک تم ای بندہ پرور
کہا راجہ نے یہ رازِ نہانی
یہ مجھکو دیکھکر فوراً ہنسا تھا
زبان پر حرف مطلب لایئے آپ
یہی سب سازِ عشرت روبرو تھا
ہمیشہ تمکو منظور نظر تھا

بشکل اسپ اب پیدا ہوا تھا
گمراب ہو گئی اِسکو رہائی
غرض راجہ تے وہ سب راج چھوڑا
ریاضت کش ہوا مرد نکو ذات

اسی سے دیکھکر تمکو ہنسا تھا
خوشی سے اُسنے جنس مکت پائی
زر و اسباب تخت و تاج چھوڑا
لگا کرنے وہ گیتا پاٹ دن رات

پندرھویں ادھیائے کا خلاصہ

۱۔ متبدل کائنات اور غیر متبدل برہم - چودھویں ادھیائے میں تبدیلیاں پرکرتی کے گنوں میں بتائی گئی ہیں۔ اور آتما کو اسنگ و غیر متبدل کہا ہے یہ بھی بتایا ہے۔ کہ ذات احد یعنی بھگوان کے اُپاسک گنوں کی حد سے باہر آجاتے ہیں۔ اس ادھیائے میں بھگوان اپنا شدھ سروپ کھولتے ہیں :-

(ا) - اوّل کائنات کو درخت سے تشبیہ دے کر بتاتے ہیں۔ کہ اس کو اسنگ یعنی لے تعلقی کی شمشیر سے کاٹنا چاہیئے +

(ب) پھر وہ پد ڈھونڈھنا چاہیئے جو ذات قدیم ہے۔ جگت کا رچنے والا ہے۔ اور جہاں سے بازگشت نہیں ہوتی +

(ج) یہ پد انہیں نصیب ہوتا ہے۔ جو اگیان - کبر اور تعلق سے پار ہو گئے ہیں جو خواہش نہیں کرتے۔ اور اضداد کی جوڑیوں مثلاً دُکھ سکھ سے سروکار نہیں رکھتے۔ یہ پد بھگوان کا ہے +

۲۔ جیو آتما اور آواگون - یہی پد یعنی ذاتی سروپ سب جیووں کا بھی ہے جو بھگوان کے انش ہیں +

(ا)۔ جیو چونکہ اگیان سے موہے ہوئے ہیں۔ اس لئے بھوگوں کے واسطے گیان اندریوں اور من کو ساتھ لئے دنیا میں آتے جاتے رہتے ہیں۔ انہیں اپنے اصلی سروپ کے درشن نہیں ہوتے۔ مرتے دم اور جیتے جی گنوں سے گھرے ہوتے ہیں۔ اور بھوگ بھوگنے کی حالت میں اہل پنڈا اپنی حقیقت کو نہیں دیکھتے +

(ب) گیانی اور یوگی آتما کا انوبھو کرتے ہیں۔ لیکن جن کا انتہ کرن شدھ نہیں ہے یا جو غافل ہیں وہ آتم سروپ کو نہیں دیکھ سکتے +

۳۔ سرو آتم بھاو - جس طرح خواب میں نفس ہمارے خواب میں سرو ویاپی ہے۔ اسی طرح شدھ گیان سروپ آتما یا پُرش کائنات کی نام و صورت والی چیزوں میں ویاپک ہے۔ یہ بھگوان کا اصلی سروپ ہے۔ چنانچہ وہ سورج چاند اور آگ میں روشنی ہیں۔ زمین میں قائم ہو کر ہر چیز کو دھارن کرتے ہیں۔ اور سوم رس بن کر پودوں کو نمو دیتے ہیں۔ حرارت عزیزی بن کر غذا ہضم کرتے ہیں۔ اور برتی گیان اور برہم گیان کا باعث ہیں +

۴۔ پرشوتم گیان - پرش تین طرح کے ہیں +

(ا) کشر یعنی فانی پرش جو جسم خاکی ہے +

(ب) اکشر یعنی غیر فانی پرش جو سوکشم شریر اور اس کے ابھمانی جیو کا نام ہے اسے ہی آواگون ہوتا ہے۔ اور یہ تا حد نجات قائم رہتا ہے۔ یا اکشر کے معنی مایا کے لے لو +

(ج) پرشوتم یعنی پرماتما یا شدھ گیان جس میں ستھول اور سوکشم دونوں قائم ہیں۔ اور جو سرو ویاپی ہے۔ یہ بھگوان کا سروپ ہے۔ جو اس طرح بھگوان کا سروپ پہچان کر سرو آتم بھاو سے اُن کو بھجتا ہے وہ عالم کُل ہے۔ گیانی ہے۔ اُسے آواگون نہیں ہوتی۔ اسرار میں یہ سِتّر مخفی ہے۔ ارجن کو اس واسطے بتایا گیا ہے۔ کہ وہ شردھالو اور نشپاپ بھگت ہے +

تصویر نمبر ۱۵۔ رُوحِ بشر زبان سنسکرت میں نباتات کو "ادھار تیس" یعنی اپنی غذا زمین سے حاصل کرنیوالی کہتے ہیں۔ اسکے برخلاف انسان "اُردھ تیس" کہلاتا ہے اسلیئے کہ اسے جسم کے بالا حصے یعنی دہن سے غذا ملتی ہے۔ ایسی صُورت میں درخت اور انسان کا طرزِ نشوونما متضاد ہے۔ درخت میں تنہ۔ شاخ۔ برگ غنچہ و ثمر کا پھیلاؤ اوپر کی جانب

ہوتا ہے جسمِ انسان کی تقسیم میں گردن، شانہ، ہاتھ اور پاؤں کا رُخ نیچے کی طرف ہے۔ اُسکے احساسِ باطنی پر غور کیا جائے تو وہ بھی اُلٹے درخت کی مانند معلوم ہوتے ہیں جسمیں مایا یعنی قدرتِ کاملہ تنہ کی مثال ہے۔ صفات سہ گانہ شاخ کی صورت میں ظاہر ہیں۔ علوم ظاہری و باطنی بے شمار برگ کی طرح نُمایاں ہیں۔ لذاتِ نفسی مثلِ غنچہ کے شگفتہ ہیں۔ جملہ اعمال اس درخت کی جڑ بنکر اُس کو چاروں طرف سے گھیرے ہیں۔ مکافاتِ عمل بمنزلہ ثمر کے ہیں جو پیدا ہو کر چندے بالیدگی پاتے ہیں اور انجامِ کار معدوم ہو جاتے ہیں۔ اِن واقعات کی بنا پر حضرتِ انسان کو اُلٹے درخت سے مشابہت دینا عارفانِ ہند کی رُوحانیت اور شاعری تخیل کا اعلیٰ ثبوت ہے۔ جمادات میں کشش اتصال۔ نباتات میں طاقتِ بالیدگی۔ حیوانات میں حرارت غریزی اور انسان میں ہوش و خرد خصوصیات ہیں۔ آخر الذکر ہستی کو سب پر شرف حاصل ہے کہ وہ عالم کی تصویر آئینۂ دل میں اُتار سکتی ہے اور اُسکے معنی پر غور و خوض کرنے سے خود شناسی کی حد تک پہنچ سکتی ہے یہ تصویر ذاتِ پاک اور رُوحِ بشر کی احدیت جتاتی ہے۔ ہندی فلسفہ میں اس مسئلہ کو جیو برہم کی ایکتا کہتے ہیں۔

تصویر نمبر ۱۵

74

१५६८

ॐ

श्रीमद्भगवद्गीता

दैवासुर संपद् विभाग योग-अध्याय ॥१६॥

पृष्ठ १५६८ से १६४८ तक

युद्धक्षेत्र में श्रीकृष्ण और अर्जुन

سولھواں ادھیائے

دیو اسر سمپت وبھاگ یوگ یا طینت ملکوتی و شیطانی

پندرھویں ادھیائے میں ذات احد کا شدھ سروپ بیان ہوا ہے۔ اور یہ بتایا ہے کہ جو اُس کے اپاسک ہیں وہ موکش پد کو پہنچتے ہیں۔ اور جو اگیانی ہیں وہ آواگون کے چکر میں پڑے گردش کیا کرتے ہیں۔ اس ادھیائے میں گیان کے ذریعے موکش پانے والوں اور اگیان کے باعث دنیا سے دنیا میں بار بار آنے والوں کی طبایع اور میلان طبایع کی تشریح کرتے ہیں۔ ظاہر ہے۔ کہ جیسے اعمال آدمی کرتا رہتا ہے۔ ان کا اثر من میں رہتا ہے۔ اس کو واسنا کہتے ہیں۔ مرنے کے بعد انہیں واسناؤں کے مطابق آدمی کو سورگ یا نرک ہوتا ہے۔ اور وہاں سے یہی واسنائیں سبھاو یعنی خصلت کی صورت میں لیکر آدمی اس دنیا میں جنم لیتا ہے۔ نیک آدمی نیک خصلت یا نیک طینت لیکر پیدا ہوتے ہیں۔ اور دنیا میں آکر روحانی ترقی کرتے چلے جاتے ہیں۔ بد آدمی بد طینت لیکر یہاں آتے ہیں۔ اور ہوا و ہوس میں مبتلا رہتے ہیں۔ چونکہ اپنی طینت آدمی نے خود اپنے کرموں سے بنائی ہے۔ اس واسطے بری طینت کو وہ اپنے ہی اچھے کرموں سے کوشش کر کے بدل سکتا ہے۔ یہ اس ادھیائے کی تعلیم ہے۔ اچھی طینت کو طینت ملکوتی یا دیو سمپت کہتے ہیں۔ اور بری طینت شیطانی یا اسر سمپت۔ بھگوان پہلے طینت ملکوتی کے خواص بیان کرتے ہیں *

श्रीभगवानुवाच ।

अभयं सत्त्वसंशुद्धिर्ज्ञानयोगव्यवस्थितिः ॥ दानं दमश्च यज्ञश्च स्वाध्यायस्तप आर्जवम् ॥ १ ॥ अहिंसा सत्यमक्रोधस्त्यागः शांतिरपैशुनम् ॥ दया भूतेष्वलोलुप्त्वं मार्दवं ह्रीरचापलम् ॥ २ ॥ तेजः क्षमा धृतिः शौचमद्रोहो नातिमानिता ॥ भवंति संपदं दैवीमभिजातस्य भारत ॥ ३ ॥

दोहा–अभयहियेकीशुद्धता, ज्ञानयोगथिरहोय ।
दानयज्ञतपवेदरुचि, दमजुसरलताहोय ॥ १ ॥

अनहिंसाअरुसत्यमय, रहैक्रोधविननित्त ।
दानशांतबहुविधिरचै, दोषनआनैंचित्त ॥
दयाकरैसबजंतुपर, तजिचपलाईभाय ।
लाजअकर्मनितेसमृदु, व्यर्थक्रियाछुटिजाय ॥ २ ॥
तेजक्षमाशुचिधैर्ययुत, तजैद्रोहअभिमान ।
देवसंपदाजिनलही, जामेंयेगुणज्ञान ॥ ३ ॥

श्रीकृष्ण भगवान् अर्जुनसे कहते हैं कि, हे भारत ! दैवी संपदा प्राप्त भये मनुष्यको निर्भय रहना अंतःकरणकी शुद्धि प्रकृतिसे भिन्न आत्मा है ऐसी निष्ठा सुपात्रको कुछदेना और मनको विषयोंसे निवृत्त करना और निष्कामतासे भगवान्के पूजनरूप पंचमहायज्ञोंका करना वेदमंत्रादिकोंका जप एकादशीव्रतादिरूप तप सबसे सरल रहना जीवमात्रको पीडा न देना हित और यथार्थ भाषण क्रोधका न करना उदारता शांति याने इंद्रियोंको वश करना चुगली न करना भूतप्राणिमात्रपरे दया परस्त्रीधनादि पर इच्छा न करना अक्रूरता लज्जा व्यर्थकामका न करना तेज क्षमा याने सहनशीलता धीरज पवित्रता द्रोहका न करना मानप्राप्तिके वास्ते अति मानका न करना ये २६ गुण दैवीसंपदाके होते हैं ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥

۱- بیخوفی طبع اور باطن کی صفا ٹھیراؤ گیان یوگ میں خاطر کا
فیاضی۔ یگیہ کرنا اور ضبط حواس علم اور ریاضت سیدھا سادا ہونا

۲- غصے کا نہ ہونا اور بے آزاری سچ۔ ترک و سکون، اور نہ کھانی چغلی
لالچ کا نہ ہونا رحم سب پر کرنا سنجیدگی طبع۔ حیا اور نرمی

۳- استقلال و جلال اور ہونی چھما کبر اور حسد نہ ہونی اور ہونی صفا
ہے ارجن یہ صفات اس شخص کی ہیں جو شخص ہوا فرشتہ خصلت پیدا

दोहा—अभय शुद्धि हियकी तथा ज्ञानयोग दृढ भाव ।
दान यज्ञ श्रुतिपाठ तप दम इकनिष्ठ सुभाव ॥ १ ॥

शांत्यऽक्रोध अपिशुनता सत्य अहिंसा त्याग ।
करुणा लाज अचपलता मृदुता और अराग ॥ २ ॥

धृति अद्रोह अमानिता क्षमा तेज शुचिभाव ।
दैवी संपद जन्म जिस तिस ये होंय सुभाव ॥ ३ ॥

HEART'S purity, all fear cast out, 1
a steadfast Quest of Mystic Truth,
Gift, sacrifice and Self-control,
uprightness, penance, sacred lore,

Truth, harmlessness, and temper sweet, 2
detachment, hate of slander, peace,
Compassion for all lives, lust dead,
steadfastness, meekness, modesty,

Clean living, valour, patience, Will, 3
a guileless heart, and no conceit,*—
O Bhārata, belong to him
who comes to birth with gifts divine.

(۱)

شوقِ ذکر و فکر۔ بیخوفی۔ صفائے باطنی
زُہد و ضبط و فیضِ تعلیم و ریاض و سادگی

(۲)

صبر۔ سچائی۔ بہی خواہی۔ رضا۔ ترکِ خودی
رحم استغنا سکوں حلم و حیا سنجیدگی

(۳)

ہمّت و صلح و شرافت شان و عفو و انکسار
نیک انسانوں کے یہ اوصاف ہیں ای نامدار

ज्ञान योग और निर्भयता, यज्ञ, दान, दम अंतःशुद्धि;
सत्य, अहिंसा, स्वाध्याय, तप, त्याग, सरलता में है बुद्धि ।

(२)

शांति, अक्रोध, धैर्य्य, शुचि युत वे, चुगली द्रोह भाव से दूर;
प्राणि मात्र पर दया, रहें जो, लज्जा, तेज, क्षमा भर पूर ।

(३)

निर्लोभी, कोमल, अचपलता, तजते अतिमानी दुष्भाव;
दैवी-सम्पति से जो जन्में, उनके होते यही स्वभाव ।

1. Heart's purity and fearlessness,
In *Yog* of wisdom [1] steadfastness,
Gifts, sacrifice and self-restraint,
Uprightness, penance, studiousness.[2]

2. Truth, harmlessness and wrathlessness,
Renunciation, straightness,[3] peace,
Compassion,[4] meekness, modesty,
Uncovetousness, constancy.[5]

3. Forgiveness, vigour, fortitude,
Love,[6] purity, and pridelessness,
O Bhārat, these belong to him
Who comes to birth with Godlike gifts.

१

निर्भयता, शुचि वृत्ति सात्त्विकी, और सुसंस्थित रहना ज्ञान ।
यज्ञ तथा इन्द्रिय-संयम हों, स्वाध्याय, तप, आर्जव, दान ॥

२

सत्य, अहिंसा, क्रोध त्यागना, अपैशुन्य, हो भाव सुशान्त ।
अतिदयालु, निर्लोलुप, मृदु हो, अचपल, लज्जावान, नितान्त ॥

३

तेज, क्षमा, अद्रोह, शौच, धृति, निरभिमानिता हो पर्याप्त ।
दैवी प्रकृति-जन्य पुरुषोंको भारत ! ये गुण होते प्राप्त ॥

ا۔ بیخوفی ۔ صفائی و علم کا پیار
ایشور پریم میں دل کو ہو بس قرار
کرے دان یگ اور اندری دمن
سبھا و بیٹھا تپ اور شاستر اچار

۲- اہنسا- سچائی- غصے کا تیاگ
سچی شانتی اور چغلی سے بھاگ
سبھوں پر دیا حق پرائے سے نفرت
مدہرتا- لجا اور سچا ویراگ !

۳- کھیماں ہو دھرتی- تیج- پوترتا
دغا اور ابھمان سے ہو بچا
یہ عادات ہیں دیوتاپن کی ساری
ہے ارجن تجھے ہیں نے دینی سُنا

Fearlessness, cleanness of life, steadfastness in the Yoga of wisdom, alms-giving, self-restraint and sacrifice and study of the Scriptures, austerity and straightforwardness. (1)

Harmlessness, truth, absence of wrath, renunciation, peacefulness, absence of crookedness, compassion to living beings, uncovetousness, mildness, absence of fickleness. (2)

Vigour, forgiveness, fortitude, purity, absence of envy and pride—these are his who is born with the divine properties, O Bhârata. (3)

निर्भयता, अतिशुद्ध मन, योगमें टिकना, ज्ञान ।
यज्ञ, दान, मन रोकना, करना स्वात्मध्यान ॥ १ ॥

इन्द्रिय गणको रोकना, सभी कर्म फल त्याग ।
भोग चपलता क्रोध अरु, चुगली सताना त्याग ॥२॥

शान्ति सरलता परिश्रम, प्राणिदया अरु सत्य ।
कोमलता, लज्जा क्षमा, शुद्धि, तेज अरु धैर्य ॥३॥

वैर किसीसे कबहुं न, मान न करना घमण्ड ।
दैवि संग्रह चिह्न हों, भरतश्रेष्ठ प्रचण्ड ॥४॥

۱

بھگوان کی ہے نصیحت پاک — ہونا روشن ضمیر و بے باک
عرفاں سے کبھی نہ دل ہٹانا — قابو میں حواس کے نہ آنا
کرنا یگیہ از رہِ پرستش — رکھنا ہاتھوں کو صرف بخشش
پڑھنا وید اور ریاض کرنا — نیکی کے طریق سے سنورنا

٤

۲

ہرگز نہ کسی کا دل دکھانا — جو بات ہو دل میں لب پہ لانا
دشمن کی بھی دشمنی کو سہنا — ترک کامل سے مست رہنا
رکھنا دائم ٹھکانے جی کو — کہنا نہ کبھی برا کسی کو
بے نفس، حلیم، رحمدل، نرم — ہونا سنجیدہ اور باشرم

٤

۳

رخ پر شانِ جلال ہونا — ہر شکل سے خوش خصال ہونا
رکھنا عفو و عطا کا جوہر — ہونا صبر و رضا کا پیکر
جھگڑا نہ کسی سے مول لینا — عظمت پہ نہ اپنی دھیان دینا
دیوی سمپت کے ہیں جو انساں — ان کی یہ صفات ہیں نمایاں

(٤)

१५८८

दंभो दर्पोऽभिमानश्च क्रोधः पारुष्य-
मेव च ॥ अज्ञानं चाभिजातस्य पार्थ
संपदमासुरीम् ॥ ४ ॥

दोहा—दंभदर्पअज्ञानरिस, अरुअभिमानकठोर ।
तमकेएगुणजिनलहों, असुरसंपदाघोर ॥ ४ ॥

हे पृथापुत्र ! आसुरी संपदाको प्राप्त भये मनुष्यके दंभ, दर्प और अभिमान क्रोध और कटुभाषण और अज्ञान ये लक्षण होते हैं ॥ ४ ॥

(۴) [illegible]

۴۔ مکاری و کبر و خود نمائی و غرور دی — جہل اور غضب کا ہونا اور سنگدلی
پیدا ہو بشر جو اسے شیطاں طینت — یہ عیب ہوا کرتے ہیں اسمیں سب ہی

दोहा—दंभ दर्प अभिमान अरु क्रोध परुषताऽज्ञान ।
आसुर संपद जन्म जिस तिस सुभाव इह जान ॥ ४

¶Hypocrisy, pride, arrogance,
wrath, cruelty and ignorance,
Belong, O Friend, to him who comes
to birth with 'gifts' demoniac. 4

(४)

दम्भ, दर्प, अभिमान, क्रोधयुत, पारुष्य अज्ञानों का भाव;
जन्में जो आसुरी-सम्पदा से उन के हों यही स्वभाव।

4. Wrath, ignorance, hypocrisy,
Conceit and pride, and insolence,
O Pārth, these all belong to him
Who's born with gifts demoniac.

४

दम्भ, दर्प, अभिमान, क्रोध, फिर कर्कशता अति हो अज्ञान।
जो आसुर सम्पत्में होते, ये अवगुण उनमें तू जान॥

۴ - اسُرپن کی عادات کا سن بیان
دغا - درپ - غصہ چڑھے فوراً آن
جو کھوٹا وچن بول دل کو دکھاویں
ہو ابھمان جھوٹا روے ہیں نہ گیان

Hypocrisy, arrogance and conceit, wrath and also harshness and unwisdom are his who is born, O Pârtha, with demoniacal * properties. (4)

۴

جھوٹا اظہار پارسائی ۔ بیکار غرور و خود ستائی
غصّہ میں حواس و ہوش کھونا ۔ لہجہ کا درشت و سخت ہونا
سایہ میں جہالتوں کے پلنا ۔ ظُلمت کے راستے میں چلنا
شیطاں کی مانتے ہیں جو بات ۔ اِن میں بھی مِلتی ہیں یہ علامات

जब संपत्ति आसुरी, कुन्तिसुत ! हो व्यक्त ।
उत्पन्न अज्ञान तब, कटुता क्रोध सुव्यक्त ॥५॥
अहङ्कार पाखण्ड अरु, सखती अती घमण्ड ।
मानी इस लिये आसुरी, सम्पत् कारण बन्ध ॥६॥

१५५० १६/५

देवीसंपद्विमोक्षाय निबंधायासुरी मता ॥ मा शुचः संपदं दैवीमभिजातोसि पांडव ॥ ५ ॥

दोहा–देवसंपदातेमुकति, बंधआसुरीजोहि।
शोचैजिनिअर्जुनभई, देवसंपदातोहि ॥ ५ ॥

हे पांडुपुत्र! दैवीसंपदा मोक्षके वास्ते है आसुरी बंधनके वास्ते निश्चय की गई है तुम दैवीसंपदाको प्राप्त भये हो मत शोचो ॥ ५ ॥

(۵)

مغفرت کی راہ نیکی ہے تنزّل کی بدی
شُکر کر ارجُن کہ نیکو نہیں ہے پیدائش تری

۵۔ ہے بہر نجات یہ فرشتوں کی صفت شیطانی بند کیلئے ہے طینت
اے ارجن سمجھ تو ذرا بھی مت کر تیری ہے فرشتہ صفتی میں خلقت

दोहा–दैवीसंपद मुक्तिहित असुरी (संपदा) बाँधत मान।
शोक करो जिन–जन्म तव दैवी संपद जान (हुआहै) ॥ ५ ॥

The gifts divine, 't is held, prepare 5
for Freedom: the others faster bind.
Grieve not, for surely thou hast been,
O Pārtha, born with gifts divine.

(५)

दैव-सम्पदा मुक्ति-प्रदायक, असुर-सम्पदा बन्धन अर्थ;
दैव-सम्पदा में जन्मे तुम, त्याग शोक सब सूर समर्थ।

¶ 5. The Godlike gifts are deemed to be
The means by which is Freedom gained,
The others but enslave: grieve not,
For thou art born with gifts Divine.

५

दैवी सम्पत् मोक्षदायिनी और आसुरी बन्धन-हेतु।
हुआ दैव-सम्पत्‌में है तू मत कर शोक भरत-कुल-केतु ! ॥

۵ - اول جو کریں بیان دیوی صفات
ملے اس سے جیووں کو خالص نجات
اسُرپن تو بندھن کا داتا ہے یہہ
فکر کر نہ ارجن تو ہے دیوجات

The divine properties are deemed to be for liberation, the demoniacal for bondage. Grieve not, thou art born with divine properties, O Pândava. (5)

۵

دیوی سمپت طریق ہے خوب | یزدانی ہے روش یہ مرغوب
اس کی جو بہم صفات ہوجائیں | سب راہرو نجات ہوجائیں
لیکن سمپت جو آسُری ہے | شیطان کی راہ ہے بُری ہے
ہو اے ارجن نہ محو زاری | یزدانی ہے روش تمہاری

मुक्ति कारण दिव्य जो, सम्पत्ति सुपवित्र।
पाण्डुसुत ! मत शोक कर, तुझमें वही पवित्र ॥५॥

२५८२

१६/६

द्वौ भूतसर्गौ लोकेऽस्मिन्दैव आसुर एव च ॥ दैवो विस्तरशः प्रोक्त आसुरं पार्थ मे शृणु ॥ ६ ॥

दोहा--दैवआसुरीभेदते, द्वैविधिसृष्टिहैएहु ।
पहिलीकहिविस्तारसों, अबदूजीसुनिलेहु ॥ ६॥

हे पार्थ ! इस लोकमें दो प्रकारके प्राणीहैं एक दैव औरँ दूसरे आसुर दैवे विस्तारसे कहा आसुरको सुनो॥ ६॥

۶۔ خلقت دو ہی طرح کی ملتی ہے یہاں
ملکوتی و شیطانی یہ ہے راز نہاں
ملکوتی کی سُنا چکا میں تفصیل
شیطانی کا سناتا ہوں تجھ کو بیاں

दोहा—भूतसर्ग दो लोकमें आसुर दैव कहात ।
कह्यौ दैव भक्त्यादि सभ, आसुर अब सुन तात ॥ ६

(٦)

آدمی دُنیا میں ہیں نیک اور بد دو قسم کے
ذکر اُن کا ہو چکا اب حال انکا جان لے

In this world two 'creations' strive :— 6
angelic hosts and hellish pow'rs.
The former have been told at length :
of the other kind now hear me speak.

(६)

दैवी और आसुरी जग में, दो प्रकार की सृष्टि सदैव;
दैवी तुम सुन चुके अधिक हो, सुनो आसुरी प्रकृति तथैव।

6. Two kinds of creatures [7] dwell on earth,
The Godlike and demoniac.[8]
The first I have described at length,
Now of the second I shall speak.

६

दो प्रकारकी जीव-सृष्टि है दैव एक है आसुर एक।
दैव कही विस्तारसहित अब आसुरको तू सुन सविवेक ॥

۶- یہ دُنیا ہیں دو قسم انسان ہیں
شرائسر یہ دانا و نادان ہیں
شہروں کا کیا بیان تفصیل سے
اُسر کے سنن یوگ دیا کھیان ہیں

Twofold is the animal creation in this world: the divine and the demoniacal; the divine hath been described at length: hear from Me, O Pârtha, the demoniacal. (6)

۶

جتنے بھی ہیں بادہ خوار ہستی — دو قسم کی ہے سرشت ان کی
ہے وجہ فرشتہ خصلتی ایک — پیدا کرتی ہے عادتیں نیک
شیطاں کی سرشت دوسری ہے — ناکارہ و زشت دوسری ہے
پہلے کی تو کر چکا ہوں توضیح — اب دوسری کی سُنو یہ تشریح

प्राणि सृष्टि जगतमें, यहां है दो प्रकार।
असुर सरीखे एक हैं, दूजे देव आकार ॥८॥

दिव्य कहे विस्तारसे, अब तक मैं हे मित्र।
सुन मुझसे अब असुरकी, पार्थ कथा सुविचित्र ॥९॥

१५२४

९६
६

प्रवृत्तिं च निवृत्तिं च जना न विदुरासुराः ॥ न शौचं नाऽपि चाचारो न सत्यं तेषु विद्यते ॥ ७ ॥

दोहा–अवधिऔरविधिजगतकी, आसुरजानतनाहिं।
सत्यशौचआचारशुभ, नहिंएगुणतिनमाहिं ॥७॥

असुरस्वभाववाले मनुष्य संसारसाधन और मोक्षसाधनभी नहीं जानतेहैं उनमें न शुचिता और न शास्त्रीय आचरण न सत्यभी रहता है ॥ ७ ॥

(۷)

مردمانِ بد نہیں پہچانتے امر و نہی
اُن کے دِل سے دُور رہتی ہیں صفا و راستی

۷۔ شیطان صفت نہیں سمجھتے اصلا
کیا کرنا چاہیے نہیں کرنا کیا
ان میں نہ صفائی ہے نہ اعمال نیک
اور ملتا نہیں ہے راستبازی کا پتا

दोहा–स्वर्ग मोक्षके असुर जन जानत नाहिं उपाय।
सत्य शौच आचार अरु असुरनमें न लखाय ॥ ७

Whence man springs forth, where he returns, demoniac people never know ;
Nor cleanliness, nor decency nor truth is to be found in them. 7

(७)

प्रवृत्ति और निवृत्ति ज्ञान को, नहीं जानते आसुर-वृंद;
शुद्ध, सत्य आचार-भाव से, होते वे विहीन मति मंद।

7. The people who demoniac are
Nor action nor inaction know,
Nor purity, nor rectitude,
Nor truth is ever found in them.

७

क्या प्रवृत्ति है ? क्या निवृत्ति है ? यह न जानते आसुर लोग।
शौच और आचार न उनमें नहीं तथैव सत्यका योग॥

۷۔ ہوں مشغول کس میں کسے چھوڑ دیں
نہ جانیں اُدھر کس سے منہ موڑ دیں
نہ آچار ان میں صفائی ذرا
نہ ست سے کبھی رشتہ وہ جوڑ دیں

Demoniacal men know neither right energy nor right abstinence: nor purity, nor even propriety, nor truth is in them. (7)

۷

ہوتے ہیں جو بدشعار انساں — ان کو سمجھو مُرید شیطاں
کیا چیز نہی ہے امر کیا چیز — ان کو کچھ بھی نہیں ہے تمیز
باطن میں نہ ان کے ہے صفائی — ظاہر میں نہ ان کے پارسائی
رکھتے ہیں بُرائیاں چلن میں — ہوتی نہیں راستی سخن میں

सच्चाई न पवित्रता, सदाचार भी न।
फंसना हटना जानते, असुर वृत्ति जन न ॥१०॥

असत्यमप्रतिष्ठं ते जगदाहुरनीश्वरम् ॥ अपरस्परसंभूतं किमन्यत्कामहैतुकम् ॥ ८ ॥

दोहा—वेदपुराणजुईश्वरहिं, नाहींमानतमूढ ।
मैथुनतेसंसारयह, कामक्रोधअतिगूढ ॥ १ ॥
यहमैंल्यायोहैतबै, लहोंमनोरथऔर ।
यहधनमेरेगेहमें, जोरौंगोबहुऔर ॥ २ ॥ ८ ॥

वे असुरप्रकृति मनुष्य इस जगत्को कोई तौ असत्य याने मिथ्या और भ्रम कहते हैं कोई अप्रतिष्ठ याने इसका कोई आधार नहीं ऐसा कहते हैं कोई अनीश्वर कहते हैं स्त्रीपुरुषके परस्परसंयोगसे भये विना और जगत् क्या है केवल कामहीके निमित्तसे याने स्त्रीपुरुषके संयोगहीसे होताहै ऐसा कहतेहैं ॥ ८ ॥

(۸)
وہ بتاتے ہیں کہ کوئی صانعِ عالم نہیں
مالکِ کون و مکاں موہوم ہے ثابت نہیں

۸ — یہ کہتے ہیں دنیا کا نہیں کوئی خدا
جھوٹی ہے یہ سب نہ اس کا ماوا ملجا
پیدا ہوئی یکدگر کے ہے میل سے یہ
کیا اور سبب ہے اس کا شہوت کے سوا

असुर कहै जग असत् है ईश न आश्रय कोय ।
नरनारिनके संगसे कामहेतु जग होय ॥ ८ ॥

8

"A truthless, baseless, godless *thing*,
such is the world," these people say,
"Of coupled contraries brought forth,
the child of cosmic lust—what else?"

(८)

वे कहते "मिथ्या यह जग है", ईश्वर और प्रतिष्ठा हीन,
कामदेव हित अपरस्पर से, प्रादुर्भाव कहें वे दीन।

8. These people say that this world is
A truthless, baseless,[10] godless[11] thing;
The product merely, and nought else,
Of sexual union caused by lust.

۸ - وہ منتھیا کہیں سارے سنسار کو

نہ مانیں جگت کے ہی کرتار کو
یہ اک دوسرے سے ہی پیدا ہو
پرم بھوگ سمجھیں وہ ربھچار کو

८

वे कहते यह जगत् असत् है और अनीश, विना आधार ।
काम-हेतुसे पैदा होता अपरस्पर ही यह संसार ॥

"The universe is without truth, without basis," they say, "without a God*; brought about by mutual union, and caused by lust and nothing else." (8)

۸

جن کے شیطاں صفت ہیں کردار — وہ یوں رہتے ہیں محوِ گفتار
دُنیا کا ہے نہ وجود بالذّات — ہے اس میں بس اتحادِ ذرّات
امرِ باطل ہے اس کی ہستی — اس کا مالک نہیں کوئی بھی
مقصد ہے بس ایک خاص اس کا — لذّات سے اس کی سیر ہونا

ईश्वर जगका कोई न, अस्थिर है यह अनित्य ।
विषयमें जोडे जब मिलें, तभी हुआ यह कृत्य ॥११॥

१५८

९६/८

एतां दृष्टिमवष्टभ्य नष्टात्मानोऽल्पबुद्धयः ॥ प्रभवंत्युग्रकर्माणः क्षयाय जगतोऽहिताः ॥ ९ ॥

दोहा–अल्पबुद्धिहैंनष्टचित, यहदृष्टिगहिलेत ।
हिंसायुतकर्मनिकरै, रिपुजयछयकेहेत ॥ १ ॥
कर्त्ताविनमानतजगत, अथिरअसत्यसुजान ।
उपजतहैंयेपुरुषतैं, ताकेहेतुकोमान ॥ २ ॥
गहिकैऐसीदृष्टिको, नष्टचित्तजुकुबुद्धि ।
होतउग्रकेमानिते,जगतअहितविनशुद्धि ॥३॥९॥

वे अज्ञानी जन खानपानादिके अल्पपदार्थमें बुद्धिवाले ऐसी समुझको ग्रहणकरके उग्रकर्मकरनेवाले यांनें परस्त्री धन पुत्रादिकोंके हरन करनेवाले सर्वके अहित जगत्के नाशके वास्ते प्रवर्त्त होतेहैं ॥ ९ ॥

(٩)

امتزاجِ مادّی سے جملہ پیدائش ہوئی
علّت و معلول سے قسموں میں آفرائش ہوئی
دشمنِ ایمان و جاں ہیں جنکا ایسا ہی خیال
ایسے بد باطن سیہ کاری سے پاتے ہیں زوال

٩۔ قائم اس طرح رائے باطل کر کے
کرتے ہیں بُرے کام جگت کے دشمن
کم فہم یہ جن کے چت ہیں ناش ہوئے
اُٹھتے ہیں جگت کے ناش کرنے کیلئے

दोहा–दृढकर इस अज्ञानको असुर अल्पमति तात ।
कर्म करै बहु क्रूर वे जगछय करत मनात ॥ ९

9
This view their base, cut off from SELF,
their Soul* an undeveloped germ,
These men of gruesome deeds are born
as foes on world-destruction bent.

(९)

उग्र-कर्म वाले नष्टात्मा, अल्प बुद्धि ऐसे ही मूढ़;
लेकर दृष्टि आश्रय होते, लोक नाश हित शत्रु विमूढ़।

9. Holding this view, these ruined souls,
Small-witted and of gruesome deeds,
As haters of the world appear,
Upon its ruination bent.

९

नष्टात्मा वे अल्पबुद्धि नर इस मतको करते स्वीकार।
पैदा होते क्रूर-कर्मसे क्षय करनेको सब संसार॥

۹ - یہ مقصد رکھیں دل ہیں اگیان کا
پراپکار - تج - بلکہ پرہان کا
بڑے کام اکثر شروع تو کریں
ارادہ جگت کے ہی نقصان کا

Holding this view, these ruined selves of small understanding,* of fierce deeds, come forth as enemies for the destruction of the world. (9)

कहें वे जग यूंही बना, केवल भोगके हेत।
कारण कौनसा और हो, जिस लिये बना यह खेत॥१२॥
तुच्छ बुद्धि हीन आत्मा, दृष्टिकोन यह धार।
जग शत्रु उत्पन्न हों, घोर कर्मको धार॥१३॥
जगके नाश निमित्त ही, हों प्रवृत्त अपवित्र।
झूठे हठको पकड कर, अज्ञानी कुचरित्र॥१४॥

۹

جن کا ہے یہ خیالِ باطل
جو گھر اپنا لٹا چکے ہیں
بے عقل زبوں خرد دل آزار
کرتے ہیں جہاں میں حشر برپا

جو ہیں ایسی روش کے قائل
جوہر اپنا لٹا چکے ہیں
بے رحم دنی لئیم بدکار
ہوتے ہیں اسی لئے یہ پیدا

कामेमाश्रित्य दुष्पूरं दंभमानमदा न्विताः ॥ मोहाद्गृहीत्वाऽसद्ग्राहान्प्रे वर्त्ततेऽशुचिव्रताः ॥ १० ॥

दोहा–भजतअपूरवकामको, दंभमानमदपाय।
गहतुबुराईमोहते, मांसऔरमदखाय ॥ १० ॥

जो दुःखसेभी न पूरीहोय ऐसी कामनाको आश्रितहोके दंभ मान और मदयुक्त भयेहुये मोहसे असद्ग्राहोंका ग्रहणकरके याने मारण मोहन वशीकरणके उपाय करना ऐसे भ्रष्ट आचरण स्वीकार करके अपवित्रव्रत भूतादि सेवनेवाले भये हुए उनहीं कामोंमें प्रवर्त्त होतेहैं ॥ १० ॥

۱۰۔ ان میں ہے ہوس وہ نہیں جس کا انجام
لیتے ہیں مکر و کبر و مستی سے کام
کرتے ناکردنی ہیں اعمال بہت
یہ بدچلن اپنی جہل و غفلت سے مدام

दंभ मान मद युक्त हो इच्छा करत अपार।
असत समग्रीसों करैं व्रत अशुद्ध आचार ॥ १०

(۱۰)
ہو کے وہ ماؤمنی مکر و تکبر کے غلام
جہل کے ناپاک جذبوں سے لیا کرتے ہیں کام

10. Filled with desires unquenchable,
And passion, pride, hypocrisy,
Clinging to lies, delusion-led,
They with resolves unholy work.

10
In form of quenchless longing† sheathed,
at-one with fraud, conceit and lust,
Through glamour grasping lies for truth,
they strive, upheld by vows impure.

(१०)
कठिन कार्य्यों का आश्रय ले, दम्भ, मान, मद से संयुक्त;
मिथ्या निश्चय, मोह युक्त वे, रहते अशुचि व्रतों में युक्त।

१०

कर आश्रय दुष्पूर कामका, दम्भ, मान, मदसे हो भ्रान्त ।
कुत्सित कर्म मोहसे करते मनमाने करके सिद्धान्त ॥

۱۰ - کریں کامنا ہوں جو مشکل سے پوری
ٹھگی - مان - مدھ میں پناویں جبھوری
بھرم میں کریں جھوٹے جپ تاپ کو
برتوں میں رکھیں پاک بازی سے دوری

Surrendering themselves to insatiable desires, possessed with vanity, conceit and arrogance, holding evil ideas through delusion, they engage in action with impure resolves. (10)

۱۰

پُتلے یہ فریب کے دغا کے ہوتے ہیں خود نما بلا کے
خواہش کے غلام یہ دوامی لیکن محروم سیر کامی
بن کر باطل پرست انساں حد درجہ سیاہ مست انساں
ہوتے ہیں رہین بدشعاری کرتے ہیں پسند ہرزہ کاری

नशे घमण्ड पाखण्डसे, युत भोग परवीण ।
वासना जो नहीं तृप्त हो, उसके आश्रित, दीन ॥१०॥

चिंतामपरिमेयां च प्रलयांतामुपाश्रिताः ॥ कामोपभोगपरमा एतावदिति निश्चिताः ॥ ११ ॥

दोहा–जाकोकछुपरमाननहिं, ताचिंतामेंलीन ।
कामभोगअतिलोभहै, निश्चयमानतहीन ॥११॥

अपार और मरणांत चिंताको प्राप्तभये हुए कामोपभोगमें तत्पर इतनाँही सुखहै ऐसें निश्चयकियेभये॥ ११॥

۱۱ وہ فکر ہے اِن کی جان کے ساتھ لگا
محشر تک بھی نہ ہو سکے جو پورا
بشیوں کے بھوگ میں پھنسے رہتے ہیں
اور کہتے ہیں جو کچھ ہے یہی ہے اس جا

(۱۱)
مرتے دم تک فکرِ بے معنی میں رہکر مبتلا
حظِّ نفسانی سے پُر کرتے ہیں کاسہ عمر کا

-सिद्ध न हो जो प्रलयतक तिसकी चिंता ठान ।
विषयभोगको जान पर तिसमें खचित महान ॥ ११ ॥

Engrossed with boundless plans, stretched far ahead . . . but soon cut short by death, 11
Aspiring but to sate desire,
"That is the main thing", they are sure.

(११)

"विषयों का उपभोग परम है" जिनका है निश्चय यह एक;
घेरे रहती हैं चिंताएँ, प्रलय समय तक उन्हें अनेक ।

11. Indulging in unmeasured thoughts
That do not cease till death is reached,
To sate desire—their only aim,
Convinced that this is all in all.

११

अगणित चिन्ताओंमें रहते मरणकालतक ऐसे लोग।
दृढ निश्चयसे यही जानते है पुरुषार्थ काम उपभोग॥

۱۱۔ بڑی بھاری چنتا میں جو لین ہوں
مرن تک اسی کے ہی آدہین ہوں
جو سب سے بڑا مانتے کام بھوگ
ایسے نشچے ہیں وہ تو پرہین ہوں

Giving themselves over to unmeasured thought whose end is death, regarding the gratification of desires as the highest, feeling sure that this is all. (11)

11

لاکر دل میں خیال لاکھوں
مرتے دم تک یونہیں پریشاں
رہتے ہیں وہ اسیر کام لذّات
رہتی ہے یہ بات ان کے جی میں

پیدا کر کے وبال لاکھوں
ہر قسم کی اُلجھنوں میں حیراں
مطلب حظِ نفس سے ہے دن رات
راحت جو ہے کچھ تو بس اسی میں

प्रलयमें ही जो अन्त हो, ऐसी चिन्ता अनन्त।
फंसे उसी में सर्वदा, भोग विलास अनन्त॥१६॥

इसी को सब कुछ समझकर, सदा इसी में डूब।
विषय भोग सर्वस्व जो, जायं पाप में डूब॥१७॥

१६०४

१६
१२

आशापाशशतैर्बद्धाः कामक्रोधपरायणाः ॥ ईहन्ते कामभोगार्थमन्यायेनार्थसंचयान् ॥ १२ ॥

दोहा--आशाफांसनिसोंबँधे, कामक्रोधचितचाह।
जोरतधनअन्यायकरि, कामभोगनिर्वाह ॥१२॥

सैंकडों आशाकी फांसिनकरके बँधे भये काम और कोपके स्वाधीन भये कामभोगके वास्ते अन्याय करके द्रव्यसंचयको उपाय करते रहतेहैं ॥ १२ ॥

۱۲۔ پھندوں میں ہیں بے شمار امیدوں کے پھنسے ہیں شہوت اور غضب کے بس میں رہتے
نفسیوں کے بھوگ اس کی حصول کے لئے یہ ظلم سے دولت ہیں اکٹھی کرتے

آस अनंत लगायके कामक्रोधवश होय।
धन अनीतिसों भोगहित बहुत बटोरत सोय ॥ १२ ॥

Fast tethered by a hundred thongs
of hope, by lust and wrath enslaved,
They strive to glut their heartless greed,
amassing wealth by lawless means. 12

(१२)

काम क्रोध में रहें परायण, शत आशा-पाशों में बद्ध;
काम-भोग हित जोड़ें धन को, अन्यायों में हो सन्नद्ध ।

12. Bound by a hundred ties of hope,
Enchained by bonds of lust and wrath,
By means unjust they strive to gain
For sensual pleasures hoards of wealth.

१२

आशापाशोंसे वे जकडे काम-क्रोधमें होकर लीन।
सुखके हित अनीतिसे करते वे धनकी इच्छा मतिहीन ॥

(۱۲) سینکڑوں آشاؤں کے پھندوں میں بندھے ہوئے کام و کرودھ کے حوالے ... دولت جمع کرنے کی کوشش کرتے ہیں

१६०५

۱۲- جو پابند ہوں سینکڑوں خواہشوں میں
پھنسے غصہ شہوت کے ہوں پھر انشوں میں
ظلم پاپ سے دھن کماتے رہیں وہ
رہیں لین وہ بھوگوں کے پھر رسوں میں

Held in bondage by a hundred ties of expectation, given over to lust and anger, they strive to obtain by unlawful means hoards of wealth for sensual enjoyments. (12)

۱۲

اُمیدوں کے قفس میں پھنس کر
یہ جذبہ غیظ کے پرستار
جذبات ذلیل کے یہ حامی
بے انصافی سے کام لیکر

دام حرص و ہوس میں پھنس کر
یہ لذّتِ نفس کے خریدار
اکثر بخیال سیر کامی
یک جا کرتے ہیں دولت و زر

आस की फाहियों सैंकडों, में जकडे दिन रैन।
विषय भोग अरु क्रोधमें, उलझ रहे दिन रैन ॥१८॥
चाहते धन एकत्र हों, हो चाहे अन्याय।
तृप्त हमारी वासना, भोग की तब हो जाय ॥१९॥

१८०६

१६/१३

इदमद्य मया लब्धमिमं प्राप्स्ये मनोरथम् ॥ इदमस्तीदमपि मे भविष्यति पुनर्धनम् ॥ १३ ॥

दोहा—मनवांछितयहमैंलह्यौं, यहहौंचाहतनाँहिं ।
यहधनमेरैहैजुरौ, जोरिहौंऔरौमाहिं ॥ १३ ॥

मैंने आज यह पाया इस मनोरथको पावोंगा मेरे ऐह धनहै फिर यहभी होयेगा ॥ १३ ॥

کتنے رستے ہیں آرزو یہ دل کی ۔ پوری ہوئی آج دوسری کل ہوگی
ہم نے کر لی ہے اب یہ دولت حاصل ۔ کر لینگے حصول اور زر آگے بھی

دोहा—लीनों इह सामर्थ्यसों प्रापत होगो और ।
इह सभ मेरे पास है करौ और इकठौर ॥ १३

"See what I have to-day secured! 13
Hear what I've set my mind on next!
Already so much wealth is mine;
so much more shall some day be mine.

(१३)

प्राप्त कर चुका इसे आज मैं, कल पाऊँगा उसे तथैव;
यह धन मेरा है वह धन भी, पा जाऊँ अब मैं हे दैव!

13. "I have to-day obtained this thing,
This wish I shall obtain some day;
This wealth already I possess,
And that in future I shall have.

१३

आज मिला यह मुझको, कल वह मेरा पूरा होगा काम।
यह धन मेरा है फिर वह भी मेरा ही होगा धन धाम॥

۱۲- بڑا دھن میرے پاس موجود ہے
مجھے اور دھن بھی ملے گا

۱۳- مجھے آج کتنا پراپت ہوا
پاؤں گا منورتھہ جلد دوسرا

"This to-day by me hath been won, that purpose I shall gain; this wealth is mine already, and also this shall be mine in future. (13)

۱۳

سوچا کرتے ہیں دل میں ہر دم
تقدیر کے ہیں بڑے دھنی ہم
جو کچھ درکار تھا وہ پایا
یہ مال تو اپنے ہاتھ آیا
ہوگا دل مست و شاداب اور
پوری ہوگی مراد اب اور
دولت ہے یہ آج جتنی اپنی
آیندہ بھی رہیگی اپنی

मनोकामना सिद्ध मैं, यह कर ली है आज।
अन्य करूंगा सिद्ध फिर, यह है मेरा धन आज ॥२०॥
फिर यह धन हो जायगा, कभी मेरा सब और।
शत्रु लिया वह मार मैं, मारूंगा सभी और ॥२१॥

१६०८

१६
१४

असौ मया हतः शत्रुर्हनिष्ये चापरानपि॥ ईश्वरोऽहमहं भोगी सिद्धोऽहं बलवान्सुखी ॥ १४ ॥
दोहा—यहवैरीहैमैंहन्यो, करौंऔरकोअंत ।
ईश्वरहौंभोगीजुहौं, सुखीसिद्धबलवंत ॥ १४ ॥
मैंने येह वैरी मारा और औरनकोभी मारूंगा मैं ईश्वरेहौं मैं भोगीहौं मैं सिद्धहौं मैं बलवान्‌हौं मैं सुखीहौं ॥ १४ ॥

(۱۴)
ہم حریفوں کو نہ چھوڑینگے کرینگے پائمال
ہمکو حاصل ہے حکومت عیش طاقت اور کمال

۱۴ آج اس دشمن کو ہم نے اپنے مارا
اوروں کو بھی کل مارینگے ہے بات یہی
حاصل ہیں حظوظ اور مرادیں ہم کو
قدرت اپنی ہے زور اور سکھ اپنا

इह मार्‌यौ निजवैरि हौं और हि मारूं आज ।
भोगी सिध बलवान् सुखी हौं स्वतंत्रसरताज ॥ १४

"This rival has been slain by me, . . . — 14
those others soon will share his fate.
A king am I—I please myself,
I am successful, happy, strong!

(१४)
मुझ से मारा गया शत्रु वह, मारूँगा उस को जो अन्य;
मैं हूँ ईश्वर, भोगी एवम्, सिद्ध, सुखी, बलवान, अनन्य ।

14. "This foe of mine I now have slain.
The others also shall I slay,
A lord am I—I please myself,
I perfect am and happy, strong.

१४

मैंने ही इस रिपुको मारा कल लूँगा औरोंके प्रान।
मैं ही ईश्वर, मैं ही भोगी, मैं ही सिद्ध, सुखी, बलवान॥

۱۴- یہ دشمن میرا ایک مارا گیا
جلد دوسرے کو میں دوں گا ہٹا
میں ایشور و بھوگی میں ہوں کامیاب
سُکھی ہوں بلی ہوں نہ ثانی میرا

"I have slain this enemy, and others also I shall slay. I am the Lord, I am the enjoyer, I am perfect, powerful, happy; (14)

۱۴

ہم نے ہی یہ سر کیا ہے میداں
اب اِس دشمن کی جان لیں گے
اپنے کشور کے ہم ہیں دارا
ہم ہیں زور آور اور کامل

ہم نے لی اس غنیم کی جاں
اب اس کو پیامِ مرگ دیں گے
قبضہ ہر شے پہ ہے ہمارا
ہیں عیش تمام ہم کو حاصل

बल, धन, जन, से युक्त मैं, मुझ जैसा कोऊ और
मैं राज्य सुख भोगता, सिद्धि सकल मम ठौर ॥२२॥

आढ्योऽभिजनवानस्मि कोऽन्योऽस्ति सदृशो मया ॥ यक्ष्ये दास्यामि मोदिष्य इत्यज्ञानविमोहिताः ॥१५॥

दोहा—मैंहौंधनीकुलीनहौं, औरनमोहिंसमान ।
जज्ञोदेवमोहहिलहौं, मोहितयोंअज्ञान ॥ १५ ॥

मैं योग्यहौं उत्तम कुलमें जन्मो हौं मेरे समान और कौन है यज्ञ करौंगा दान देउंगा आनंद करौंगा ऐसे अज्ञानमें मोहेरहते हैं ॥ १५ ॥

۱۵۔ ہم عالی خاندان میں اور امیر
دنیا میں ہماری ہے بھلا کون نظیر
خوش ہونگے کریں گے یگیہ دینگے ہم دان
یوں جہل میں ہو رہے ہیں یہ شخص اسیر

दोहा—धनी कुलीन हौ सदृश सम जगमें कोऊ नाहिं ।
याग करौंगो देउंगो चितत इह मन माहिं ॥ १५ ॥

(۱۵)

سب سے اعلےٰ ہے ہمارا مرتبہ اور خاندان
زر کا سارا کھیل ہے یہ جنکے دل میں ہے گماں

"Well-born am I, and wealthy too,— 15
who else is there to match with me?
I'll sacrifice, give gifts, rejoice!"
By nescience thus in glamour held,

(१५)

मैं कुलीन, धनवान व्यक्ति हूँ, मेरे तुल्य कौन है और;
यज्ञ, दान, आनन्द करूँगा, कहते अज्ञानी शिरमौर ।

15. "Well-born I am and rich withal,
Who else is there like unto me?
I'll sacrifice, give alms, rejoice,"
So prate they by unwisdom fooled.

१५

धनवाला कुलीन मैं ही हूँ मेरे सदृश कौन स्वच्छन्द ।
यज्ञ, दान, सुख-भोग करूँगा यों अज्ञान मोहसे अन्ध ॥

۱۵- میں قابل ہوں اور خاندانی بڑا
نہیں دوسرا میرا ثانی بڑا
کروں موج یگ دان بھی میں کروں
جہالت سے یوں اجمانی بڑا

"I am wealthy, well-born; what other is there that is like unto me? I will sacrifice, I will give alms, I will rejoice." Thus deluded by unwisdom. (15)

۱۵

دولت سے مکاں بھرا پڑا ہے — کنبہ اعزاز میں بڑا ہے
ہے کس کو برابری کا یارا — ہمسر کوئی نہیں ہمارا
ہم یگیہ کریں گے دان دیں گے — عیش و عشرت پہ جان دیں گے
دنیا میں اڑائیں گے مزے خوب — یوں جہل کی تیرگی سے مغلوب

है मेरे सम और कोऊ, यज्ञ करूंगा दान।
आ-नन्द तब पाऊंगा, सदा यही रहे ध्यान ॥२३॥

इस अज्ञान से मूढ जन, डोल रहा जिस चित्त।
घिरे हुए मोह पाश से, विखर गया जिस चित्त ॥२४॥

अनेकचित्तविभ्रांता मोहजालसमावृताः ॥ प्रसक्ताः कामभोगेषु पतंति नरकेऽशुचौ ॥ १६ ॥

दोहा–उनकोमनबहुभ्रमतहैं, मोहजालपरिनित्त ।
परमघोरअतिनरकमें, कामभोगकेहित्त ॥१६ ॥

अनेकजगह चित्त लगनेसे भ्रमिष्ठ मोहके जालमें फंसे भये कामभोगमें आसक्त वे अपवित्र नरकमें पडते हैं ॥ १६ ॥

(۱۶)
نفس کے قابو میں جن کا قلب مضطر آگیا
[illegible]

۱۶۔ اُٹھتے ہیں طرح طرح کے خاطر میں خیال
رہتے ہیں پھنسے حظوظِ نفسانی میں
ان کو گھیرے ہوئے جہالت کا جال
اور دوزخ ناپاک ہے بس ان کا مآل

करत मनोरथ विविध अरु मोहजालयुत होय ।
कामभोगरत नरकमें पडत प्राणतज सोय ॥ १६ ॥

Their minds awhirl with countless thoughts, 16
'neath World-Illusion's net caught fast,
By sensual pleasures held in thrall,
they fall into a hell impure.

(१६)

भ्रांति-चित्त-वाले ऐसे नर, रहते मोह-जाल से बद्ध;
गिरते हैं अपवित्र नरक में, हो कर विषय-भोग-सन्नद्ध ।

16. Distracted sore by many a thought,
Entangled in delusion's snare,
Enslaved by sensual pleasures, they
Fall headlong in a hell unclean.

१६

विविध कल्पनाओंमें भूले फँसे मोहमें ऐसे नीच।
काम-भोग आसक्त हुए वे पड़ते अशुचि नरकके बीच॥

۱۶- ڈانواں ڈول چت جن کا ہر بار ہو
موہ جال میں وہ گرفتار ہو
سدا بھوگ کے شوق میں مست حال
پراپت اسے نرک کی غار ہو

Bewildered by numerous thoughts, enmeshed in the web of delusion, addicted to the gratification of desire, they fall downwards into a foul hell. (16)

۱۶

لاکھوں اوہام میں گرفتار
یوں گلچھرّے اُڑانے والے
عیّاشی سے غرض ہے جن کو
ناپاک زمانہ کی نظر میں

اگیان کے دام میں گرفتار
یوں عمر اپنی گنوانے والے
اوباشی کا مرض ہے جن کو
جلجاتے ہیں آتشِ سقر میں

उलझे भोग विलासमें, विषयभोगमें लीन।
गिरते गन्दे नरकमें, दीन हो रहे हीन॥२५॥

आत्मसंभाविताः स्तब्धा-धनमानम-
दान्विताः ॥ यजंते नामयज्ञैस्ते दंभे-
नाऽविधिपूर्वकम् ॥ १७ ॥

दोहा—निजबडिआईनितकहत, तबतनधनअभिमान।
नामममात्रयज्ञनिकरत,दंभीविनाविधान ॥ १७ ॥

जो आपको आपही श्रेष्ठ मानिरहे हैं और अनम्र हैं घन मान मदयुक्तहैं वे दंभसे अविधिपूर्वक नाममात्र यज्ञोंकरके यर्जन करते हैं ॥ १७ ॥

۱۷۔ سرکش ہیں یہ اور اپنی نظر میں ہیں بڑے ہیں اُن کو غرور اور دولت کے نشے
بے قاعدہ اور فقط دکھانے کیلئے ہوتے ہیں بڑے نام ہی کے یگیہ اُن کے

दोहा—आप कहैं अपनो यश धनमद मान प्रवीन ।
यशहित याग करैं कभी दंभ साथ विधिहीन ॥ १७

(۱۷)
سنگدل مغرور اور مدہوش مال و جاہ سے
پارسائی کا جو دم بھرتے ہیں شہرت کے لئے

Puffed up with self-praise, obstinate, 17
to money, pride, excitement, vowed,
They sacrifice in naught but *name*,
for show, in scorn of Ancient Law.

(१७)
अपने आप बड़े बन अकड़ें, रहते धन-मद-मान-निकेत;
नाम मात्र के करें यज्ञ वे, अविधि पूर्वक दम्भ समेत ।

17. Self-honoured, stubborn, filled with pride,
Intoxicated by their wealth,
For show alone they sacrifice,
With no regard for ordinance.

१७

आत्मप्रशंसी ऐंठ भरे धन और मान-मद-संयुत अज्ञ ।
करते वे विधि-हीन नामके लिये दम्भसे पूरित यज्ञ ॥

۱۷- بڑا آپ کو مان آکڑ کریں
دہن اور مان کے نشہ میں نت پھریں
کریں نام ماتر دکھانے کو یگ
ودھی چھوڑ کر طاق پر پھر دہریں

Self-glorifying, stubborn, filled with the pride and intoxication of wealth, they perform lip-sacrifices for ostentation, contrary to scriptural ordinance. (17)

17

کم ہیں دولت پرست مغرور — صہبائے خودی کے نشے ہیں چور
دیوانہ شوق خود ستائی — اپنی کرتے ہیں خود بڑائی
دولت پہ فضول اینٹھتے ہیں — عزت پہ فضول اینٹھتے ہیں
دھوکہ دینے کو فی الحقیقت — بے قاعدہ کرتے ہیں عبادت

अपने को ही मानते, सदा बडा जी ढीठ ।
नशे में यश धन धान्य के, उनका सुख न दीठ ॥२६॥
नाम मात्र के यज्ञ वे, करते विधि विहीन ।
दिखलावे के लिये ही, पाखण्ड मतिहीन ॥२७॥

अहंकारं बलं दर्पं कामं क्रोधं च संश्रिताः ॥ मामात्मपरदेहेषु प्रद्विषंतोऽभ्यसूयकाः ॥ १८ ॥

दोहा—अहंकारबलदर्पअरु, कामक्रोधगहिलेत ।
दोषीनिजपरदेहमें, मोकोंतेदुखदेत ॥ १८ ॥

अहंकार बल दर्प काम और क्रोधका आश्रयँकर रहे हैं ऐसे वे आपके और औरोंके देहोंमें रहे भये मेरेसे द्वेषं करते भये मेरी निंदा करतेहैं ॥ १८ ॥

۱۸ سے ان میں خودی طاقت و عجب و غرور ہیں نشہ خواہش و غضب میں یہ چور
مجھ سے کہ ہوں ان میں اور اوروں میں مقیم کرتے ہیں عناد اور رہتے ہیں نفور

अहंकार बल दर्प अरु काम क्रोधमें लीन ।
मोसें द्वेष बढाय के नास्तिकता मति कीन ॥ १८ ।

At-one with selfishness, brute force, 18
and arrogance and lust and wrath,
In other forms, as in their own,
these evil-minded men hate ME.

(१८)

अहङ्कार, बल, दर्प, क्रोध युत, कामाश्रय से निंद्य-स्वभाव;
अपनी और अन्य देहों में, रक्खें मुझ से द्वेषी-भाव ।

18. Indulging in brute force and lust,
And vanity and arrogance,
In other selves, as in their own,
With malice filled these men hate Me.

۱۸- وہ بل روپ ہیں اور اہنکار ہیں
غصے کام کے پھیر اور بچار ہیں
مجھے جو کہ سب کے پردے ہیں لبسوں
کریں نندا دُکھ دیں دلآزار ہیں

१८

अहंकार बल, दर्प, कामयुत, करके आश्रित क्रोधविशेष ।
निज-परमें स्थित मुझसे करते वे नर निन्दा-संयुत द्वेष ॥

Given over to egoism, power, insolence, lust and wrath, these malicious ones hate Me in the bodies of others and in their own. (18)

۱۸

مغرور ہر اک عمل پر اپنے
کرتے ہیں گھمنڈ بل پر اپنے
نفسِ امّارہ کے ہیں محکوم
ضبط غیظ و غضب سے محروم
کرتے ہیں یہ خود زیان اپنا
دیتے ہیں یہ دوسروں کو ایذا
حیراں کرتے ہیں یوں مجھے بھی
سب میں ساکن ہے ذات جسکی

ले आश्रय अहङ्कारका, बल घमण्ड अरु भोग ।
निन्दक क्रोधी वैर कर, मुझसे पावें रोग ॥२८॥
औरों की अरु इन्हीं की, देहों में रहा व्याप ।
अन्तर्यामि ईश जो, करें यह उससे पाप ॥२९॥

तांनहं द्विषतः क्रूरान्संसारेषु नराध-
मान् ॥ क्षिपाम्यजस्रमशुभानासुरी-
ष्वेव योनिषु ॥ १९ ॥

दोहा—मोद्रोहीअरुमोहते, पापीअधमनिहारि ।
जगतआसुरीयोनिमें, तिन्हैं देतहौंडारि ॥ १९ ॥
मैं उन द्वेषकरनेवाले क्रूर अशुभ नराधमोंको संसार
में आसुरीही योनिनमें वारंवार पटकता हौं ॥ १९ ॥

(۱۹)
ایسے مُوذی بدچلن ظالم ذلیل اشخاص کا
نسلِ شیطانی میں ہوتا ہے تنزّل بارہا

۱۹۔ اُن اہلِ عناد و سرکشوں کو میں سدا — نوعِ انسان میں ہیچ جن کو ہے کہا
دنیا میں پھینکتا ہوں اُن نسلوں میں — شیطانی و ناپاک ہیں جو سرتاپا

दोहा—असुर नराधम मोहिसों द्वेष करत जे तात ।
हौं तिन आसुरयोनिमें जनि (जन्म) हित सतत गिरात ॥ १९

19

These haters, evil, pitiless,
most vile of men in all My worlds,
I constantly hurl back again
to birth in other godless wombs.

(१९)

क्रूर, नीच, विद्वेषी एवम्, अशुभ आचरण वाले भ्रष्ट;
लोकों में मुझसे पाते हैं, सतत आसुरी-योनि निकृष्ट ।

19. These merciless and evil men,
These haters,[12] vilest of the vile;
For ever do I hurl them back
In wombs demoniac in the worlds.[13]

१९

अशुभ क्रूर कर्मोंके कर्त्ता मेरे द्वेषी अधम तथैव ।
इन्हें आसुरी योनि-बीच ही पार्थ ! डालता रहूँ सदैव ॥

١٩- ہیں ان کو جو ودیشی و کھوٹے ہیں نر
جو سنسار ہیں نیچ بن کر بشر
اسر یونی ہیں پھینک کر بار بار
پٹکتا ہوں ان کو ہی زیر و زبر

These haters, evil, pitiless, vilest among men in the world, I ever throw down into demoniacal wombs. (19)

١٩

ایسے جتنے ہیں ننگ آفاق ادنیٰ کردار پست اخلاق
بے رحم دنی گناہ پیشہ کرتے ہیں جو بدی ہمیشہ
کہتے ہیں کسب رذیل ان کو کرتا ہوں میں ذلیل ان کو
قالب دیتا ہوں ان کو ایسا ہوتے ہیں وہ عاصیوں میں پیدا

नर नीच यह जगतमें, करें भयङ्कर कर्म।
सदा जलें जो अन्यसे, पावें कहां वह शर्म ॥३०॥
मैं उनको हूं फैंकता, अशुभ जन्मके बीच।
असुरों की ही जूनमें, बार बार पडें नीच ॥३१॥

आसुरीं योनिमापन्ना मूढा जन्मनि जन्मनि ॥ मामप्राप्यैव कौंतेय ततो यांत्यधमां गतिम् ॥ २० ॥

दोहा—जनमजनममेंमूढते, होतजुआसुरआय ।
मोकोतेपावतनहीं, परतअधमगतिजाय ॥ २० ॥

हे कुंतीपुत्र ! वे मूर्ख जन्मजन्ममें आसुरी योनिको प्राप्तभये हुये मेरेंको न प्राप्तहोके फिरे अधमगतिको प्राप्त होते हैं ॥ २० ॥

۲۰. شیطانی نسل میں یہ جاہل آ کر — اور جنم کے بعد جنم اس جا پا کر
مجھ کو ہرگز نہیں پہنچنے پاتے — گرتے رہتے ہیں اور نیچے جا کر

आसुरकुलमहँ जन्मते कर मम वैर सदाहीं ।
मोहि प्रापत ना होयँ वे जायँ अधोगति माहिं ॥ २० ॥

(۲۰)

جہل و بدکاری سے جنکی زندگی تاریک ہے
اُن رذیلوں کے لئے تزحیک ہی تزحیک ہے

Thus in surroundings godless born, 20
life after life in stupor whelmed,
Unless e'en *they* somehow find ME,
the worst of fates is theirs at last.

(२०)

इस प्रकार आसुरी-योनि में, पुरुष विमूढ़ रहें जो व्याप्त;
नहीं मुझे जन्मान्तर पावें, सतत अधोगति करते प्राप्त ।

20. Deluded they from birth to birth,
Are born within demoniac wombs;
Ne'er, reaching Me, O Kunti's son,
They sink into the lowest depths.

२०

इस प्रकार वे जन्म-जन्ममें आसुरयोनि प्राप्त हों लोग ।
मुझे न पाकर, वे पाते हैं महा अधमगतिका संयोग ॥

۲۰- اُسریونی کو پا کے پھر بار بار
وہ مجھ سے پرے جاتے کوسوں ہزار
وہ آنند سے ہوتے ہیں دُور دُور
گتی نیچ کے وہ تو مالک شُمار

Cast into demoniacal wombs, deluded birth after birth, attaining not to Me, O Kaunteya, they sink into the lowest depths. (20)

۲۰

اے کونتے یہ جاہل انساں — احمق، بے عقل خوار ناداں
ہر جنم میں یونہی سلسلہ وار — پیدا ہوتے ہیں زشت کردار
مُجھ سے بعید نفور رہ کر — سایہ سے بھی میرے دور رہ کر
ہوتے ہیں ذلیل اور بھی یہ — اُٹھتے نہیں گر کے پھر کبھی یہ

जन्मान्तर अरु जन्ममें, असुर जून ही पा।
नीचे नीचे जायं तब, नहीं सकें मुझे पा ॥३२॥ (20)

१६.२२

१६/२१

त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाशनमा-

त्मनः ॥ कामः क्रोधस्तथा लोभस्त-
स्मादेतत्त्रयं त्यजेत् ॥ २१ ॥

दोहा--नरकद्वारविधितीनहैं, देतआपुकोनास ।
कामक्रोधअरुलोभपुनि, रणछोडैसुखवास॥२१॥

कामना, क्रोध तथा लोभ यह तीन प्रकारका नरकका द्वार आपका नाशनेवाला है याने संसारमें भ्रमानेवाला है इससे इन तीनोंको त्यागना ॥ २१ ॥

۲۱- دوزخ کے ہیں تین اس جہاں میں ابواب
نام اُن کا ہے خواہش غضب اور طمع
جن میں ہوتی ہے زیست انسانی خراب
پیدا کرو اِن کے چھوڑنے کا اسباب

(۲۱)
شہوت خواہش اور غضب ہیں تینوں نرک کے دروازے ہیں
اپنے آپ کو دل سے ہٹا دو ان کو لینے نہیں کہیں

दोहा—तीन नरक के द्वार हैं नाशक अपने जान ।
काम क्रोध अरु लोभ, इन तासुँ तजे सुज्ञान ॥ २१

21

Threefold the gate of that dread hell
in which the lost soul is destroyed:
Lust, anger, and the greed of gai .
Therefore let man avoid these three.

(२१)

कामः क्रोध, लोभ तीनों हैं, नरक-द्वार इनका अनुराग;
नष्ट आत्मा को करता है, अतः उचित है इनका त्याग ।

¶ 21. The gates of hell, in number three
Are lust and wrath and avarice.
Destructive of the self are these,
Therefore from them let men abstain.

۲۱- نرک کنڈ کے تین دوارے کھلے
کہ نج ناش کو جاتے ہیں نر بھلے
غصہ - کام - لوبھ ان کے یہ کام ہیں
انہیں تیاگ برہم سے ملے اور چلے

२१

काम और है क्रोध, लोभ, ये तीन प्रकार नरकके द्वार ।
आत्मनाश-कारक है, इससे इनको तजना सर्वप्रकार ॥

Triple is the gate of this hell, destructive of the self—lust, wrath, and greed; therefore let man renounce these three. (21)

۲۱

لذّات حواس کی پرستش ہر قسم کی راحتوں کی خواہش
غصّہ کی بلا سے زیر ہونا دنیا سے کبھی نہ سیر ہونا
تینوں باتیں ہیں باب دوزخ ہیں یہ وجہ عذاب دوزخ
ان سے ہوتی ہے روح محجوب ان کا تو ہے ترک ہی بہت خوب

हे कुन्तिसुत ! नाशका, त्रय प्रकार यह द्वार ।
आत्माके लिये नरकका, त्याग इसे सौबार ॥३३॥
भोग क्रोध लालच कही, त्याज्य तिक्कडी रूप ।
अतः सदा त्यागे इसे, यही त्याग सुखरूप ॥३४॥

एतैर्विमुक्तः कौंतेय तमोद्वारैस्त्रिभि-
र्नरः ॥ आचरत्यात्मनः श्रेयस्ततो
याति परां गतिम् ॥ २२ ॥

दोहा—तीनौद्वारजुनरकके, तिनतैंछुटैजुकोय ।
जतनकरैकल्याणको, तबहिंपरमगतिहोय॥२२॥

हे कुंतीपुत्र ! इन तीनों नरकद्वारोंकरके छुटोभया मनुष्य आपके कल्याणका साधन करताहै उससे परम-पदको प्राप्त होताहै ॥ २२ ॥

۲۲. ظلمات کے ان تینوں ہی دروازوں سے جو شخص کہ دنیا سے دنی میں نکلے
وہ ہی کرتے ہیں بس بھلائی اپنی اور بعد میں ہیں پرم گتی کو پاتے

मतिनाशक कामादिकों रहित होय नर तात !
लग अपने हित ज्ञानमें परमगतीको पात ॥ २२ ॥

(۲۲)

جہل و بدکاری سے پھر جاتی جب اُنکی نظر
منزلِ مقصود تک ہوتا ہے نیکوں کا گذر

22

Kauntéya, from this triple Gate
of Darkness making his escape,
Man first does what is best for him ;
and, after, seeks the Final Goal.

(२२)

तम के इन तीनों द्वारों से, जो नर हो जाता है मुक्त;
वही परम गति को पाता है, हित-आचरणों से हो युक्त ।

22. The man who from these portals three
Of darkness is released, works out
His own salvation, Kunti's son,
And thus attains the Goal Supreme.

२२

तमोद्वार इन तीनोंसे जो पुरुष मुक्त हो जाता पार्थ ! ।
अपना श्रेय साधते उसको हो उत्तम गति प्राप्त यथार्थ ॥

۲۲- تینوں دوار سے جو کوئی بچ گیا
ملا سورگ اِس کو سمجھ سچ گیا
وہ کلیان کا پا کے مارگ صحیح
تو آنند اس میں سکل رچ گیا

A man liberated from these three gates of darkness, O son of Kunti, accomplisheth his own welfare, and thus reacheth the highest goal. (22)

۲۲

اِن سے جو رہائی پا چکا ہے — غالب تینوں پہ آ چکا ہے
جو اِن عیبوں سے مجتنب ہے — اپنا خود دوست ہے مُحب ہے
ہے بامِ عمل بلند اس کا — ہے ڈھنگ یہ سود مند اس کا
ہوتا ہے وہ رُستگار اک روز — مجھ تک پاتا ہے بار اک روز

अज्ञानके द्वार इन, तीनोंसे नर छूट ।
आत्माका कल्याण कर, पायं सुगति सुखरूप ॥३५॥

यः शास्त्रविधिमुत्सृज्य वर्त्तते कामकारतः ॥ न स सिद्धिमवाप्नोति न सुखं न परांगतिम् ॥ २३ ॥

दोहा–जेशास्त्रविधिछोड़िके, करतक्रियावशकाम ।
सिद्धिलहैनहिंपरमगति, नहिंसुखमों विसराम२३

जो शास्त्रविधिको त्यागिके स्वईच्छाप्रमाण चलताहै सो न सिद्धिको पावताहै न सुखको न मोक्षको पावताहै ॥ २३ ॥

(۲۳)
مگر لیا اخلاق کی معیار سے جس کا خیال
ان کی قسمت میں نہیں عرفان، راحت و وصال

۲۳۔ جس نے چھوڑا ہے شاستر کا رستہ   اور کرتا ہے وہ کام ہوس کے اسجا
سِدھی سُکھ اور پرم گتی اے ارجن   اس کو ملتی کبھی نہیں ہے اصلا

दोहा--वेदाज्ञाको त्यागकर जो स्वतंत्र होजात ॥
सो सिद्धी सुखको तथा परगतिको नहिं पात ॥ २३ ॥

¶ Who, scorning word of Holy Writ, 23
will live as selfish fancy bids,
Secures nor true success, nor joy,
still less the final Goal of MAN.

(२३)
त्याग शास्त्र-विधि जो नर चलता, निज इच्छा ही के अनुसार;
उसे सिद्धि, सुख और परम गति, नहीं मिल सकै किसी प्रकार।

¶ 23. Who scorning Holy Ordinance
Doth act as bid by his desires,
Perfection gains not, nor yet joy,
Nor doth he reach the Goal Supreme.

۲۳۔ اگر شاستر ودھ کو چھوڑے کوئی
کرم سے مگر رشتہ جوڑے کوئی
نہ پاوے وہ سدھی نہ سکھ کو ذرا
وہ مکتی سے بھی منہ کو موڑے کوئی

९६२६

२३

छोड़ शास्त्रकी विधिको जो नर करता है मनमाने काम ।
उसे न मिलती सिद्धि और सुख, तथा न मिलता उत्तम धाम ॥

He who, having cast aside the ordinances of the Scriptures, followeth the promptings of desire, attaineth not to perfection, nor happiness, nor the highest goal. (23)

۲۳

جو شاستر کی راہ چھوڑتا ہے — جو قاعدے ان کے توڑتا ہے
رہتا ہے جو خلاف ان سے — کرتا ہے جو انحراف ان سے
لیتا ہے وہ کام حسب مرضی — ہوتی نہیں شاد روح اس کی
تکمیلِ حیات سے ہے محروم — وہ لطف نجات سے ہے محروم

शास्त्र रीतिको छोड जो, वर्ते स्वेच्छाचार ।
परम गति सुख पाय न, यत्न करे सौबार ॥३६॥
सिद्ध न होवे वह कभी, अतः शास्त्रको मान् ।
निर्णय कर्म अकर्ममें, सदा ही तू परमाण ॥३७॥

१६
२४

तस्मा॑च्छास्त्रं प्रमा॑णं ते॑ कार्याकार्य-व्यवस्थि॑तौ ॥ ज्ञात्वा॑ शास्त्र॑विधा-नोक्तं कर्म॑ कर्तु॑मिहा॑र्हसि॑ ॥ २४ ॥

दोहा—तातेंकाजअकाजमें, तोकोंवेदप्रमान ।
कर्मनिकीरतूजानिके, तिनकोविधिसुविधान॥१॥
वेदकरतुजुपरोक्षकै, मोकोदेतजनाय ।
मेरेईकर्मनिकरै, मेरीआज्ञापाय ॥ २ ॥ २४ ॥

ईससे तुमको कार्याकार्यव्यवस्थामें शास्त्रप्रमाण जानिके ईस लोकमें शास्त्रविधानोक्त कर्म करनेको योग्यहो ॥ २४ ॥

इति श्रीमत्सुकुलसीतारामात्मजपंडितरघुनाथप्रसाद-विरचितायां श्रीगीतामृततरंगिण्यां षोडशोऽध्याय-प्रवाहः ॥ १६ ॥

۲۴- اس واسطے کل امرونہی ہیں اس جا — قول فیصل ہے شاستر ہی تیرا
یاں جاں کے شاستر کا رستہ ارجن — کرنا جو کام ہے کرا ے مرد خدا

कर्तव्याऽकर्तव्यमें शास्त्रहि मान प्रमान ।
शास्त्र कहे कुं विचार कर करहु कर्म हितजान ॥ २४

۲۴- اسی واسطے شاستر پرمان سے
کرے کرم واقف ہو وگیان سے
ضروری علم شاستر کا کرو
کرو کرم پھر پریم اور دھیان سے

२४

इससे कार्य-अकार्य-बींच तूँ मान प्रमाण शास्त्र-अनुसार ।
शास्त्र-विधान जानकर जगमें सकल कर्म कर पाण्डु-कुमार! ॥

24. Let Scripture, then, decide for thee
What should be done or left undone.
Thus knowing what the Law ordains,
In action here thou shouldst engage.

(۲۴)

اے دلاور عقل سے پہچان لے امر و نہی
پیروی واجب ہے تجھکو شرع کے احکام کی

Let Scripture, then, decide for thee 24
what should be done or left undone.
What Holy Writ ordains once known,
do thou engage in action here.

(२४)

कार्य्य-अकार्य्य-व्यवस्था में हों, शास्त्र प्रमाण, समझ कर मर्म;
-शास्त्रोक्त-विधि ही से तुम को, करना सभी चाहिए कर्म ।

Therefore, let the Scriptures be thy authority in determining what ought to be done, or what ought not to be done. Knowing what hath been declared by the ordinances of Scriptures, thou oughtest to work in this world. (24)

۲۴

کیا امر ہے ناروا، روا کیا
بے جا کیا کام ہے بجا کیا
ہے شاستروں میں سب یہ مذکور
درج ان میں ہے ہر ایک دستور
دانشمندی سے کام لیکر
ان دستوروں پہ دھیان دیکر
لاؤ ان کو بجا ہمیشہ
یوں فرض کرو ادا ہمیشہ

शास्त्र वेदकी रीति जो, कही उसे पहिचान ।
कर्म तुझे ही चाहियें, करने जो परमाण ॥३८॥

In action here thou shouldst engage.

سولھوان ادھیاے دیوا سر سمپت یوگ

یعنی
سُر اور اُسر کا فرق

ہین جو اوصاف سُردن کے وہ بیان ہوتے ہین
دل مین کچھ خوف نہ ہو۔ صاف ہو آئینہ دل کا
عاجز و مسکین ہو۔ ہون قابو مین حواس
پیر فقیر نہ ہو۔ عقل ہی سے کام کرے
زندگی کے بسر ایام کرے نرمی سے
راستبازی پہ فدا ہو نہ کرے غیظ و غضب
کبھی غیبت کا نہ عادی ہو۔ کرم سب پر ہو
رحم ہو شرم و حیا اور چھما ہو دل مین
تیاگ ہو یعنی ہو لذات زمانہ سے حذر
بے ادب ہو نہ کسی سے ہو خصومت زنہار

سن لے ارجن وہ صراحت سے عیان ہوتے ہین
گیان کے جوگ مین ہو ست خیال کامل
بارہ قسمون کے جو جگ ہین وہ کرے نیک قیاس
تپ کرے شغل ریاضت سحر و شام کرے
کسی ذی روح کو دکھ نہ ہٹ دھرمی سے
ہو نہ چنچل دل النسان ہو سکونت کا سبب
بلتجی ہو نہ کسی سے نہ ہوا ے زر ہو
ہو تحمل۔ تو طہارت کی ہوا ہو دل مین
دل پہ غالب نہ ہو کچھ خواہش دنیا کا اثر
رعب قایم رہے مغرور نہ ہو نیک شعار

جو اُسر ہین وہی ظالم بھی ہین مکار بھی ہین
عادتین اُنکی مصیبت مین اُنھین رکھتی ہین
جو اُسر ہین وہی ناپاک ہین اہلِ شر ہین
نہ وہ احکامِ مناسب کے ہین پابند کبھی
تن پرستی کے سوا کچھ بھی خبر اُنکو نہین
قول ہی اُنکا کہ دنیا ہوئی خود ہی موجود
ہین یہ خودرفتہ و بدمست خرد سے خالی
اُنکو خودبینی و شورش سے جہی فکر مدام
زندگی ہی پہ مرجاتے ہین خوش ہوتے ہین
ہی یقین اُنکو کہ شہوت ہی ہی مطلب کیلئے
پے تحصیل مطالب وہ ستم ڈھاتے ہین
غیر کے مال کے خواہان وہ سدا رہتے ہین
سوچتے ہین کہ فلان شخص کی عزت نہ رہے
قتل کرنے مین تامُّل نہ جفا مین ہی دریغ
خودغرض ایسے جو ہین ترک سکان ہی اُنکا
جو نہ تعظیم و تواضع پہ بھی مائل ہون کبھی
خودپسندی مین جو دیوانہ صفت پھرتے ہین
کرکے دعوت جو عداوت کرین مہمانون سے
عیب گوئی کو جو بدبخت ہنر جانتے ہین

جاہل و سنگدل و قاتل و خونخوار بھی ہین
قید دامِ غم و ذلت مین اُنھین رکھتی ہین
راستی کے ہین عدو اُنکے جگر پتھر ہین
چھوڑ کے جہل کو وہ ہون نہ خردمند کبھی
دل پہ دنیا کی حقیقت کا اثر کچھ بھی نہین
مالک اسکا ہی نہین کوئی ہی مالک نابود
جہل و نسیان سے ہوئے پست خرد سے خالی
اچھی تدبیر سے مطلب ہی نہ کچھ دھرم سے کام
خوابِ غفلت ہی مین وہ وقت کو بس کھوتے ہین
کام کوئی بھی نہین ہی طلب رب کیلئے
کبھی وہ ظلم و جفا سے نہین باز آتے ہین
شاہدِ شہوت و خواہش پہ فدا رہتے ہین
دولت اُسکی نہ رہے شانِ حکومت نہ رہے
سرِ عاجز پہ چلا کرتی ہی بس ظلم کی تیغ
پھر ٹھکانا بھی سوا اُسکے کہان ہی اُنکا
دولتِ حکمت کے آئینہ سے نہ سائل ہون کبھی
نظرِ عقل سے آنسو کی طرح گرتے ہین
دل کے بدذات ہین بدتر ہین وہ حیوانون سے
کبھی کہنا کسی ناصح کا نہین مانتے ہین

ایسے ہی لوگ برائی پہ جو شیدا ہون گے
بعد مردن وہ برائی کا مزہ پائین گے
جو نہین مانتے ہین ویدون کے احکام لطیف
اپنی مرضی کے موافق جو کیا کرتے ہین کام
کشن آرجن سے لگے کہنے کہ اے اہل خبر
جو ہین ظلمات کے دروازہ جدا رہ ان سے
جو برے اور بھلے کام ہین کر انکی تمیز

مر کے دنیا مین بری شکل سے پیدا ہون گے
نرک کی آگ مین پڑ پڑ کے جھلس جائین گے
نرک مین جلتے ہین وہ ہو کے ذلیل اور کثیف
نہ کمال انکو ہو حاصل نہ ملے کچھ آرام
شاسترون کے جو ہین دستور عمل کر ان پر
جو گناہون کے بکھیڑے ہین ہٹا رہ ان سے
شاستر کی جو ہی ہدایت وہ رہے دل کو عزیز

ادھیاے شانزدہم دیو و اسر سمپت

ہر کس کہ این سبت شش خصلت است
صفاے دل و بیخطر بودنی
بفکر و تن و جان بسر بردنی
بقدر میسر بکس دادنی
بدست ایں حواس خود آوردہ و
شدن جملہ تن صرف جگ کردنی
بعلم و عمل جان و دل بستنی
رہ زاہدی را بسر رفتنی
بجز راستی کم سخن گفتنی
ز قہر و غضب دور تر ماندنی
سخاپیشگی و ضع خود ساختن
بصبر و قناعت جگر کاستن
بلطف و کرم کار بگذاشتن
دگر دانہ ستی حیا داشتن
زنا کردنی روے خود تافتن

بداں آدمش کو ملک پیکر است
بجز و تضرع جبیں سودنی
بغیش کسے خون دل خوردنی
در فیض بر خلق بکشادنی
بہ پیش نظر داشتن خردنی
پئے کار کس تازہ و تنگ کردنی
از ایں انکہ قصد دارستنی
پئے شعلہ خوے جگر تفتنی
کہ با شعر بیابد بدر سفتنی
ز ایذاے کس دست افشاندنی
بود ہر چہ از کینہ اندا ختن
بکمد نبودن صفا خواستن
دل خود ز لذات بر داشتن
دل نرم خود با ستعاذ داشتن
ز او رج بلند یا چو خورما فتن

بسختی ہمہ تن تحمل شدن
درون بردل پاک تر داشتن
ز بس عجز با خاک یکساں شدن
ہر آنکس کہ دیگر است ایں شش خصال
ریاسیرتے مکر اندیشگی
قساوت دگر اعتزازی بحال
ششم ابلہی کو بلاے بدست
ملک سیرتان باخدا واصل اند
میندیش ارجن کہ خوش سیرتی
دو گونہ بود خلق ایجاد من
دگر آنکہ انکار من میکنند
ز کم فہمی خود نخواہند دید
ز حق در گذشتند و باطل شدند
سخن میکنند آں خدا منکراں
کسانیکہ دارند ایں اعتقاد
ستم میکنند و جفا میکنند
ہمہ تن بہ خواہش کام دل
ہمہ تن تکبر سراپا غرور

سراسر گذشتہ تامل شدن
ز حقد و حسد دست بر داشتن
کہ اینجا است اے یار یکساں شدن
نخواہند رسیدن بہ بزم وصال
غرور و تکبر جفا پیشگی
بخود چیدن از فرط حسن و جمال
کہ ہر شیاطیں عزاے بدست
شیاطیں صفت ہرزہ و جاہل اند
نہ چوں اہل ہاں ار غنے در غفلتی
یکے آنکہ کردم از انہا سخن
ز نا حق شناسی سخن میکنند
کلام الٰہی ندانند دید
ز در سم و رہ کیش غافل شدند
کہ آمیزش مرد و زن شد جہاں
سر و دے و شادی و نہ خاک بلو
ز باطل خیال جہا میکنند
ز خود رفتہ و محو آرام دل
ندانچہ کہ حق است بسیار دور

ز مستئ غفلت پنہاں نیچه دانند
شب و روز در فکر بد کردنست
رسن ہائے حرص و ہوا در گلو
تمناکش عیش و حسرت ہمه
ز جور و ستم جمع زر میکنند
عجب شورشئے ہر یکے در سر است
بگوید که امروز این یافتم
که فردا دگر ہم میسر شود
بگوید یکے ہر چه خواہم کنم
ز فہمید باطل بد اندیشاں
منم عارف و کامل و زور ور
لذائذ مہیا ز بہر من است
نباشد بجز من کسے شادمند
شریف النسب در زمانه منم
منم آنکه خیرات و جگ میکنم
اسیر کمند ہوا گشته اند
سراسر بود بر غلط رائے شاں
بسیم و زر و خویش دارند ناز

که مجبور رضائے شیاطین شدند
ز طول امل رشته در گردنست
تمامی فساد و سراپا غلو
گرفتار زندان غفلت ہمه
ز بار عصیاں بسر میکنند
ندانند پلید مالک کسے دیگر است
ازیں یافتم خوب دریافتم
بدیں نہج گنجینه زر شود
یکے را زدم دیگرے را زنم
که جز من نباشد کسے در جہاں
منم حاکم و عادل و دادگر
غم دین و دنیا ز بہر من است
نصیب دگر نیست بخت بلند
عدیم المثل در یگانه منم
بکار نکو تازه رنگ میکنم
گرفتار دام بلا گشته اند
چو میرند دوزخ بود جائے شاں
ز کج فہمی خود نیایند باز

بحرف بزرگاں ندارند گوش
بکردار یا خیر و طاعت کنند
بصد رنگ جور و تمامی کنند
ز من میگریزند و با دیگراں
ز حد بیشتر غافل و بیہوشند
بتہلکه منہ و در میروند
سه دروازه دوزخ است اینچناں
ازیں ہر سه دید غفلت خوب نیست
کسے کو ازیں ره شود بر کنار
رود ہر که بیروں ز فرمان بید
اگر ہست مقصود در نظر
خلاف بزرگاں نکردن خوش است

ز مستی بہر لحظه بازند ہوش
بپے خود ستائی رعایت کنند
چه کار خود قتل عامی کنند
محبت بگیرند ایں خود سراں
که جانور ہا بہر جگ میکشند
بجسم سگ و خوک و خر میروند
طمع ہست و خشم است و شہوت بدا
که ایں راه واصل بمطلوب نیست
کشند آں ہمه تا زراد رکنار
ز مقصود خود میشود نا امید
مکن آنچه منع است در شاستر
بآئین خود جان بیروں نوشت

گیتا کے ادھیائے شانزدہم کا مہاتم

کسی جا ایک راجہ تھا جوان بخت ۔ رہا کرتا سدا زینت دہ تخت

علیم و زیرک و اہل وفا تھا ۔ وہ گیانی دل کا اور دھرم آتما تھا

رعایا شہر کی تھی شاد و مسرور ۔ نہ تھا نام الم واں چشم بد دور

بہت سے فیل بھی تھے کوہ پیکر ۔ مگر اُن میں سے تھا اک بانی شر

تڑا کر ایک دن بھاگا وہ زنجیر ۔ چلا ہر اک کی جانب صورت تیر

قضا کی طرح پہونچا جس طرف کو ۔ کیا پامال اس نے صف کی صف کو

بہت تدبیر کی سب نے سر دست ۔ نہ آیا ہاتھ وہ فیل سیہ مست

کسی دن برہمن آیا وہاں ایک ۔ کہا لوگوں نے اُس سے با دل نیک

اُدھر مت جا کھڑا ہی فیل ناپاک ۔ وہ لیگا جان تیری ہو نہ بیباک

کہا یہ فیل ہی خود صورت مور ۔ زیادہ اس سے حاصل ہی مجھے زور

جو راہ بھگت میں ثابت قدم ہی ۔ اسے کب صدمۂ رنج و الم ہی

یکایک فیل آ پہونچا بصد جوش ۔ گرا پائے برہمن پر وہ ذی ہوش

محبت کی براہِ آشنائی ۔ لگا کرنے بہت سی جبہ سائی

برہمن نے کہا سُن مجھسے احوال
ترا تھا جسم سابق مین زبون حال

ادھر سے تو نہایت تب تھا ای فیل
ملی مکت اب تجھے از راہ تعجیل

وہین راجہ بھی آیا بے تحاشا
یہ دیکھا آنکھ سے آکر تماشا

برہمن نے غرض باچشم الضاف
تو اب ادھیاے گیتا کا دیا صاف

خوشی سے پھر براہِ مہربانی
دیا ڈال اُسپہ کچھ پڑھ پڑھ کے پانی

ہوا قالب یہی اِسکا بصد جوش
میانِ سُرگ جا پہونچا وہ ذیہوش

برہمن سے کہا راجہ نے فی الفور
بیان تو کیجیے ای صاحبِ غور

ہوا قبضہ مین فیل مست کیونکر
کہا اُس نے سنو ای بندہ پرور

مجھے گیتا کی تیری کا جاپ ہی یاد
پڑھا کرتا ہون ہر دم بادلِ شاد

یہ فیل اس جنم مین اک برہمن تھا
بہت سا یاد اُسکو علم و فن تھا

گرو اس کا گیا تیرتھ کو ناگاہ
ملا وہ اُسکو سارا رتبہ وجاہ

پئے درشن وہان سب لوگ آئے
بدل طرز ادب سے سر جھکائے

پس از مدت گرو پھر آکے پہونچے
قریب برہمن خود جاکے پہونچے

برہمن نے نہ کی پشت ادب خم
وہ سمجھا ہوگا میرا مرتبہ کم

کیا اغماض اُس نے جب بہر طور
گرو نے بد دعا دی اُسکو فی الفور

بشکلِ فیل ہو دنیا مین پیدا
بلا سے غم رہے تجھ پر ہویدا

بہت سی آہ و زاری برمحل کی
گرو نے پھر یہ مشکل اُسکی حل کی

کہ جب گیتا سنے گا برہمن سے
رہائی تجھکو ہوگی اس بدن سے

غرض راجہ جو تھا وہ صاحبِ غور
پسر کو دیدیا سب راج فی الفور

سولھویں ادھیاے کا خلاصہ

۱۔ دو قسم کی طینت انسانی۔ پندرھویں ادھیاے میں بتایا گیا ہے۔ کہ بعض جیوآواگون میں چکر کھاتے رہتے ہیں۔ اور بعض موکش پد کو پہنچتے ہیں۔ اس ادھیاے میں یہ بتایا جاتا ہے۔ کہ اپنے پہلے کرموں کی واسنا سے آدمی نیک یا بد طینت لیکر دنیا میں آتا ہے۔ طینت نیک دیو سمپت یا طینت ملکوتی کہلاتی ہے۔ اور طینت بد اسر سمپت یا طینت شیطانی +

۲۔ طینت ملکوتی و شیطانی۔ ان کی تشریح ذیل میں درج ہے:۔

(ا) طینت ملکوتی کے خاصے یہ ہیں۔ بے خوفی۔ صفائے باطن۔ گیان یوگ میں من کا ٹھیراو۔ دان۔ یگیہ۔ دم یا ضبط حواس۔ علم یا گیان کتھا پڑھنے کا شوق۔ ریاضت یا تپ۔ سادگیٔ مزاج۔ غصے چغلی کھانے۔ لالچ اور آزار رسانی کا نہ ہونا ستیہ تیاگ اور شانتی۔ رحم سنجیدگی۔ حیا اور نرمی۔ عفو۔ جلال اور حلم ہونا کبر و حسد نہ ہونی من بانی اور کرم کی صفائی +

(ب) طینت شیطانی کے خاصے یہ ہیں۔ مکاری۔ کبر اور خود نمائی جہل غضب اور سنگدلی آگے انہیں اور کھولا ہے +

۳۔ دونوں طینتوں کا پھل۔ دنیا میں جو آدمی ہے اس کی طینت یا تو ملکوتی ہے یا شیطانی۔ ملکوتی طینت موکش کے واسطے ہے۔ اور شیطانی طینت بندھ کے واسطے۔ ارجن کو بھگوان کہتے ہیں کہ تو فکر نکر کیونکہ ملکوتی طینت لے کر آیا ہے +

۴۔ طینت شیطانی کی تشریح۔ اس کے متعلق مندرجہ ذیل باتیں یاد رکھنی چاہئیں:۔

(ا) شیطانی صفت آدمی بد اخلاق ہوتے ہیں۔ انہیں یہ تمیز نہیں ہوتی۔ کہ کیا کرنا چاہئیے اور کیا نہ کرنا چاہئیے۔ نہ صفائی کے پابند ہوتے ہیں اور نہ اعمال نیک و راستی کے +

(ب) ایشور یا حیتن آتما کو نہیں مانتے۔ دنیا کو سبھاؤک بتاتے ہیں۔ اور اس واسطے نڈر ہوکر بُرے کام کرتے ہیں +

(ج) ایسی ہوا و ہوس اور افکار میں پھنسے رہتے ہیں۔ کہ قیامت تک پورے نہ ہوں +

(د) غرور کے بندے ہیں۔ اور کہتے رہتے ہیں۔ کہ آج یہ کام ہوگیا۔ کل دوسرا کریں گے۔ آج اس دشمن کو مارا کل اُسے ماریں گے۔ ہم عالی خاندان یا امیر ہیں۔ شہرت اور سورگ کے بھوگوں کے واسطے یگیہ کریں گے۔ دان دیں گے وغیرہ وغیرہ +

(ھ)۔ اگیان میں پھنسکر خواہش و غضب کے بندے بن جاتے ہیں۔ اور مجھ چیتن آتما کو بھول جاتے ہیں +

۵۔ شیطان صفت آدمیوں کی سزا۔ ان سرکشوں اور بھگوان سے دشمنی رکھنے والے جاہلوں کو یہ سزا ملتی ہے۔ کہ اپنی واسناؤں کی جزائے عمل میں دمشیوں میں جنم لیتے ہیں۔ اور روحانی ترقی سے گرتے چلے جاتے ہیں +

۶۔ کام۔ کرودھ۔ لوبھ۔ طینت شیطانی کی جڑیں خواہش۔ غصہ اور طمع تین چیزیں ہوا کرتی ہیں۔ اس واسطے انہیں چھوڑنا لازمات میں سے ہے۔ انہیں چھوڑ کر آدمی طینت ملکوتی بہم پہنچاتا ہے۔ اپنی بھلائی کا فکر کرتا ہے۔ اور انجام میں پرم گتی یعنی موکش پاتا ہے +

۷- **شاستر کار سنہ**- برے اعمال کے چھوڑنے اور نیک اعمال کے اختیار کرنے میں شاستر یعنی وید کے احکام قول فیصل ہیں- ان پر عمل کر کے آدمی کو بھلا بنا چاہئے- آخر میں چت شدھ ہو گا- اور وہ گیان اور موکش کا ادھکاری بنے گا +
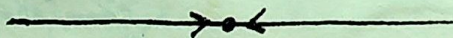
تصویر نمبر ۱۶ عقول انسان کے قوائے باطنی میں عقل۔ دل۔ خیال اور پندار شامل ہیں اور یہ ہندی فلسفہ میں بحیثیت مجموعی انتہ کرن کہلاتے ہیں۔ انکا رُجحان نیکی یا بدی کی طرف فطرتاً ہے۔ نیک اعمالی روحانی ترقی اور مغفرت کا راستہ ہے۔ بداعمالی

تنزّل اور پابندی کا موجب ہے۔ ان قوائے باطنی کا صحیح نشوونما شریعت کی پیروی پر منحصر ہے۔ اسلئے رُوحانی ترقی کا پہلا زینہ شریعت قرار دیگئی ہے اور اس زینہ کو توڑنا قانونِ قدرت کی مُخالفت ہے۔ ہندی علماء نے برہما جی کے چار مُنھ بتائے ہیں اور انسے نوعِ انسانی کی رہنمائی کیلئے چار ویدوں کا انکشاف بیان کیا ہے اس روایت کے معنی پر مندرجۂ بالا واقعات سے روشنی پڑتی ہے۔ ہندوستان میں ویدک دھرم اسی اصول پر مبنی ہے۔ یہ تصویر انسانی خصلتوں کا منظر پیش کرتی ہے۔